ISSN 2349-6614

अप्रेल 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

दो भारतीय फिल्मों को पहली बार

ऑस्कर अवार्ड

43 Years of Excellence in Textile Industry

Under the leadership of our visionary Chairman, B.H. Bapna, Mewar Polytex Group has grown from small humble beginnings to a 5,000 MT per month production capacity.

Our chairman dreamt for the Mewar Polytex family to become the best textile packaging and safety solutions, provider. We have come a long way, but our energy and enthusiasm yearn for a lot more.

Mewar Polytex family has 3000+ team members from diverse backgrounds. Senior leadership and young management team have vast experience in the plastic textile industry. Mewar Polytex Group continuously strives for prompt customer service, best-quality products, and process-driven manufacturing.

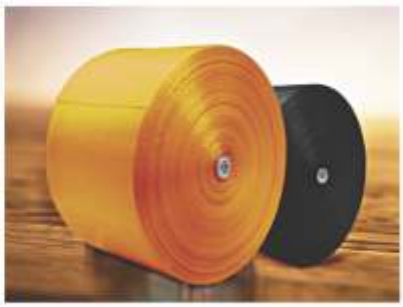

43+

YEARS OF EXPERIENCE

Combination of old & young team members

25+

COUNTRIES

Wide presence all around the globe

5,000+

METRIC TONNE

Production capacity per month

12+

MANUFACTURING FACILITY

Span over 1 million sq ft of production space

Our Products

Woven Fabric | Silt Fence | Ground Cover | Soil Stabilization Lumber Wrap | Metal Wrap | House Wrap | Roof Underlayment | Woven Bags | BOPP Bags | Paper Poly Bags | Block Bottom Bags | Insect Repellant Bag | Bale Cap / Box Bag | Lumber Cover | Bulk Bags | Non Woven Fabric | Frost Cover | Non Woven Garments | Spiral Tubing | Multi Filament Yarn | Rice Bags | Shopping Bags

Mewar
POLYTEX GROUP

207- A, Mewar Industrial Area,
Madri, Udaipur,
Rajasthan, India-313001
www.mewarpolytex.com

अप्रैल 2023

प्रत्यूष

वर्षः 20, अंकः 12

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

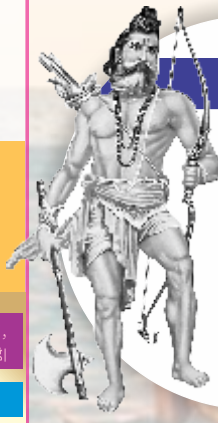

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

जन्म कल्याणक

महावीर बनने की भी करें तैयारी
पेज 08

मंथन

धर्म निरपेक्ष ताकतों में एकजुटता की कोशिश
पेज 14

विश्लेषण
भाजपा का मिशन पूर्वोत्तर सफल
पेज 16

चिरंजीवी
अन्याय के विरुद्ध शस्त्र उठाने वाले अद्भुत नायकः परशुराम
पेज 22

जागरूकता

बीमार न रहे आपके दांत
पेज 41

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

SBPL

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Sayeed Iqbal
Director
+91-9414168407

Sandal Buildcon Pvt. Ltd.

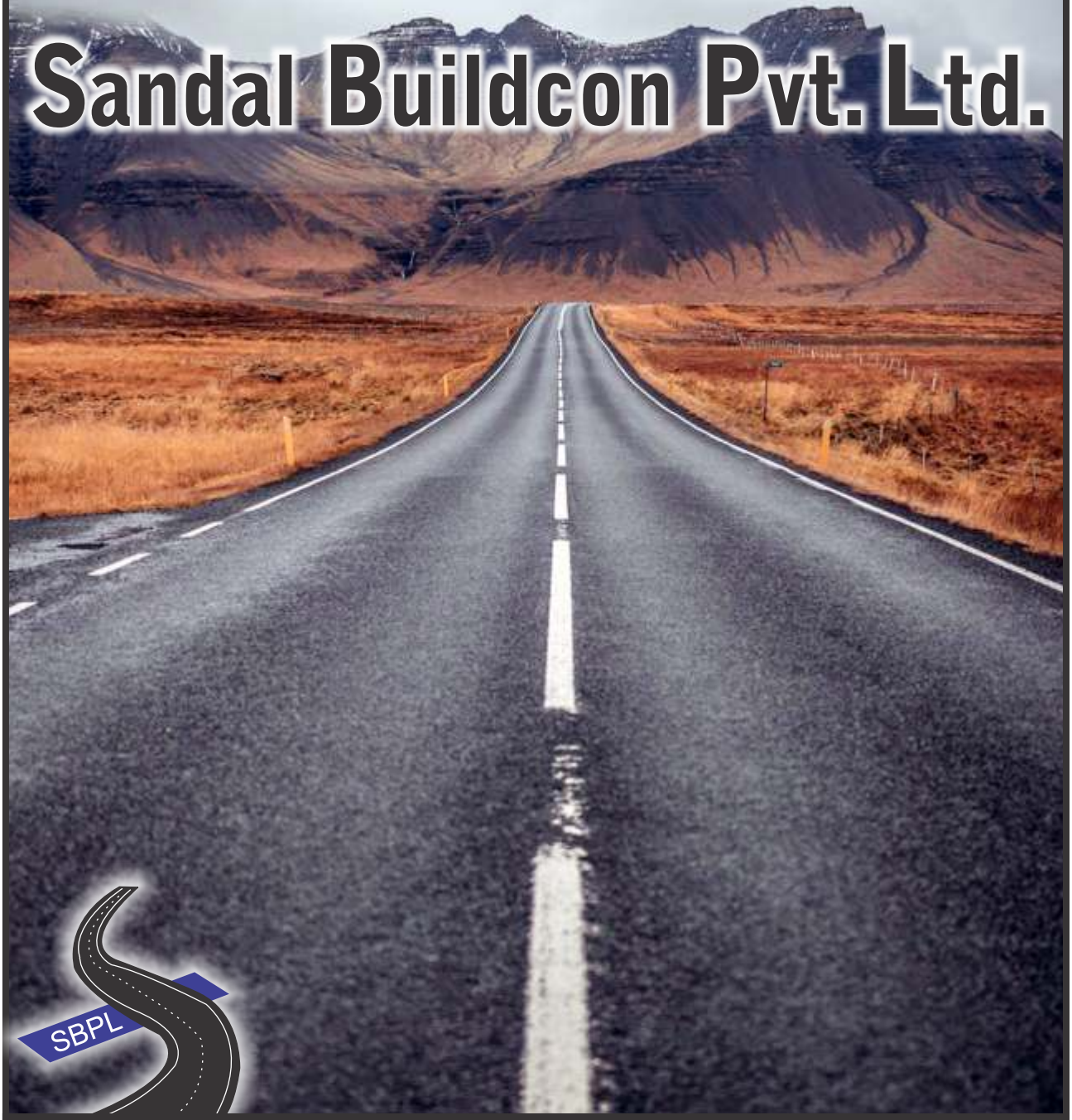

Plot No. 19-H Subcity Center, Udaipur (Raj.)
Ph.: 0294-2482407 Email: sbpl786@gmail.com

'आप' से नहीं संभल रहा पंजाब

एक बार फिर पंजाब अशांति, हिंसा एवं आतंकवाद की ओर बढ़ रहा है। राज्य में कानून-व्यवस्था ढह रही है और अराजकता का माहौल है। समूचा प्रशासन मूकदर्शक बन इस अप्रिय स्थिति को देख रहा है। खालिस्तान समर्थक उग्र होते जा रहे हैं। पुलिस और शासन-व्यवस्था लाचार बनी उपद्रवियों के सामने समर्पण करती दिखाई दे रही है। अमृतसर में अजनाला थाने के बाहर 23 फरवरी को 'वारिस पंजाब दे' के मुखिया अमृतपाल सिंह के समर्थकों ने तलवारों और बंदूकों से अजनाला थाने पर धावा बोल दिया। हजारों लोग अमृतपाल के करीबी सहयोगी लवप्रीत तूफान की गिरफ्तारी को लेकर आक्रोश में थे। हमलावरों ने 'ढाल' के रूप में पवित्र गुरूग्रंथ साहिब के 'सरूप'(प्रति) का इस्तेमाल किया।

हालात का मुकाबला कानून के मुताबिक करने की बजाय पुलिस को लवप्रीत की रिहाई का रास्ता खोलना पड़ा। सिरफिरे लोग कानून-व्यवस्था को पंगु बनाने के लिए किस हद तक जा सकते हैं, यह अजनाला की घटना ने तो साबित किया ही, लेकिन चिंता का विषय यह भी है कि आम आदमी पार्टी की सरकार से राज्य संभल नहीं रहा। राष्ट्र विरोधी तत्व हावी हो रहे हैं। सरकार की इन उन्मादियों के स्थायी इलाज की कोई तैयारी नहीं दिखती। केन्द्र को हालात पर बराबर निगाह रखने की जरूरत है। पंजाब की यह घटना इसलिए भी गंभीर है, क्योंकि पंजाब की सीमाएं पाकिस्तान से लगी हुई हैं और कुछ समय से खालिस्तानी हरकतें बढ़ रही हैं। अमृतपाल व उसके साथियों की धरपकड़ के लिए 18 मार्च को पुलिस का अभियान भी टांय-टांय फिस्स हो गया। नकोदर के पास पुलिस की घेराबंदी के बावजूद वह फरार होने में सफल हो गया, हालांकि उसके कुछ साथी गिरफ्तार कर लिए गए। पंजाब में सिर उठाते पृथकतावादियों के बढ़ते हौंसले का ही परिणाम था कि लंदन स्थित भारतीय उच्चायुक्त कार्यालय पर हंगामे के बाद खालिस्तानी समर्थकों ने कार्यालय से तिरंगा उतारकर खालिस्तानी झंडा लगाने का प्रयास किया। अमेरिका स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास पर भी हमला हुआ।

दस साल दुबई में रहकर पंजाब लौटने के बाद अमृतपाल सिंह 'वारिस पंजाब दे' नाम के संगठन की कमान संभाल रहा है और खालिस्तान समर्थकों को इसके छाते तले लाने की कोशिशों में जुटा है। यह संगठन दीप सिद्धू ने बनाया था, जिसे किसान आंदोलन के दौरान लाल किले की घटना के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। पिछले साल सड़क हादसे में उसकी मौत हो गई। फिलहाल 'वारिस पंजाब दे' का पंजाब में बड़ा जानाधार तो नहीं है, पर इसके जरिए हिंसा और घृणा फैलाने का जो खेल खेला जा रहा है, उसे तुरंत रोकने की जरूरत है। राज्य सरकार यदि सख्त कदम उठाने से परहेज करती है तो केंद्र सरकार को सुनिश्चित करना होगा कि पंजाब में उन्माद का वैसा माहौल फिर तैयार न हो, जिसके दंश देश अस्सी के दशक में झेल चुका है। यों प्रदर्शनकारियों से सीधे हिंसक तरीके से ही निपटना कोई बेहतर विकल्प नहीं था, लेकिन एक तरह से समूचे प्रशासन का मूकदर्शक रहना भी एक विचित्र स्थिति थी। हैरानी की बात यह है कि थाने का घेराव दिखने में अचानक हुई घटना लगती है, मगर सच यह है कि इसकी पृष्ठभूमि कई दिनों से तैयार हो रही थी और शायद पुलिस ने इस मामले से निपटने के लिए समय रहते कदम नहीं उठाए। सवाल है कि क्या अपने एक व्यापक तंत्र के बावजूद वहां की पुलिस को कट्टरतावादी संगठन के मुद्दे, उसके क्रियाकलापों और संरक्षकों की प्रतिक्रिया का अंदाजा नहीं था? अगर किसी संवेदनशील मामले में पुलिस ने इस संगठन के किसी व्यक्ति को गिरफ्तार किया भी था, तो क्या इससे पहले पूरी तैयारी जरूरी नहीं थी? आखिर क्या वजह थी कि थाने पर हमले के बाद पैदा हुई स्थिति में पुलिस को अपना रूख नरम करना पड़ा? लवप्रीत सिंह की गिरफ्तारी के आधार इस तरह कैसे पेश किए गए कि अजनाला की एक अदालत ने उसे रिहा करने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया? अगर महज उसके समर्थकों के प्रदर्शन के दबाव में आकर पुलिस ने अपने कदम पीछे खींचे तो इसे कानून-व्यवस्था के लिहाज से कैसे देखा जाएगा?

वैसे यह पहला मामला नहीं है, जब मज़हब की आड़ में की गई मनमानी के सामने समर्पण किया गया है। चूंकि इस देश में ऐसे धार्मिक प्रदर्शनों को होने दिया जाता है, इसलिए ऐसे प्रदर्शन कानून-व्यवस्था को धता बताने के लिए यहां-वहां सामने आते रहते हैं। क्या अमेरिका, कनाडा या यूके जैसे किसी अन्य देश में पुलिस के खिलाफ ऐसे हिंसक प्रदर्शन को कोई भी सत्ता मंजूर कर लेती? भारतीय लोकतंत्र की उदारता के साथ ऐसे खिलवाड़ के लिए बेशक इस देश की राजनीति ही दोषी है।

बीते कुछ अर्से से पंजाब के हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि खालिस्तान समर्थक पंजाब में फिर से आग लगाना चाहते हैं। खुफिया विभाग के अनुसार बब्बर खालसा इंटरनेशनल, इंटरनेशनल सिख यूथ फेडरेशन, खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स और खालिस्तान कमांडो फोर्स के बचे-खुचे तत्व आज भी पाकिस्तान में अपना आधार बनाकर पंजाब में कुछ न कुछ गड़बडी के प्रयास करते रहते हैं। विदेश में, विशेषकर अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा और आस्ट्रेलिया में 'वर्ल्ड सिख आर्गेनाइजेशन ' और 'सिख्स फार जस्टिस' भारत के विरूद्ध माहौल खराब करने में लगे हैं। 2014 में दमदमी टकसाल ने स्वर्ण मंदिर परिसर में जरनैल सिंह भिंडरावाला और अन्य आतंकी नेताओं की स्मृति में एक स्मारक बना लिया था। शुरू में तो इसका कुछ विरोध हुआ, परंतु धीरे-धीरे आवाज दब गई और इस स्मारक को एक तरह से मान्यता दे दी गई। 2016-17 में अलगाववादी तत्वों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कई कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया और उनकी हत्या कर दी। 2018 में तत्कालीन मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने केन्द्रीय गृह मंत्रालय से आग्रह किया था कि प्रदेश में आतंकवाद पनपने न पाए, इसके लिए एक योजना बनाई जाए। आपरेशन ब्लू स्टार की बरसी पर पंजाब और चंडीगढ़ में खुलेआम 'खालिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाए जाते हैं। राज्य सरकार उसे अनदेखा करती आई हैं कि मुट्ठी भर लोगों के प्रदर्शन में कोई फर्क नहीं पड़ता। जबकि तथ्य यही है कि एक छोटी सी चिंगारी भी पूरे जंगल में लपटें उठा देती है।

प्रत्यूष

राजस्थान में नए 19 जिले, 3 संभाग

सियासत की बड़ी सौगात

पंकजकुमार शर्मा

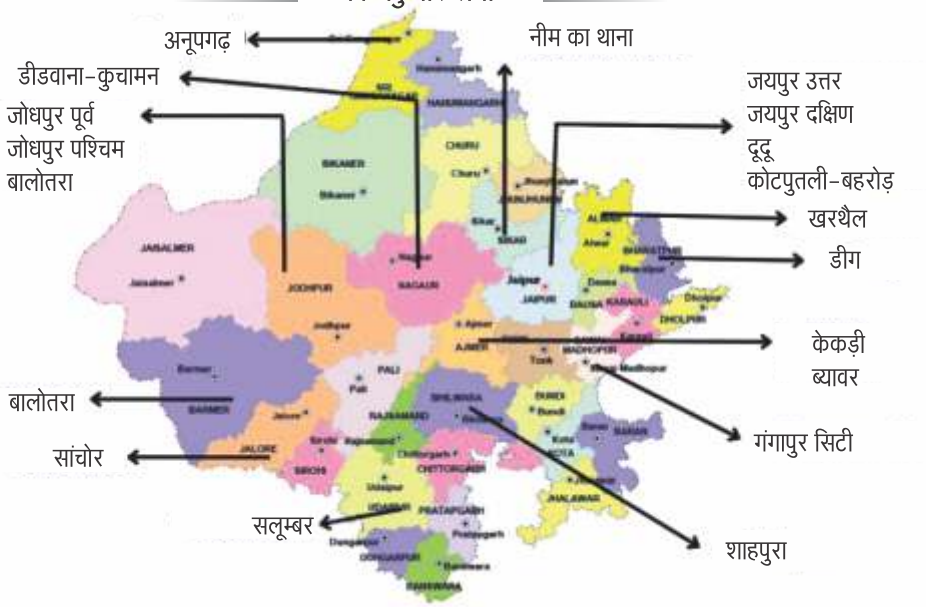

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राज्य विधानसभा चुनाव से करीब आठ माह पूर्व राज्य में 19 नए जिलों व 3 संभागों की घोषणा कर प्रदेश को विकास की दृष्टि से ऊंची उड़ान के लिए बहुप्रतिक्षित पंख दे दिए। इस घोषणा से जहां लोगों में खुशी का सैलाब उमड़ पड़ा, वहीं विपक्ष हक्का-बक्का रह गया। मुख्यमंत्री की इस घोषणा से आम आदमी की प्रशासन तक पहुंच पूर्वापेक्षा अधिक सुगम हो जाएगी। कयोंकि जिला और संभाग मुख्यालयों की दूरी घट जाएगी। कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार आएगा, केन्द्र व राज्य की जनहितकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में कम समय लगेगा, जिसका लोगों को सीधा लाभ होगा। शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, उद्यम-रोजगार के साथ इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार होगा। नई जिला परिषदों के गठन से स्थानीय प्रतिनिधित्व बढ़ेगा और गांवों के कायाकल्प से ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन रूकेगा। पर्यटन की दृष्टि से भी नए डेस्टिनेशन विकसित हो सकेंगे। राजस्थान विधानसभा में 17 मार्च को वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा के बाद

कहां से तोड़कर किसे बनाया नया जिला

नया जिला	कहां से तोड़ा	ब्यावर	अजमेर
जयपुर उत्तर	जयपुर	केकड़ी	अजमेर
जयपुर दक्षिण	जयपुर	डीग	भरतपुर
दूदू	जयपुर	डीडवाना-कुचामनसिटी	नागौर
कोटपूतली	जयपुर	गंगापुर सिटी	सवाईमाधोपुर
जोधपुर पूर्व	जोधपुर	खैरथल	अलवर
जोधपुर पश्चिम	जोधपुर	नीम का थाना	सीकर
फलोदी	जोधपुर	सलूंबर	उदयपुर
अनूपगढ़	श्रीगंगानगर	सांचोर	जालोर
बालोतरा	बाड़मेर	शाहपुरा	भीलवाड़ा

नए संभाग : 1. बांसवाड़ा 2. पाली 3. सीकर

मुख्यमंत्री गहलोत ने राजस्थान में 19 नए जिलों एवं तीन संभागीय मुख्यालयों की घोषणा कर दी। इन नए जिलों और संभाग मुख्यालयों के लिए आधारभूत ढांचा तैयार करने के लिए 2000 करोड़ का प्रावधान भी किया है। अब राजस्थान में जिलों की संख्या बढ़कर 50 और संभाग मुख्यालयों की संख्या दस हो गई है। सेवानिवृत्त आईएएस रामलुभाया कमेटी की 15 मार्च को देर रात मिली रिपोर्ट के बाद मुख्यमंत्री ने प्रदेश के 13 जिलों में से इन नए जिलों की घोषणा की है। राजस्थान में 14 साल बाद नए जिलों की घोषणा की गई है। नवगठित जिलों और संभाग मुख्यालयों के क्षेत्र और उनके अधीन आने वाले सभी कार्यालयों का जल्द ही पुनर्गठन किया जाएगा। राज्य में वर्ष 2008 में वसुंधरा राजे ने मुख्यमंत्री रहते हुए प्रतापगढ़ को जिला बनाया था। उसके बाद से राजस्थान में नए जिलों के गठन की मांग उठती रही थी। इसे लेकर कई जगह धरना-

प्रदर्शन भी हुए और विधायकों की ओर से सरकार को मांग पत्र दिए गए ीं। पिछले साल मार्च में रिटायर्ड आईएएस राम लुभाया की अध्यक्षता में कमेटी का गठन हुआ, तो कमेटी के पास 60 से ज्यादा जिलों के गठन के लिए मांग पत्र आए। हालांकि 21 मार्च 2022 को राम लुभाया कमेटी का समय समाप्त होता, उससे पहले ही सरकार ने कमेटी का समय 6 महीने के लिए बढ़ा दिया था। उस समय माना जा रहा था कि नए जिलों की घोषणा फिलहाल नहीं होगी, लेकिन मुख्यमंत्री ने अनुदान मांगों की जवाब देते हुए नए जिलेऔर संभागों की घोषणा कर सभी को चौंका दिया।

गहलोत के नाम रिकॉर्ड

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में जिला बनाने के मामले में सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। यह पहला अवसर है जब आजादी के बाद भारत में पहली बार एक साथ किसी राज्य में 19 जिले बनाए गए हैं। तब भी जब किसी प्रदेश को बांटा गया हो। फिर चाहे उत्तरप्रदेश से अलग होकर बने उत्तराखंड की बात हो या फिर मध्यप्रदेश से अलग होकर बना छत्तीसगढ़ हो। यहां तक की बिहार से अलग होकर बने झारखंड में भी इतने जिले नहीं बनें। दक्षिण में आंध्रप्रदेश और तेलंगाना बंटवारे में भी इतने जिले नहीं बनें। गौरतलब है कि भौगोलिग रूप से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। यह सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय सीमा भी साझा करता है। ऐसे में जिलों की जरूरत लंबे समय से महसूस की जा रही थी।

प्रगति की गति दोगुनी

बढ़ती जनसंख्या एवं बड़े क्षेत्र की वजह से सरकार व आमजन को नए जिलों की आवश्यकता महसूस हो रही थी। एक बड़ा कदम उठाकर कांग्रेस सरकार ने नए जिले बनाए हैं। प्रगति की गति अब दोगुनी होगी। इससे जन भावना का सम्मान हुआ है। इस बजट में प्रदेशवासियों की भावनाओं के अनुरूप निर्णय किए हें। जनता के लिए बचाव, राहत और बढ़त का सिलसिला जारी रहेगा।
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

आर्थिक तंत्र दांव पर: राजे

नई घोषणाएं अपने व्यक्तिगत राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति करने का प्रयासभर है। राजस्थान के पूरे आर्थिक तंत्र को दांव पर लगा दिया है। नए जिले बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण तथ्यों को नजरअंदाज किया है।
वसुंधरा राजे, पूर्व सीएम

महावीर बनने की भी करें तैयारी

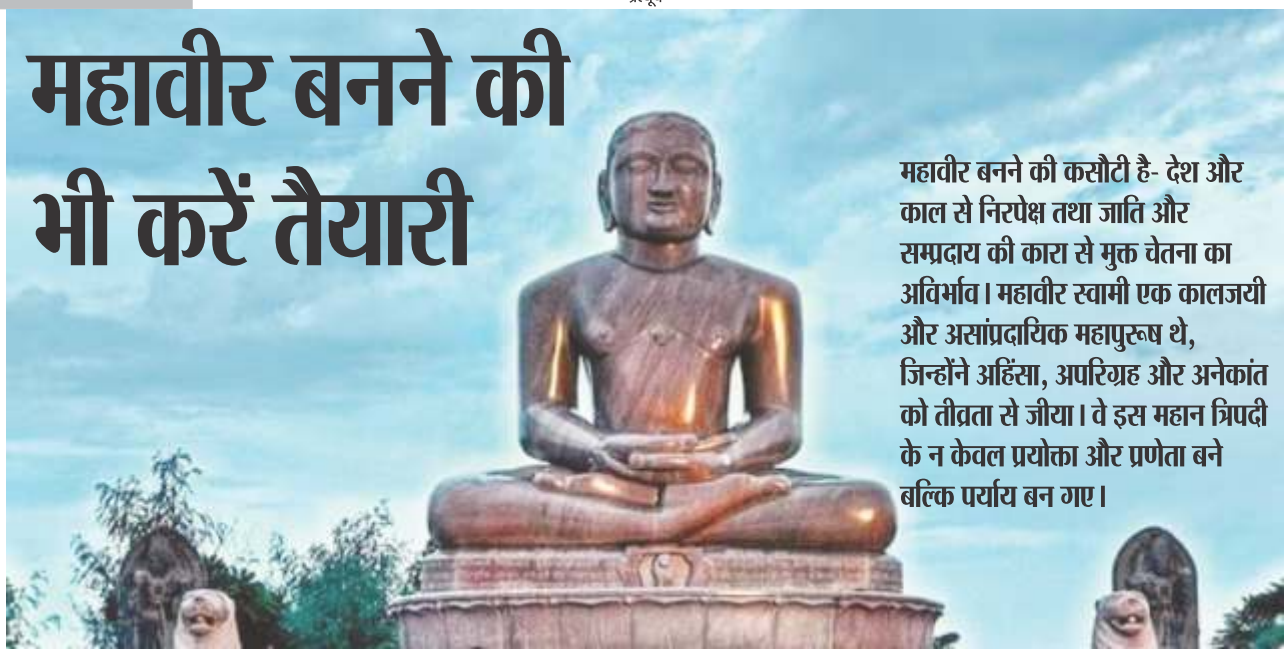

महावीर बनने की कसौटी है- देश और काल से निरपेक्ष तथा जाति और सम्प्रदाय की कारा से मुक्त चेतना का अविर्भाव। महावीर स्वामी एक कालजयी और असांप्रदायिक महापुरूष थे, जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत को तीव्रता से जीया। वे इस महान त्रिपदी के न केवल प्रयोक्ता और प्रणेता बने बल्कि पर्याय बन गए।

डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

सदियों पहले प्रभु महावीर का अवतरण हुआ। वे जन्म से महावीर नहीं थे। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्टों को सहा, दुख में से सुख खोजा और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे। वे हमारे लिए आदर्शों की ऊंची मीनार हैं। उन्होंने समझ दी कि महानता कभी भौतिक पदार्थों, सुख-सुविधाओं, संकीर्ण सोच एवं स्वार्थी मनोवृत्ति से प्राप्त नहीं की जा सकती उसके लिए सच्चाई को बटोरना होता है, नैतिकता के पथ पर चलना होता है, और अहिंसा की जीवन शैली अपनानी होती है।

प्रत्येक वर्ष भगवान महावीर का जन्म कल्याणक - निर्वाण कल्याणक विश्व में जैन समाज और अन्य अहिंसा प्रेमी व्यक्तियों द्वारा बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। उस दिन भगवान महावीर की शिक्षाओं पर रैलियां-संगोष्ठियां होती हैं, और कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। भगवान महावीर की शिक्षाओं का हमारे जीवन और विशेषकर व्यावहारिक जीवन में किस प्रकार समावेश हो और कैसे हम अपने जीवन को उनकी शिक्षाओं के अनुरूप ढाल सकें, यह अधिक आवश्यक है लेकिन इस विषय पर प्राय: सन्नाटा देखने को मिलता है। विशेषत: जैन समाज के अनुयायी ही महावीर को भूलते जा रहे हैं, उनकी शिक्षाओं को ताक पर रख रहे हैं। दु:ख तो इस बात का है कि समाज के सर्वे- सर्वा ही महावीर को अप्रासंगिक बना रहे हैं। महावीर ने जिन-जिन बुराइयों पर प्रहार किया, वे उन्हें ही अधिक अपना रहे हैं। उस महान क्रांतिकारी वीर महापुरूष की जयंती भी आज आयोजनात्मक होकर रह गई है, प्रयोजनात्मक नहीं हो पा रही है। हम महावीर को केवल पूजते हैं, जीवन में धारण नहीं कर पाते। हम केवल कर्मकाण्ड और पूजा विधि में ही लगे रहते हैं, और जो मूलभूत सारगर्भित शिक्षाएं हैं, उन्हें जीवन में नहीं उतार पाते।

आज मनुष्य जिन समस्याओं और जटिल परिस्थितियों से घिरा हुआ है उन सबका समाधान महावीर के दर्शन और सिद्धांतों में समाहित है। जरूरी है कि हम महावीर के उपदेश जीवन में उतारें। हर व्यक्ति महावीर बनने की तैयारी करे, तभी समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है। महावीर वही व्यक्ति बन सकता है जो लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो, जिसमें कष्ट सहने की क्षमता हो। जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समता एवं संतुलन रख सके, जो मौन की साधना और शरीर को तपाने के लिए तत्पर हो। जिसके मन में संपूर्ण प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व की भावना हो। जो पुरुषार्थ के द्वारा न केवल अपना भाग्य बदलना जानता हो बल्कि संपूर्ण मानवता के उज्जवल भविष्य की मनोकामना रखता हो। प्रभु वीर का संपूर्ण जीवन स्व और पर के अभ्युदय की जीवंत प्रेरणा है। लाखों लोगों का पथ उन्होंने अपने ज्ञान के आलोक से आलोकित किया है। इसलिए महावीर बनना जीवन की सार्थकता का प्रतीक है।

भगवान महावीर की मूल शिक्षा है- अहिंसा। सबसे पहले अहिंसा परमो धर्म: का प्रयोग मानव जाति के पावन ग्रंथ महाभारत के अनुशासन पर्व में किया गया था। लेकिन इसको अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धी दिलवायी भगवान महावीर ने। भगवान महावीर ने अपनी वाणी से और अपने स्वयं के जीवन से इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान महावीर का नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा साधा अर्थ है कि व्यावहारिक जीवन मे हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी की अपने स्वार्थ के लिए दु:ख न दें। 'आत्मान: प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत' इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्ति से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव जन्तुओं के प्रति अर्थात प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।

भगवान महावीर का एक महत्वपूर्ण संदेश है 'क्षमा:'। भगवान महावीर ने कहा कि 'खामेमि सव्वे जीवे, सव्वे जीवा खमंतु में, मित्ती में सव्व भूएसू, वेर मज्झ न केणई'। अर्थात् मैं सभी से क्षमा याचना करता हूं। मुझे सभी क्षमा करें। मेरे लिए सभी प्राणी मित्रवत हैं। मेरा किसी से भी वैर नहीं है। यदि भगवान महावीर की इस शिक्षा को हम व्यावहारिक जीवन में उतारें तो

फिर क्रोध एवं अहंकार मिश्रित जो दुर्भावना उत्पन्न होती है और जिसके कारण हम घुट-घुट कर जीते हैं, वह समाप्त हो जाएगी। व्यावहारिक जीवन में यह आवश्यक है कि हम अहंकार को मिटाकर शुद्ध हृदय से आवश्यकता अनुसार बार-बार ऐसी क्षमा प्रदान करें कि यह भावना हमारे हृदय में स्थायी हो जाए। भगवान महावीर आदमी को उपदेश्यदृष्टि देते हैं कि धर्म का सही अर्थ समझो। धर्म तुम्हें सुख, शांति, समृद्धि, समाधि, आज, अभी दे या कालक्रम से दें, इसका मूल्य नहीं है। मूल्य है धर्म तुम्हें समता, पवित्रता, नैतिकता, अहिंसा को अनुभूति कराता है। महावीर का जीवन हमारे लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि उसमें सत्य धर्म के व्याख्या सूत्र निहित हैं। महावीर ने उन सूत्रों को ओढ़ा नहीं था, साधना की गहराइयों में उतरकर आत्मचेतना के तल पर पाया था। आज महावीर के पुनर्जन्म की नहीं बल्कि उनके द्वारा जीये गये आदर्श जीवन के अवतरण की अपेक्षा है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें तभी महावीर जयंती मनाना सार्थक होगा।

महावीर बनने की कसौटी है- देश और काल से निरपेक्ष तथा जाति और संप्रदाय की कारा से मुक्त चेतना का आविर्भाव। ज्ञात नंदन एक कालजयी और असांप्रदायिक महापुरूष थे, जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत को तीव्रता से जीया। वे इस महान त्रिपदी के न केवल प्रयोक्ता और प्रणेता बने बल्कि पर्याय बन गए। जहां अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत की चर्चा होती है वहां भगवान महावीर का यशस्वी नाम स्वत: ही सामने आ जाता है।

महापुरूष सदैव प्रासंगिक रहते हैं, फिर पुरुषोत्तम महावीर की प्रासंगिकता के विषय में जिज्ञासा ही अयुक्त है। सूर्य और चन्द्रमा कब अप्रासंगिक बने ? सूर्य केवल दिन को प्रकाशित करता और चन्द्रमा केवल रात्रि को, किंतु भगवान महावीर का दिव्य-दर्शन अहर्निश मानव-मन को आलोकित कर रहा है। सन्मति पुत्र सचमुच प्रकाश के तेजस्वी पुंज और सार्वभौम धर्म के प्रणेता हैं। वे इस सृष्टि के मानव-मन के दु:ख विमोचक हैं। पदार्थ के अभाव से उत्पन्न दु:ख को सद्‌भाव से मिटाया जा सकता है, श्रम से मिटाया जा सकता है किंतु पदार्थ की आसक्ति से उत्पन्न दुख को कैसे मिटाया जाए ? इसके लिए महावीर ने व्रत, संयम और चरित्र पर सर्वाधिक बल दिया था और अपने अनुयाइयों को बारहव्रती श्रावक बनाकर धर्म, क्रांति सूत्रपात किया था। यह सिद्धांत और व्यवहार के सामंजस्य का महान प्रयोग था।

जीव बलवान है या कर्म- इस जिज्ञासा के समाधान, में भगवान महावीर ने कहा कि अप्रमत्तता की साधना से जीव बलवान बना रहता है, और प्रमाद से कर्म।

जीव का शयन अच्छा है या जागरण- इस प्रश्न के समाधान में उन्होंने कहा कि पाप में प्रवृत जीवों का शयन अच्छा है और धर्म परायण जीवों का जागरण। इस तरह भगवान ने प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का समर्थन किया। भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन तप और ध्यान की पराकाष्ठा है इसलिए वह स्वत: प्रेरणादायी है। भगवान के उपदेश जीवनस्पर्शी हैं, जिनमें जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। भगवान महावीर चिन्मय दीपक हैं। दीपक अंधकार का हरण करता है किंतु अज्ञान रूपी अंधकार को डसने के लिए चिन्मय दीपक की उपादेयता, निर्विवाद है। वस्तुत: भगवान के प्रवचन, उपदेश आलोक पुंज हैं। ज्ञान रश्मियों आप्लावित होने के लिए उनमें निमज्ज जरूरी है।

ओपन रुफ डबल डेकर बस द्वारा
उदयपुर दर्शन
visit us : www.udaipursightseeing.com
किट्टी पार्टी, बर्थ-डे पार्टी आदि के लिए संपर्क करें मो. -91 82330 45678, 97829 55222

RT RISHABH TRAVELS

Group Tours : Ghasiyaar (Chota Shrinath ji), Haldi Ghati, Rameshwar, Shrinath ji (Nathdwara) Eklingji

Charter A/c & non A/C Buses Available

UDAIPUR
H.O. : 7, Town Hall, Nr. ICICI Bank, Udaipur - 313001
Phone : 0294-2421918, 2418369, 5100366, 2418317
B.O. : 4/5, Nr. Gumaniawala Petrol Pump, Sardarpura, Udaipur
Tel. : 0294-2422582, 2528644, 2425024 Parce : 5101752

NEW DELHI
H.O. : 2, Shah Bhawan, Behind Filmistan Fire Station, Chamelion Rd., Near Lcgah Gol Choraha, New Delhi
Tel. : 011-23514657, 23519724, 23512299, 32512160
B.O. : Shop No. 6, Old Punjab Bus Stand, Old Delhi-6,
Tel. : 011-23981235, 23977301

Helpline : 82330 45678, 94141 69369   Web. : www.rishabhtravel.com | E-mail : rishabhtravel@yahoo.com

JAIPUR-RISHABH TRAVELS 0141-5103830, 5104830
RISHABH TRAVELS, D-57, Fateh Singh mkt, Opp. Hotel Rajputana Sheraton
AJMER-RISHABH TRAVELS 0145-2620061, 2620926
C/o KAMLA TRAVELS, 48, Kutchery Road
BHILWARA-RISHABH TRAVELS 01482-237037, 237034
C/o NAMEDEV TRAVELS, Near hotel Land Mark, Basant Vihar
MUMBAI (VT office)-RISHABH TRAVELS 022-22897521, 22626041
C/o ASHAPURA TRAVEL, 62-66, Joshi Bldg, Sunder Goa Street, Nr. GPO, VT Fort
MUMBAI (Borivali office)-RISHABH TRAVELS 022-65655959
C/o ASHAPURA TRAVELS, Opp. National Park, Western Express Highway
MUMBAI (Andheri office)-RISHABH TRAVELS 022-36940808, 28044454
C/o MUKESH TRAVELS, Wazir Glass Compound, Western Express highway
BIKANER-RISHABH TRAVELS 0151-2525106, 2205209
C/o MILAN TRAVELS, Near Hotel Murnal, Panchasati Circle
SHRI GANGANAGAR-RISHABH TRAVELS 0154-2473601, 2473604
C/o SIDHARTH SHEKHAWAT TRAVELS, Adarsh Cinema Pulia, Khoda chowk.
JODHPUR-RISHABH TRAVELS 0291-5103227, 5103226
C/o JAKHAR TRAVELS Near Barkhatulla Stadium, Main Pal Road
JHALAWAD-RISHABH TRAVELS 07432-233136, 233330
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Bus Stand
JHALARAPATAN-RISHABH TRAVELS 07432-240424, 240324
C/o OSHO TRAVEL, Opp. Bus Stand
KOTA-RISHABH TRAVELS 0744-2440313, 2401125
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Allahdeal Park, Keshavpura
NATHDWARA-RISHABH TRAVELS 02953-230052, 230030
C/o ASHAPURA TRAVELS, Opp. Private Bus Stand, Nr. Kadayala Bhawan
RAJSAMAND-RISHABH TRAVELS 02952-225392, 223281
C/o DARSHAN TRAVELS, Near Ramdev Temple
PILANI-RISHABH TRAVELS 01596-245949, 245249, 9413368999
C/o AJAYRAJ TRAVELS, Opp. Bus Stand

Cargo Services (Luggage & Parcel Services : Door to Door Delivery
Expert in Institutional Cargo Services : 98290 66369

शीर्ष अदालत ने केन्द्र से मांगा जवाब

हाथ से मैला ढोने की प्रथा के खात्मे के लिए क्या कदम उठाए?

बाबूलाल नागा

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा है कि वह हाथ से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने और आने वाली पीढ़ियों को इस 'अमानवीय प्रथा' से रोकने के लगभग 10 साल पुराने फैसले को लागू करने के लिए उठाए गए कदमों का रिकॉर्ड छह सप्ताह के भीतर अदालत की मेज पर रखे।

द हिंदू के मुताबिक, जस्टिस एस. रवींद्र भट्ट के नेतृत्व वाली एक पीठ ने हाल ही में इस तथ्य को न्यायिक संज्ञान लिया कि हाथ से मैला ढोने और सीवर लाइनों में फंसे लोगों की मौत एक वास्तविकता बनी हुई है, जबकि इस प्रथा पर 'मैला ढोने वालों का नियोजन और शुष्क शौचालयों का निर्माण (निषेध) अधिनियम, 1993' और 'हाथ से मैला ढोने वालों के नियोजन का प्रतिषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013' लागू करने के साथ प्रतिबंध लगा दिया गया था। शीर्ष अदालत ने सफाई कर्मचारी आंदोलन और अन्य बनाम भारत संघ के मामले के संबंध में दिए गए अपने फैसले में इस पर प्रतिबंध लगा दिया था और हाथ से मैला ढोने वालों के रूप में पारंपरिक रूप से और अन्य कार्यरत लोगों के पुनर्वास का निर्देश दिया था। फैसले ने उनके 'न्याय और परिवर्तन के सिद्धांतों के आधार पर पुनर्वास' का आह्वान किया था। अदालत ने जोर देकर कहा था, 'मैनुअल स्कैवेंजिंग से मुक्त किए गए व्यक्तियों को कानून के तहत उनके वैध देय को प्राप्त करने में बाधाएं नहीं आनी चाहिए।' 27 मार्च 2014 को सुप्रीम कोर्ट ने सफाई कर्मचारी आंदोलन बनाम भारत सरकार मामले में आदेश दिया था कि साल 1993 से सीवरेज कार्य (मैनहोल, सेप्टिक टैंक) में मरने वाले सभी व्यक्तियों के परिवारों की पहचान करें और उनके आधार पर परिवार के सदस्यों को 10-10 लाख रुपए का मुआवजा प्रदान किया जाए। द वायर द्वारा दायर किए गए सूचना का अधिकार (आरटीआई) आवेदन के जरिये जानकारी सामने आई कि साल 1993 से लेकर 2019 तक में देश भर में सीवर सफाई के दौरान जितनी मौतें हुई हैं, उसमें से करीब 50 फीसदी पीड़ित परिवारों को पूरे 10 लाख रुपए का मुआवजा दिया गया है। कई मामलों में मुआवजे के रूप में 10 लाख रुपए से कम की राशि दी गई। मालूम हो कि देश में पहली बार 1993 में मैला ढोने की प्रथा पर प्रतिबंध लगाया गया था। इसके बाद 2013 में कानून बनाकर इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया था। मैनुअल स्कैवेंजिंग एक्ट 2013 के तहत किसी भी व्यक्ति को सीवर में भेजना पूरी तरह से प्रतिबंधित है। अगर किसी विषम परिस्थिति में सफाई कर्मी को सीवर के अंदर भेजा जाता है तो इसके लिए 27 तरह के नियमों का पालन करना होता है। हालांकि इन नियमों के लगातार उल्लंघन के चलते आए दिन सीवर सफाई के दौरान श्रमिकों की जान जाती है। सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान मौत के आंकड़े बढ़ रहे हैं। दप्रिंट में छपी खबर के अनुसार गत वर्ष लोकसभा में केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास अठावले ने एक प्रश्न का जवाब देते हुए कहा था कि बीते पांच सालों में सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान 325 लोगों की मौत हुई। उन्होंने बताया साल 2017 में 93, 2018 में 70, 2019 में 118, 2020 में 19 और 2021 में 24 सफाईकर्मियों की मौत हुई थी। हालांकि केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग द्वारा जारी किए गए आंकड़े में काफी अंतर देखने को मिला था। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग ने एक आरटीआई का जवाब देते हुए कहा था कि सिर्फ 2017, 2018 और 2019 में कुल 271 सफाई कर्मचारियों की मौत हुई थी। 2019 में सीवर की सफाई के दौरान 110 लोगों, 2018 में 68 और 2017 में 193 लोगों की मौत हुई थी।

बहरहाल, जहां एक तरफ कानूनी प्रतिबंध के बाद भी आज समाज में मैला ढोने की प्रथा मौजूद है। वहीं दूसरी तरफ सिर पर मैला ढोने की इस घिनौनी प्रथा को रोकने में सरकारी स्तर पर प्रयास बौने साबित हुए हैं। स्वच्छ भारत अभियान के समय भी मैला प्रथा के खात्मे के दावे किये गए थे। लेकिन ये महज दावे ही बनकर रह गए। इस प्रथा को समाप्त करने के लिए हमारी सरकारों के पास कोई एजेंडा नहीं है। और न ही राज्य सरकारें इस कुप्रथा को समाप्त करने की अपनी असफलता को स्वीकार करती हैं। जरूरी है कि ऐसे अदालती आदेशों के बाद इस प्रथा को खत्म करने के लिए सरकारों की ओर से कोई एक निश्चित समय-सीमा निर्धारित हो। क्योंकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद-21 में 'मानवीय गरिमा के साथ जीवन जीने के अधिकार' की गारंटी दी गई है। लेकिन हाथ से मैला ढोने की प्रथा इस गारंटी का उल्लंघन है। लोगों को मानवीय गरिमा के साथ जीने के अधिकार की गारंटी तभी मिल पाएगी जब देश में मैनुअल स्कैवेंजिंग एक्ट 2013 का कठोरतम पालन होगा और सिर पर मैला ढोने की प्रथा का पूरी तरह खात्मा हो पाएगा।

(लेखक भारत अपडेट के संपादक हैं)

JKcement

JK SUPER CEMENT
BUILD SAFE

JK SUPER STRONG
BUILD SAFE
Weather Shield

जेके सुपर सीमेंट
की ओर से
आपको और आपके परिवार को
होली की हार्दिक
शुभकामनाएं

VIJAYSTAMBH

गर्म गृह पर 2024 में भारत की दस्तक

अमेरिका, रूस, यूरोपियन स्पेस एजेंसी और जापान के बाद भारत पांचवां देश होगा, जो शुक्र ग्रह पर यान भेजेगा। चंद्रयान और मंगलयान के बाद भारत ने मिशन 'शुक्रयान' पर काम शुरू कर दिया है। शुक्र (वीनस) सबसे गर्म ग्रह है। यह पृथ्वी के सबसे करीब भी है। दिसंबर 2024 में 'शुक्रयान' को रवाना किया जा सकता है।

भारतीय अंतरिक्ष संस्थान- 'इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गनाइजेशन' (इसरो) के अनुसार जिस तरह से चांद पर भेजे गए यान को 'चन्द्रयान' और मंगल पर भेजे गए यान को 'चन्द्रयान' नाम दिया गया, उसी तरह शुक्र ग्रह पर भेजे जा रहे यान को 'शुक्रयान' नाम दिया जा सकता है।

इस मिशन पर लंबे समय से काम हो रहा है। वर्ष 2024 का समय इसलिए चुना गया है, क्योंकि उस वक्त शुक्र और पृथ्वी सबसे नजदीक होंगे। मतलब दोनों ग्रहों के बीच की दूसरी काफी कम रहेगी।

किसी भी ग्रह पर यान भेजने के लिए सबसे पहले उसकी दूरी देखी जाती है। जब ग्रह पृथ्वी से नजदीक रहे तो भेजना ठीक होता है। इससे यान में भरा जाने वाला ईंधन भी कम लगता है। इसके साथ ही नौवहन और दिशा-निर्देश प्रणाली भी आसानी से काम करती है। अगर यह यान 2024 में नहीं भेजा जा सका तो दूसरी बार फिर 2031 में ही जा सकेगा। शुक्रयान शुक्र ग्रह के वातावरण का अध्ययन करेगा। अभी तक जो अध्ययन हुए हैं, उससे साफ है कि यह ग्रह जीवन के लिए बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है। पूरा ग्रह सल्फ्यूरिक एसिड के बादलों से आवेष्ठित है।

शुक्र ग्रह धरती के सबसे नजदीक है। उसे सौर प्रणाली का पहला ग्रह माना जाता है, जहां जीवन था। कभी वह बिल्कुल धरती की तरह था। आकार में भी पृथ्वी जैसा ही। धरती की तरह वहां भी महासागर था। वहां की जलवायु भी धरती की तरह थी। अब शुक्र ग्रह जीवन के लायक नहीं है। वहां सतह का तापमान नौ सौ डिग्री फारेनहाइट यानी 475 डिग्री सेल्सियस है। ये तापमान इतना ज्यादा है कि शीशे तक पिघल जाएं।

शुक्र ग्रह कार्बनडाई आक्साइड से भरा है। यहां के वातावरण का घनत्व पृथ्वी के मुकाबले 50 गुना ज्यादा है। यह सौर प्रणाली का सबसे गर्म ग्रह है। शुक्रयान अभियान के दौरान वैज्ञानिक कई महत्वपूर्ण सवालों के उत्तर तलाशने का प्रयास करेंगे। विश्व के वैज्ञानिक यह जानने की कोशिश में जुटे हैं कि कभी पृथ्वी के समान वातावरण वाला शुक्र ग्रह कैसे बदल गया। इसरो के अनुसार शुक्रयान अभियान में वहां सतह के नीचले भाग की परतों की जांच होगी। कहां-कहां ज्वालामुखी सक्रिय हैं, किस तरह लावा बह रहे हैं, वातावरण किन-किन चीजों से बना है, इन सब का अध्ययन किया जाएगा। सौर हवाओं का शुक्र के आयनमंडल यानी आयनोस्फेयर पर क्या असर पड़ता है, इसकी भी जांच होगी।

प्रस्तुतिः राजवीर

इन देशों के भी अभियान

अब तक अमेरिका, रूस, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी और जापान ने ही शुक्र पर यान भेजे हैं। अब तक कुल 46 बार अभियान चलाया गया है। सबसे पहले फरवरी 1961 में रूस ने शुक्र के लिए टी स्पूतनिक भेजा, जो नाकाम रहा। अमेरिका का जुलाई 1962 का मैरिनर-1 अभियान भी नाकाम रहा। अगस्त 1962 में अमेरिका का मैरिनर-2 मिशन कामयाब रहा। इसके बाद रूस को 1967 में कामयाबी मिली। यूरोपीय एजेंसी और जापान को भी कामयाबी मिल चुकी है। 30 सालों में तीन यान शुक्र की कक्षा में स्थापित किए जा सके हैं। अब अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा 2028 में और यूरोपीय एजेंसी 2030 में यान भेजने की तैयारी में है।

निकुंज भट्ट

0294-2410237, 94143 43555

शिव बर्तन भण्डार

- बिस्तर बर्तन, हलवाई व्यवस्था
- गीली दाल, काजू की पिसाई व्यवस्था
- कॉफी मशीन व एक्स्ट्रा ● काउन्टर की व्यवस्था
- पत्तल-दोने, डिस्पोजेबल आइटम ● नेपकिन फ्यूल के विक्रेता

सुथारवाड़ा, उत्तरी आयड़, उदयपुर (राज.)

Nikunj Bhatt
+ 91941 416 3030

Shiv Bartan & Caterers

Sutharwara, North Ayad, Udaipur - 313 001, Raj. India

Tele/Fax : +91 294 241 0237
Email : shivbartancaterers1.getif.in
website : shivbartancaterers1.getit.in

कांग्रेस महाधिवेशनः दल-बदल विरोधी कानून में बदलाव का वादा

धर्म निरपेक्ष ताकतों में एकजुटता की कोशिश

अमित शर्मा

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में तीन दिन चले अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 85वें महाधिवेशन में संगठन की मजबूती और रणनीतिक रणनीति को लेकर काफी मंथन हुआ। वर्षों बाद किसी महाधिवेशन में कांग्रेस 'वंशवाद' से परहेज करती नजर आई है। हालांकि 'भारत जोड़ो यात्रा' को पार्टी के लिए फायदे का सौदा बताते हुए राहुल गांधी को 2024 के चुनावी प्रचार का अहम चेहरा बताने और जमीनी स्तर पर उनका कद बढ़ाने की जरूरत पर भी मुहर लगाई गई।

महाधिवेशन में जिस तरह से मल्लिकार्जुन खरगे के नेतृत्व को सामने रखने की कोशिश की गई, इससे साफ है कि संगठन को चलाने की जिम्मेदारी खरगे के पास है। वहीं पार्टी भारत जोड़ो यात्रा की बार-बार चर्चा कर राहुल गांधी के चेहरे व कद को उभारने की कोशिश के निहितार्थ साफ हैं कि पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर उनका नेतृत्व और कद बढ़ाना चाहती है। कांग्रेस संचालन समिति की बैठक से गांधी परिवार दूर नजर आया। इसके पीछे यह जताने की कोशिश की गई कि संगठन के कामकाज के लिए अब पार्टी के पास गांधी परिवार से अलग अपना अध्यक्ष है। महाधिवेशन के पहले दिन 24 फरवरी को संचालन समिति की बैठक में सोनिया और राहुल गांधी ने शामिल न होकर बेशक यह संदेश देने की कोशिश की कि अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पूरा अधिकार दिया गया है, पर पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक समिति यानी कार्यसमिति के सदस्यों का चुनाव न कराने का फैसला पार्टी नेतृत्व के पुराने रूख का ही परिचायक है। इससे यह प्रश्न तो उठेगा ही कि पार्टी को नया अध्यक्ष मिलने के बावजूद नेतृत्व के पुराने तौर-तरीके ही जारी क्यों रहें?

खरगे का आह्वान

पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि देश की चुनौतियों से सिर्फ कांग्रेस लड़ सकती है। 2023 व 2024 के लिए पार्टी का एजेंडा साफ है। देश के मुद्दों पर संघर्ष करेंगे और कुर्बानी भी देंगे। 2004 से 2014 के बीच यूपीए गठबंधन में समान विचारधारा वाले दल हमारे साथ आए थे। आज उसी गठबंधन को मजबूती देने की जरूरत है। हम भाजपा व संघ के खिलाफ लड़ने वाले दलों को साथ लेने के लिए तैयार हैं।

संगठन में सुधार

उदयपुर के चिंतन शिविर में कांग्रेस ने संगठन के भीतर बदलाव के जो संकल्प लिए थे, महाधिवेशन में उसी दिशा में आगे बढ़ते हुए पार्टी ने उसमें और स्पष्टता देने की कोशिश की। मसलन, कांग्रेस की सबसे छोटी इकाई बूथ व ब्लॉक स्तर से लेकर पार्टी की सर्वोच्च इकाई सीडब्ल्यूसी तक में समाज के सभी तबकों की उचित भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। महिला, युवा दलित, आदिवासी, ओबीसी व अल्पसंख्यकों को 50 फीसदी आरक्षण देने की बात कर कांग्रेस संगठनात्मक सुधारों की ओर बढ़ने का संकेत देती दिख रही है। माना जा रहा है कि इससे आगामी चुनावों के मद्देनजर पार्टी में नया नेतृत्व उभरने की संभावना बढ़ेगी। उधर, सीडब्ल्यूसी का आकार बढ़ाकर भी सबको साथ लेकर चलने की कोशिश दिखाई दी। जहां सर्वोच्च नीति निर्धारण इकाई में गांधी परिवार की भूमिका सुनिश्चित होगी वहीं, खरगे को अपने हिसाब से अपनी टीम बनाने में फ्री हैंड का मौका भी मिलेगा।

कांग्रेस संविधान में होंगे अहम संशोधन

- कार्यसमिति में 23 की जगह 35 सदस्य, 18 निर्वाचित व 17 मनोनीत
- संगठन में 50 प्रतिशत महिलाएं व 50 प्रतिशत युवाओं (50 साल से कम) को आरक्षण। 25 प्रतिशत पद ओबीसी, अल्पसंख्यक व 25 प्रतिशत दलित-आदिवासियों को मिलेंगे।
- ट्रांसजेंडरों को पार्टी में जगह मिलेगी। एक जनवरी 2025 से सिर्फ डिजिटल सदस्यता अभियान।

अब इस तरह से होगा संगठन

बूथ कांग्रेस कमेटी (संगठन की इकाई होगी)
- पंचायत कांग्रेस कमेटी
- मंडल या जनपद कांग्रेस कमेटी
- ब्लॉक कांग्रेस कमेटी
- जिला कांग्रेस कमेटी
- प्रदेश कांग्रेस कमेटी
- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

विपक्षी एकता जरूरी

कांग्रेस ने समान विचारधारा वाली धर्मनिरपेक्ष ताकतों की पहचान कर उन्हें लामबंद होने की बात कही है। पार्टी के राजनीतिक प्रस्ताव में एनडीए का मुकाबला करने के लिए एक संयुक्त विपक्ष की जरूरत पर जोर दिया गया। लेकिन इसके पीछे कांग्रेस ने खुद की स्थिति भी टटोली है। आगामी विधानसभा चुनावों में अगर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक में उसका प्रदर्शन बेहतर रहता है तो कांग्रेस का कद और प्रभाव दोनों बढ़ेगा। इससे कांग्रेस विपक्षी एकता के नेतृत्व के लिए अधिक दावेदार भी होगी। महाधिवेशन से यह बात सामने आई कि 2024 के चुनाव के मद्देनजर कांग्रेस को एक नैरेटिव की जरूरत होगी। इसके मद्देनजर विजन डॉक्यूमेंट की बात की गई। ऐसा विजन डॉक्यूमेंट, जो लोगों के सामने एक विकल्प दे सके। देश में नफरत व डर के माहौल के साथ-साथ संवैधानिक संस्थाओं पर हमले का आरोप लगाने वाली कांग्रेस ने इससे निपटने के लिए अपने इरादे जाहिर किए हैं। कांग्रेस हेट क्राइम के खिलाफ कानून को लाने की बात कह रही है। साथ ही वह अभिव्यक्ति की आजादी को बाधित करने वाले तमाम नियमों व कानूनों की समीक्षा के भी पक्ष में है। इसके अलावा वह चुनाव सुधार, पुलिस सुधार व दल-बदल कानून में संविधान संशोधन का इरादा जाहिर कर एक नैरेटिव सेट करने की कोशिश में है।

रिटायरमेंट के संकेत

कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने 25 फरवरी के भाषण में राजनीति से सेवानिवृत्ति की ओर इशारा करते हुए कहा कि उनकी पारी का अंत भारत जोड़ो यात्रा से बेहतर नहीं हो सकता, इसे उन्होंने पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ बताया। मोदी सरकार पर हमला करते हुए कहा कि मोदी सरकार में दलित, महिला और हर तबके के साथ अन्याय हो रहा है। मनमोहन सिंह के सक्षम नेतृत्व के साथ 2004 और 2009 में हमारी जीत ने मुझे व्यक्तिगत संतुष्टि दी, लेकिन सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि मेरी पारी भारत जोड़ो यात्रा के साथ समाप्त हो रही है, जो कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ होगी। सोनिया के भाषण से यह स्पष्ट है कि वे राजनीति से सन्यास नहीं ले रही, हां यह जरूर कहा जा सकता है कि वे अब पार्टी अध्यक्ष जैसे पद से दूर रहेंगी।

सत्रहवीं पुण्यतिथि पर

हार्दिक श्रद्धांजलि

परम श्रद्धेय आदरणीय

आनन्दीलाल जी शर्मा

(उपाचार्य, लोकमान्य तिलक बी.एड कॉलेज डबोक, उदयपुर)

(पूर्व प्राचार्य आर. एम. वी. बी. एड, कॉलेज, उदयपुर)

(पूर्व, प्राचार्य हरिभाऊ उपाध्याय महिला बी. एड कॉलेज, हटून्डी, अजमेर)

॥ श्रद्धानवत ॥

पंकज-रेणु, नीरज-डॉ. अनिता (पुत्र-पुत्रवधु), अभिजय, मेघांश (पौत्र), आर्षेयी, प्रिशा (पौत्री) शोभा-सुरेन्द्र, सुधा-ओम, डॉ.वीणा-स्व. गौरव, अरुणा-पद्म, रश्मि-अनिल (पुत्री-दामाद) दोहित्र-दोहित्री :- प्रत्यूष, मोहित, स्व. चिन्मय, तन्मय, भार्गवि, नयन नारायण, पूर्वा, हार्दिक, चिर्कीषु, जिगिषा

जन्म: 28.11.1927

निधन: 05.04.2006

रक्षाबन्धन, धानमण्डी,उदयपुर

भाजपा का मिशन पूर्वोत्तर सफल

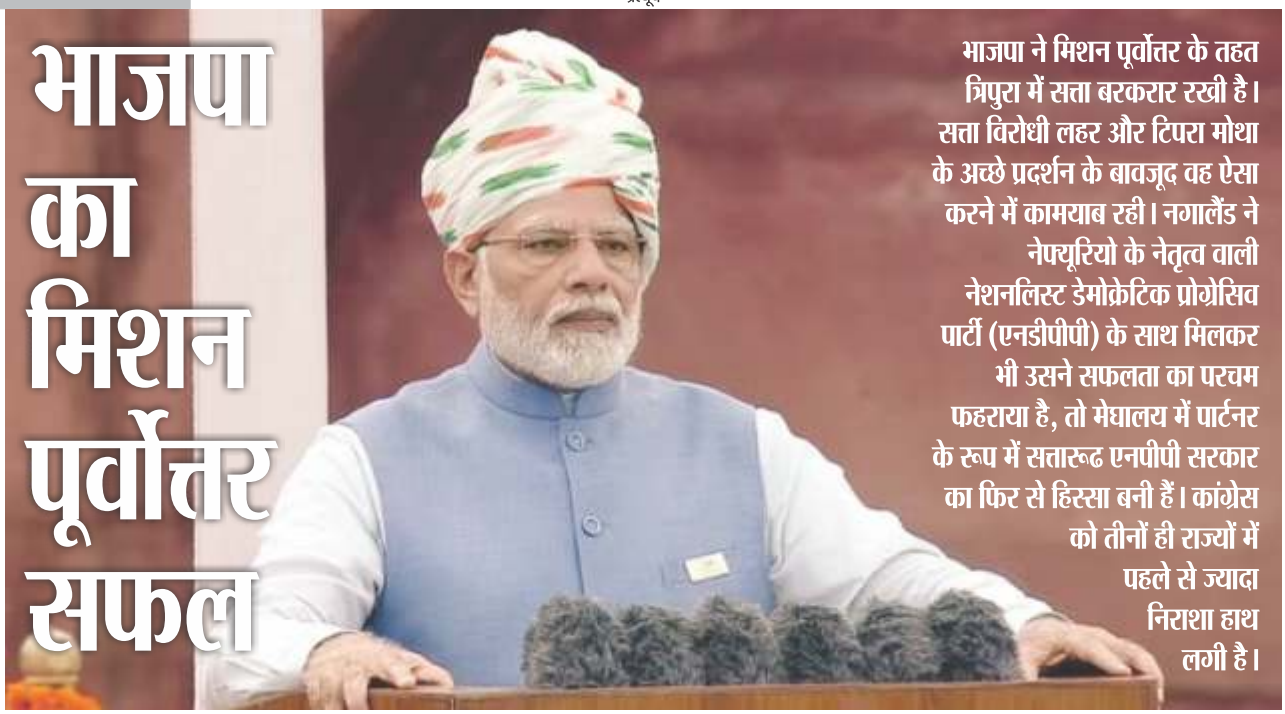

भाजपा ने मिशन पूर्वोत्तर के तहत त्रिपुरा में सत्ता बरकरार रखी है। सत्ता विरोधी लहर और टिपरा मोथा के अच्छे प्रदर्शन के बावजूद वह ऐसा करने में कामयाब रही। नगालैंड ने नेफ्यूरियो के नेतृत्व वाली नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (एनडीपीपी) के साथ मिलकर भी उसने सफलता का परचम फहराया है, तो मेघालय में पार्टनर के रूप में सत्तारूढ एनपीपी सरकार का फिर से हिस्सा बनी हैं। कांग्रेस को तीनों ही राज्यों में पहले से ज्यादा निराशा हाथ लगी है।

पीयूष शर्मा

त्रिपुरा के चुनाव पर सबकी नजर थी, क्योंकि इस बार वहां लंबे समय तक एक दूसरे की धुर विरोधी रही कांग्रेस और वामपंथी पार्टियां एक साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही थीं। हालांकि नतीजे दोनों ही पार्टियों के लिए उत्साहजनक नहीं रहे। दोनों महज 14 सीटों पर ही जीत हासिल कर पाईं। वाम मोर्चा के हिस्से 11 सीटें आई हैं, जो त्रिपुरा के शाही राजघराने के प्रद्योत मानिक देववर्मा की पार्टी टिपरा मोथा से भी कम हैं। पहली बार चुनाव लड़ रही टिपरा मोथा ने 14 सीटों पर जीत दर्ज की है। साल 2018 में भाजपा ने 36 सीटें जीत कर पहली बार आइपीएफटी के साथ गठबंधन में सरकार बनाई थी। इस बार भाजपा को चार सीटों का नुकसान हुआ है और पार्टी ने 32 सीटें जीती हैं।

पूर्वोत्तर को महत्व देने का फायदा निश्चित रूप से भाजपा को मिला है, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने लगातार पूर्वोत्तर का दौरा किया और उस क्षेत्र में चुनाव प्रचार किया। प्रधानमंत्री की लुक ईस्ट पॉलिसी में भी पूर्वोत्तर रहा है। इसका मतलब है कि भाजपा के गणित में पूर्वोत्तर बहुत महत्व रखता है, क्योंकि वहां 26 लोकसभा सीटें हैं, जो बाकी भारत के मध्य आकार में एक राज्य के बराबर है। भाजपा ने पूर्वोत्तर के चुनावों को इसलिए इतना ज्यादा महत्व दिया, क्योंकि वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव के मद्देनजर यहां की 26 लोकसभा सीटें उसके लिए बहुत अहम हैं। भाजपा को इस बात का आभास है कि लोकसभा चुनाव में अन्य राज्यों में उसके खिलाफ सत्ता विरोधी रूझान होगा। लिहाजा राज्यों में होने वाले नुकसान की भरपाई की दृष्टि से भी पूर्वोत्तर में अपनी स्थिति मजबूत रखना उसके लिए जरूरी था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने परिणाम की घोषणा के बाद पूर्वोत्तर सहित विभिन्न चुनावों में भाजपा की लगातार जीत का श्रेय पार्टी की सरकारों के कार्यों, उनकी कार्य संस्कृति तथा पार्टी कार्यकर्ताओं के समर्पण की त्रिवेणी को दिया। मेघालय में नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) सबसे ज्यादा सीटों के साथ सबसे बड़ा दल बनकर उभरी है। यहां एनपीपी ने इस चुनाव में 59 में से 26 सीट जीती हैं। दूसरी सबसे बड़ी पार्टी 11 विधानसभा सीटों के साथ युनाइटेड डेमोक्रेटिक पार्टी (यूडीपी) रही है। इतनी सीटें जीतने के बाद भी

केन्द्र की लगातार फडिंग

केन्द्र में भाजपा की सरकार होने से पूर्वोत्तर के लिए फंडिंग के रास्ते खुले। क्षेत्र के विकास के लिए केन्द्र ने तिजोरियां खोल दीं। 2014–15 से लेकर अब तक केन्द्र की फंडिंग में लगातार इजाफा हुआ है। पूर्वोत्तर में बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाया गया। लोगों को ये बदलाव साफ बदलाव नजर आए। देश के अन्य हिस्सों के साथ पूर्वोत्तर राज्यों की कनेक्टिविटी में इजाफा हो गया। दरअसल, पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों की बहुत पुरानी शिकायत रही है कि उनकी तरफ केन्द्र की सरकारें ध्यान नहीं देती। उनके राज्यों में विकास परियोजनाओं की रूपरेखा नहीं बनाई जाती। उनके सीमा और पहचान संबंधी विवादों के निपटारे की गंभीरता से कोशिश नहीं की जाती है। इस लिहाज से भाजपा ने पूर्वोत्तर पर विशेष रूप ये ध्यान केन्द्रित किया। बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर जोर दिया गया। राज्यों के बीच सीमा संबंधी विवादों को सुलझाने का प्रयास किया गया। इसके नतीजे प्रकट रूप में दिखने भी लगे हैं। इसका असर स्वाभाविक रूप से वहां के लोगों के मन पर पड़ा है। जबकि इन राज्यों के लोगों के वैचारिक पृष्ठभूमि भाजपा के सिद्धांतों से सीधे–सीधे मेल नहीं खाती, मगर विकास का मुद्दे उन्हें उससे जोड़ता है। इससे एक बार फिर यह स्पष्ट हुआ कि आम लोग वैचारिक और सैद्धांतिक मुद्दों के बजाय विकास के मुद्दों को अधिक तरजीह देते हैं।

त्रिपुराः कुल सीटें 60
बहुमत 31

पार्टी	सीटें जीती	वोट प्रतिशत	+/–
भाजपा +	33	40.23	–11
लेफ्ट+कांग्रेस	14	35.36	–2
टीएमपी	13	20.1	+13
अन्य	0	2.0	00

मेघालयः कुल सीटें 59
बहुमत 30

पार्टी	सीटें जीती	वोट प्रतिशत	+/–
एनपीपी	26	31.49	+6
कांग्रेस	5	13.14	–16
भाजपा	2	9.33	00
टीएमसी	5	13.78	+5
अन्य	21	31.36	+4

नगालैंडः कुल सीटें 60
बहुमत 31

पार्टी	सीटें जीती	वोट प्रतिशत	+/–
भाजपा+	37	51.03	+7
कांग्रेस	0	3.55	00
एनपीएफ	2	7.09	–24
अन्य	21	38.33	+17

एनपीपी बहुमत के आंकड़े से दूर रही। यहां तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा से ज्यादा सीटें जीती हैं।

मेघालय में भाजपा को केवल दो ही सीट से संतोष करना पड़ा है। इस राज्य में बहुमत का आंकड़ा 30 है। मुख्यमंत्री कोनराड संगमा इस बार चुनाव में अपने बल पर चुनाव मैदान में थे। संभावना जताई जा रही थी कि वे इस चुनाव में अपने दम पर बहुत के आंकड़े के करीब पहुंच सकते हैं। इस चुनाव में तृणमूल को पांच, कांग्रेस को पांच, वाइस ऑफ पीपुल्स पार्टी चार, भाजपा दो, हिल स्टेट पीपुल्स डेमोक्रेडिक पार्टी दो, निर्दलीय दो और पीपुल्स डेमोक्रेटिड फ्रंट के दो सीटें मिली हैं। बीते चुनाव में संगमा की पार्टी को कुल 20.60 फीसद मत मिले थे और उनकी पार्टी ने 19 सीट पर अपनी जीत दर्ज कराई थी। इस बार अकेले चुनाव मैदान में जाने का लाभ पार्टी को मिला है और उसकी सीटों की संख्या बढ़ गई है। चुनाव पर पूर्व लोकसभा अध्यक्ष स्वर्गीय पीए संगमा की छवि का असर रहा है, जिसका लाभ कोनराड संगमा को मिला है। कोनराड ने 2016 में पीए संगमा की मृत्यु के बाद पार्टी की कमान संभाली थी।

महिलाओं ने रचा इतिहास

नगालैंड में चौदह बार चुनाव हो चुके हैं, पर आज तक कभी महिला चुनकर विधानसभा नहीं पहुंची थीं। अब तक मात्र एक महिला सांसद रानो साइजा चुनी गई थीं। वह 1977 में छठी लोकसभा में चुनकर संसद पहुंची थीं। विधानसभा चुनाव में महिलाओं के न चुने जाने को लेकर अक्सर सवाल भी उठते रहते थे, क्योंकि नगालैंड ऐसा राज्य है, जहां पुरुषों से ज्यादा महिला मतदाता हैं। नगा जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की पैठ है, लेकिन राज्य की राजनीति में उनकी उपस्थिति शून्य थी। यह नगा समाज की बहुत बड़ी विडंबना थी। इस बार वहां जनता ने चार महिला प्रत्याशियों में से दो–दीमापुर तृतीय विधानसभा से हेकानी जखालू और अंगामी सीट से सलहूतुन क्रू से को चुनकर विधानसभा में भेजा है और इस तरह अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के ठीक पहले वहां इतिहास रचा गया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

कांग्रेस को बड़ा नुकसान

मेघालय के चुनाव से साफ है कि तृणमूल कांग्रेस की उपस्थिति ने कांग्रेस को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया। वोटों का बंटवारा इस तरह नहीं होता तो चुनाव नतीजे कुछ दूसरे होते। जाहिर है इसका फायदा एक बार फिर कोनराड संगमा को हुआ है, जिन्होंने चुनाव से पहले भाजपा से नाता तोड़ लिया, मगर बहुमत का आंकड़ा जुटाने के लिए वे दोबारा एनडीए में शामिल हो गए।

नगालैंड में कांग्रेस 20 साल से सत्ता से बाहर है। लगातार दूसरे विधानसभा चुनाव में पार्टी एक सीट भी नहीं जीत पाई। एससी जमीर कांग्रेस के आखिरी मुख्यमंत्री थे, इसके बाद राजनीतिक ताकत के रूप में उभरे वर्तमान मुख्यमंत्री नेफियू रियो का दल नेशनल डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी तीन दशक से सत्ता पर काबिज है।

त्रिपुरा में वामदलों के साथ गठबंधन कर सत्ता में आने की कांग्रेस की उम्मीदें भी धराशायी हो गई। यहां तीन दशक से कांग्रेस सत्ता से बाहर है। पहले आइपीएफटी उसके बाद तृणमूल कांग्रेस और अब टिपरामोथा जैसे दलों ने कांग्रेस की सियासत को कमजोर किया है। त्रिपुरा को लेकर कांग्रेस इस बात से राहत महसूस कर सकती है कि पिछली बार जहां उसका खाता नहीं खुला था, वहीं मौजूदा चुनाव में उसे 3 सीटें मिली हैं। यहां मानिक साहा ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। शपथ समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह व असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा की उपस्थिति के खास मायने हैं। बंगाल के सागरदीघी विस सीट के उपचुनाव में कांग्रेस को बड़े अंतर से हराकर झटका दिया है। महाराष्ट्र की कसबा पेठ सीट के साथ कांग्रेस ने तमिलनाडु की एक सीट पर बड़े अंतर से जीत हासिल कर प्रतिष्ठा बनाए रखी।

अष्ट सिद्धि, नौ निधि के दाता

संकट मोचक भगवान हनुमान सर्वगुण सम्पन्न हैं। अखण्ड ब्रह्मचर्य, बुद्धिमता-विद्वता, चतुरता, बल-पौरूष, साहस और सदाचार आदि गुणों से परिपूर्ण। इसी माह की पूर्णिमा को देशभर के मंदिरों में सोल्लास मनाई जाएगी हनुमान जयंती !

पूनम वार्ष्णेय

एक दिन भगवान राम से लक्ष्मण ने यों ही पूछ लिया कि प्रभु आप सबसे ज्यादा किससे प्रेम करते हैं। माता सीता भी साथ ही बैठी थीं। भगवान राम मुस्कुराए और आंखें बंद कर लीं। बंद आंखें से भगवान राम अपने प्रिय भक्त हनुमान को निहार रहे थे। कुछ क्षण पश्चात् भगवान ने आंखें खोली और लक्ष्मण से कहा कि समय आने पर मैं सभी को बताऊंगा कि मैं सबसे ज्यादा किससे प्रेम करता हूं। समय पंख लगाकर उड़ने लगा। माता सीता का हरण हुआ। यह जानने के बाद कि सीता हरण रावण ने किया है, राम ने रावण के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध के समय की घटना है। मेघनाद की शक्ति से मूर्च्छित होकर लक्ष्मण राम की गोद में थे। मर्यादा पुरूषोत्तम राम अपने अनुज की इस दशा को देख करूण विलाप कर रहे थे। लेकिन संकट के इन क्षणों में भगवान को उनके भक्त और दास हनुमान ने उबारा। लक्ष्मण को पुनर्जीवन मिला। राम ने उन्हें गले लगाते हुए कहा, '' तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।'' ऐसे एक-दो नहीं बल्कि अनेक अवसर आए, जब हनुमान ने भगवान राम को संकटों से उबारा। यह हनुमान और कोई नहीं बल्कि रूद्र के ग्यारहवें अवतार मां अंजनी और केसरी के पुत्र बजरंग बली हैं। इंद्र के वज्र से इनकी हनु (ठुड्डी) टेढ़ी हो गई, जिससे इनका नाम हनुमान हुआ। हनुमान के पालक पिता वायु देव हैं। सूर्य देव के शिष्य हनुमान ने कौतुहलवश ऐसे कई कार्य किए, जिससे सबको आश्चर्य हुआ- जैसे सूर्य को निगलने की घटना।

हनुमान जी को अष्ट सिद्धि और नौ निधि के दाता माना जाता है। ये अष्ट सिद्धियां अणिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकम्य, महिमा, ईशित्व और वशित्व हैं। अणिमा सिद्धि से व्यक्ति में सूक्ष्म रूप धरने की क्षमता आ जाती है। लघिमा में शरीर को छोटा किया जा सकता है, तो गरिमा में अपने शरीर को जितना चाहे भारी बना सकते हैं। प्राप्ति सिद्धि में मात्र अभिलाषा करने से ही वस्तु की प्राप्ति हो जाती है। प्राकाम्य में इंसान जो चाहता है, वह हो जाता है। महिमा से अपने शरीर को जितना चाहे विशाल कर सकता है। ईशित्व से प्रभुत्व और अधिकार की प्राप्ति होती है। वशित्व से किसी को भी वश में किया जा सकता है। इसी प्रकार नव रत्नों को ही नौ निधि कहा जाता है। ये हैं- पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकंद, कुंद, नील और खर्व। ये भी हनुमानजी के भक्ति से ही प्राप्त किए जा सकते हैं।

विभिन्न स्वरूप

प्राण रक्षक हनुमान: संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी के प्राण बचाए। लंका में माता सीता त्रिजटा से मरने के लिए अग्नि मांग रही थीं, उसी समय हनुमान ने राम की मुद्रिका देकर मां को शान्त किया। मेघनाथ ने रामजी को नाग पाश में बांध लिया। हनुमान अहिरावण से भी बचा कर राम और लक्ष्मण को कंधे पर बैठा कर ले आये थे।

कथावाचक: लंका जाकर हनुमान जी ने प्रथम बार विभीषण को रामसीता की मधुर कथा सुनाई। बाद में अशोक वाटिका में माता सीता को राम कथा एवं राम-नाम गान करके सुनाया।

संकटमोचक: भूतप्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेताल आदि के संकटों से बचाने के लिये केवल हनुमान सक्षम हैं। यह प्रभाव मेंहदीपुर बालाजी में देखा जा सकता है। वहां अदृश्य शक्तियां लोगों के संकट हर लेती हैं।

भक्त और सेवकों में अग्रगण्य: माता सीता की खबर लाने के लिये हनुमान उद्यत हुए और लंका पहुंच गये। लंका में राम जी का यशगान करते हुए रावण को उपदेश दिया कि सीता जी को लौटाने में ही भलाई है। अयोध्या में प्रतिदिन हनुमान जी राम के सभी कार्य करते थे।

श्रीराम कथा के श्रोता: अयोध्या छोड़कर श्रीराम वैकुंठ जाने लगे, तब राम की आज्ञा से हनुमान पृथ्वी पर ही रहे। जहां कहीं राम कथा होती है, वहां हनुमान किसी न किसी रूप में अवश्य पहुंचते हैं।

भक्तों को शानि पीड़ा नहीं: रावण ने सभी ग्रहों को लंका में बन्दी बना लिया था। हनुमान ने वहां पहुंच कर सभी को

बंधन मुक्त कराया। उस समय शनि देव ने वायदा किया कि वे हनुमान भक्तों को कभी परेशान नहीं करेंगे।

अहंकार रहित विनयशील : श्री राम ने एक बार सारी सभा के सामने प्रश्न किया कि तुम समुद्र कैसे पार कर गए। अतुलित बल के स्वामी होते हुए भी आपने उत्तर दिया कि आपकी मुद्रिका के प्रभाव से समुद्र पार कर लिया। फिर रामजी ने पूछा, आपने लंका कैसे जलाई तो उत्तर दिया मां के दुख के कारण निकलने वाली गरम-गरम सांसों से लंका जला दी। अभिप्राय यह है कि हनुमानजी में केवल विनयशीलता और उदारता है।

कार्य सिद्ध करने वाले : सुबह-शाम, एक निश्चित समय, श्रद्धापूर्वक हनुमान चालीसा, संकटमोचन हनुमानष्टक, बजरंगबाण नित्य पाठ करने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। प्रत्येक मंगलवार सुंदरकांड का पाठ करें तो यह अत्यंत लाभदायक है। वीर हनुमान अपनी भक्ति और बलबुद्धि से चारों युगों में पूजनीय बने हुए हैं। यही कारण है कि पूरे भारत में हनुमान जी के सबसे ज्यादा मंदिर हैं। इसका कारण यह है कि वे दुखियों की आवाज तुरंत सुनते हैं, सभी की समस्याओं का समाधान करते हैं। बजरंगी बड़े दयालु हैं। जटिल समस्याओं का हल तुरंत कर देते हैं। असंभव को संभव बनाने में उनकी कृपा अत्यन्त आवश्यक है।

सलाह: गर्मी में पानी के पूरक ठंडे रसीले फल

गर्मी में ताजा फल शरीर को ऊर्जा और ताजगी देने के साथ-साथ शरीर में पानी की कमी को भी पूरा करते हैं। ये कई बीमारियों का भी इलाज करते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसलिए लोगों को मौसमी फल खाने की सलाह देते हैं।

पौष्टिक खाना अच्छा सेहत के लिए जरूरी है, पर क्या आप जानते हैं कि फल भी हमारे शरीर को स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह बहुत जरूरी है हम अपनी डाइट में फलों को शामिल करना कतई न भूलें। फलों का सेवन शरीर को कई बीमारियों से बचाता है। ये सेहत के साथ-साथ त्वचा और बालों को स्वस्थ भी बनाते हैं। रोजाना एक फल का सेवन अवश्य करना चाहिए। फल चाहे गर्मी के मौसम में मिलने वाले हों या सर्दी में, इन सभी फलों की अपनी-अपनी खासियत होती है। गर्मी में आने वाले ज्यादातर फल शरीर में पानी की कमी को पूरा करने के साथ धूप और लू से होने वाली परेशानी से बचाते हैं। शरीर को ठंडक देते हैं।

तरबूज: यह एक ठंडा फल है। शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। खुश्की और प्यास को भी दूर करता है। गर्मी से छुटकारा दिलाता है। गर्मी के बुखार में तरबूज फायदेमंद होता है। ख्याल रखें कि इसे पेट भर के खाने से जोड़ों में दर्द होने लगता है। इसे खाना खाने से पहले खाने की सलाह दी जाती है। कोशिश करें नाश्ते में खाएं। 100 ग्राम तरबूज में 30 ग्राम कैलोरी होती है। इसमें लगभग 1 मिलीग्राम सोडियम, विटामिन ए, 11 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 8 ग्राम, फाइबर 0.4 ग्राम, शुगर, 6 ग्राम, विटामिन सी 13 प्रतिशत व 0.6 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है।

खरबूजा: खरबूजा रेशे और पानी से भरपूर फल है। इसकी तासीर गर्म है। मगर इसके बीज ठंडे होते हैं। इन बीजों को पीसकर दूध में मिलाकर पीने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। खरबूजा दिल को सुकून देता है। पीलिया, पथरी और कब्ज की बीमारी को दूर करता है।

खीरा और ककड़ी: इन दोनों की तासीर ठंडी होती हैं। गर्मी के दिनों में हरी-हरी ताजा ककड़ी खूब मिलती है। खीरा या ककड़ी खाकर पानी नहीं पीना चाहिए। ये दोनों प्यास, गर्मी और पेशाब की जलन को दूर करते हैं। कब्ज की समस्या में फायदेमंद हैं। इन पर काला नमक लगाकर खाने से जल्दी हजम हो जाते हैं। इनकी सब्जी भी बना सकते हैं।

-ऋषिका नागदा

श्री

Shankar Lal 9414160690
Jyoti Prakash 9414161690
Chetan Prakash 9413287064

Jyoti Stores
(A Leading Merchant in Ayurvedic Medicines)

ज्योति स्टोर्स

Outside Delhi Gate, UDAIPUR - 313 001 (Raj.)

Ph. : 2420016 (S), 2415690 (R)

Factory : Jhamar Kotra Main Road, EKLINGPURA, Udaipur, Ph. : 2650460

E-mail : jagritiherbs@yahoo.co.in, Website : www.jagritiayurved.com

रोजेदारों को अल्लाह का इनाम

फिरोज़ बख़्त अहमद

ईद का रमजान से बड़ा घनिष्ठ संबंध है। रमजान मास में ही अल्लाह की ओरगार-ए-हिरा में हजरत मुहम्मद सा. पर कुरान उतरा था। पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल) ने फरमाया कि रमजान महीने का शुरू का हिस्सा रहमत, दूसरा हिस्सा मगफिरत और तीसरा हिस्सा जहन्नुम की आग से आजादी का सबब है। हजरत मुहम्मद के अनुसार रमजान की प्रथम रात्रि आते ही शैतानों और जिन्नातों को जकड़ दिया जाता है। दोजख के सारे द्वार बंद कर दिए जाते हैं। जन्नत की ओर जाने वाले सभी द्वार खोल दिए जाते हैं। इस्लाम में पांच स्तम्भों में नमाज के बाद रोजे का महत्व है।

ईद का अर्थ होता है - प्रसन्नता। हर धर्म में खुशी मनाने के कई पर्व अवसर होते हैं, मुसलमानों के लिए ईद-उल-फित्र है। मगर यहां खुशी का अभिप्राय अपनी निजी खुशी नहीं, बल्कि इसका सैद्धांतिक अर्थ है कि हम दूसरों को कितनी खुशी दे सकते हैं। वैसे यह भी कहा जाता है कि ईद अल्लाह की ओर से उन लोगों को इनाम है, जिन्होंने रमजान के पूरे मास रोजे रखे हैं।

आजकल गर्मी का मौसम है और रोजे में एक व्यक्ति सवेरे तीन बजे से लेकर शाम सवा सात बजे तक बिना खाए और पानी की एक बूंद पिए बिना रहता है। इसका एक भावनात्मक पहलू यह भी है कि हमें पता चल जाता है कि एक निर्धन और फकीर की क्या स्थिति रहती है। इसके अतिरिक्त तीस रोजों में हर व्यक्ति को हर प्रकार की बुराई, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से किनारा करना होता है। वैसे भी ईद में जो शब्द फित्र आता है, उसका अर्थ होता है कि ईद की नमाज एवं त्योहार से पूर्व फितरा यानी दान देना, ताकि उससे निर्धन लोग भी हंसी-खुशी त्योहार मना सकें।

ईद का एक किस्सा है-हजरत मुहम्मद (सल) जब मक्का की किसी सड़क से गुजर रहे थे, तो उन्हें रोता हुए एक अनाथ बच्चा दिखाई दिया, जो कह रहा था कि उसका कोई नहीं है। जब आपने उसे देखा तो उसे पुचकारा और अपने साथ ले जाकर कपड़े दिलवाए, भोजन और मिठाई दिलवाई। वह सब लेकर बच्चा खुशी-खुशी दौड़ता हुआ अपने ठिकाने पर गया और सबको बताया कि हजरत मुहम्मद ने उसके आंसू पोंछे और औरों की तरह उसे भी त्योहार की खुशियों में शमिल किया।

इस्लाम की भी यही भावना है कि अगर आपके पड़ोसी ने खाना नहीं खाया है तो आपका कर्तव्य बनता है कि उसके पास जाएं और जिस रूप से भी हो सके, सहायता करें। आमतौर पर ईद का त्योहार धार्मिक से अधिक सामाजिक भावनाओं से जुड़ा हुआ है। इसमें कोई दो राय नहीं कि जहां तक साम्प्रदायिक सद्भाव और आपसी मेल-जोल की भावना का प्रश्न है, ईद उस पर खरी उतरती है।

नेकियों का महीना

इस्लाम में पांच स्तून (स्तंभ) है। कलमा, नमाज, फर्ज, जकात, रमजान। इसमें रमजान एक खास स्तंभ है। रमजान के महीने में चांद के हिसाब से तीस या उन्तीस रोजे रखे जाते हैं। यह महीना गुनाह माफ करवाने का है। रमजान को अरबी में रमादान कहते हैं, जो कि अरबी लफ्ज रमीदा से बना है, जिसका मतलब भूख, प्यास, गर्मी व सख्ती बर्दाश्त करना है। रोजे हर मुसलमान के लिए फर्ज है, पर बच्चे को दूध पिलाने वाली मां और गर्भवती औरत को रोजे से छूट मिल जाती है। सफर में भी रोजे माफ होते हैं।

रोजे के मायने: रोजे का मतलब सिर्फ भूखा, प्यासा रहना नहीं होता, बल्कि मुंह, आंख, कान सबका रोजा होना चाहिए। मतलब न बुरा बोले न बुरा देखें न बुरा सुनें। सच्ची नीयत से रोजा रखें। नेक काम करें। सारी इंद्रियों पर पूरा नियंत्रण होना चाहिए। रोजेदार सुबह सादिक के पहले यानी 4 बजे से पहले नाश्ता चाय लेते हैं। इसे सेहरी कहते हैं। फिर शम को सूरज डूबने के बाद रोजा खोला जाता है। उस वक्त तरह-तरह के फल, शरबत, पकवान, तली हुई चीजें आदि खाई जाती हैं, इसे इफ्तारी कहते हैं। रमजान को नेकियों का मौसम भी कहते हैं। रोजे रखने के पीछे एक मकसद है कि अमीर गरीबों की तकलीफ समझें, उनकी भूख-प्यास जाने और ज्यादा से ज्यादा दान करें।

जकात और फितरा: इस महीने में जकात और फितरा दिए जाते हैं। जकात में कुल आमदनी का ढाई प्रतिशत गरीबों में बांटना चाहिए। यह कपड़े और अनाज के तौर पर भी हो सकता है। इसका मकसद समाज के गरीब तबके की मदद करना है। रोजा खुलाने का बहुत सवाब है। इसलिए लोग गरीबों के लिए बड़ी-बड़ी इफ्तार पार्टी रखते हैं। ईद के पहहले फितरा देने का भी हुक्म है। जिसमें अनाज और ईद का सामान गरीबों में बांटा जाता है, ताकि वो भी अच्छी तरह ईद मना सकें। इस महीने में सदका, खैरात में जरा भी कंजूसी नहीं करना चाहिए।

शबे-कद्र: रमजान की सत्ताईसवीं रात को शबे कद्र कहते हैं। इस रात को मस्जिदों में रोशनी की जाती है और ज्यादा से ज्यादा इबादत की जाती है। रमजान के आखिरी जुमे को जुमातुल विदा कहते हैं। उस दिन जुमे की नमाज में अमनों-अमान की दुआएं मांगी जाती हैं।

चांद रात: ईद के एक दिन पहले चांद देखने की रात होती है। परिवार के सभी लोग घर से बाहर निकलकर चांद देखते है, जो बहुत मुश्किल से दिखाई देता है, क्योंकि यह बहुत बारीक होता है और जल्दी ही गायब हो जाता है। इसलिए कभी-कभी मिलने वाले को ईद का चांद कहते हैं। चांद रात के दूसरे दिन ईद होती है।

-शकीला हुसैन

वीरेंद्र कुमार डांगी

रजनी डांगी

डांगी इण्डस्ट्रीज

सोप स्टोन पाउडर

डोलोमाइट

चाइना क्ले

केल्साइट पाउडर के निर्माता एवं माइनिंग

- पर्ल मिनरल्स एंड केमिकल्स
- डांगी माइनिंग प्राईवेट लिमिटेड
- नेनो क्ले एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड
- देवपुष्प माइनिंग इण्डस्ट्रीज, किच्छा (उत्तराखंड)

एफ-39 (ए) आई. टी. पार्क, रोड नं. 12, मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर 313 003

फोन : 9649203061/9672203061, ईमेल: pearlmin@rediffmail.com, dangiindustries@rediffmail.com

कब पैदा होंगे अंबेडकर जैसे लोग?

वेदव्यास

भीमराव अंबेडकर का नाम स्वाधीन भारत में पराधीन समाज के मुक्ति संदेश के रूप में जाना जाता है। जैसा कि हमारे यहां होता आया है कि हमें अपना खुद का जन्मदिन मनाने की भी फुर्सत और सुध बुध नहीं है तथा हम राजकीय आयोजन और अवकाश को ही स्मृति का समारोह मान लेने के आदी हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय कैलेंडर में धर्म और संस्कृति के अवकाश में से जो भी दिन शेष बचते हैं, उनमें हम पूर्वजों के तर्पण के लिए बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं रहते। सब अपनी जात और पार्टी के नेताओं का जन्मदिन मनाते हैं और उन्हीं के आदर्शों को समय और संसार की आवश्यकता के रूप में प्रतिपादित करने का प्रयास करते हैं। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्तियों की जगह परंपरा, धार्मिक समागम और त्यौहार ही हमारे देश में अधिक प्रचलित हैं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर तो महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू भी नहीं थे। उन्हें तो गुरु नानक और गुरु तेग बहादुर जैसा पंथ निर्माता भी नहीं माना जाता तथा न ही वे भगवान बुद्ध और तीर्थकर महावीर की श्रेणी में ही आते हैं। अंबेडकर तो महज एक ऐसे जागरण दूत का नाम है, जो शताब्दियों से दलित और पीड़ित जाति में जन्म लेकर भी संविधान निर्माताओं की पंगत में बैठ गया था। उनका तो एक ही दर्शनशास्त्र था कि मनुष्य को समाज में जीवन विकास के समान अवसर मिलने चाहिए तथा जाति, धर्म, लिंग अथवा रंग के आधार पर उन्हें छोटा-बड़ा नहीं समझा जाना चाहिए। अत: दुनिया के जितने भी लोकतंत्र हैं उन सबके संविधान निर्माताओं में अंबेडकर के समतावाद की परछाई अवश्य मिलेगी। लेकिन भ्रम और यथार्थ ही मनुष्य की सबसे बड़ी विडम्बना है। भारतीय संविधान भी इसीलिए आदर्श और वास्तविकता का एक ऐसा ही दस्तावेज है, जिसकी दुहाई तो सभी लोग देते हैं और जिसकी कसमें भी सभी लोग खाते हैं किंतु उसे एक सामाजिक तथा राष्ट्रीय व्यवहार में वे कभी नहीं बदलने देते। अधिकार और कर्तव्य की इसी मिलन भावना का दूसरा नाम आज भीमराव अंबेडकर भी कहलाता है। आप उन्हें जानते हैं क्या?

डॉ. अंबेडकर को पढ़े-लिखे 'शासक भावना' के लोग इसलिए जानते हैं कि उन्होंने छुआछूत मिटाने तथा जाति के आधार पर शोषण समाप्त करने का बिगुल उन लोगों के लिए बजाया था जो शताब्दियों से गूंगे-बहरे की तरह जीते रहे। मनुष्य, समाज, देश और धर्म की सबसे बड़ी कमजोरी उसके भीतरी अन्तर्विरोध ही होते हैं। जहां भी यह भीतरी भेद कम होंगे, वह समाज स्वस्थ और विकसित होगा। भीमराव अंबेडकर इसी सुधारवादी आंदोलन के नवीनतम संस्करण थे। जिनकी संपूर्ण प्रेरणा भारत के भक्ति आंदोलन में छिपी हुई थी।

भारतीय समाज शताब्दियों से चेतना और व्यवहार के स्तर पर विभाजित रहा है तथा इस खाई को पाटने के प्रयास में अब तक लाखों ऋषि-मुनि, पीर-पैगम्बर, गुरु-ज्ञानी और पूर्वावतार समय की धारा में समा चुके हैं। बल्कि जैसे-जैसे विभाजन की यह नदी आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे हमारे सभी वेद-पुराण एक संकीर्ण प्रकाशवाद के पर्याय मान लिए जाते हैं। जबकि वस्तुगत सत्य यह है कि हमारा समाज मूलत: समता और सहिष्णुता का पर्याय रहा है तथा मनुष्य को ही केंद्रीय शक्ति मानकर सभी तरह की रचनाओं की सृष्टि की गई है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि अब ज्ञान और धर्म की नींव में से मनुष्य का स्थान निकालकर फेंक दिया गया है तथा मनुष्य का स्थान अब साधन और भौतिक शक्तियों ने ले लिया है। कुछ लोग भीमराव अंबेडकर को सचिवालय, विधानसभा और न्यायालय में ढूंढ रहे हैं। यह एक ऐसी तलाश है जो रंक को राजा में तथा शूद्र को सवर्ण में बदल देती है। आजादी के बाद जिस तरह आजादी के शहीदों को भुला दिया गया उसी तरह संविधान बनने के बाद भीमराव अंबेडकर को भी सबसे पहले तिरस्कृत किया गया। क्या कोई बता सकता है कि अंबेडकर केवल दलितों (अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ी जाति) के अगुवा ही क्यों माने जाते हैं? उनका जन्मदिन और पुण्यतिथि समाज की सभी जातियां मिलकर क्यों नहीं मानतीं? जब कुछ पुरातनपंथी मिलकर एक मनु को देश का अंतिम संविधान निर्माता क्यों नहीं मान सकते। यही एक सोच का अंतर है, जो हमारे समाज की विभाजन रेखा है तथा यह रेखा इतनी धारदार है कि इसने हमारे संस्कार, विचार, व्यवहार तथा सरकार को गहरे तक काट रखा है।

भीमराव अंबेडकर को उसी तरह याद किया जाना चाहिए, जैसे संत कबीर, तुकाराम, गौतम बुद्ध और महावीर को याद किया जाता है। क्योंकि हमारे समाज की चादर में हजारों साल से जो सलवटें पड़ी हुई हैं उन पर अंबेडकर की आत्मा के निशान हैं। अंबेडकर तो एक विचार और भावना का नाम है, जो मनुष्य के जन्म से उसके साथ जुड़ी हुई है। सरकार द्वारा अंबेडकर की याद में किसी एक दिन छुट्टी करना तो इसलिए भी महत्व नहीं रखता कि जब-जब किसी महान आत्मा के नाम पर राजकीय अवकाश हुआ है तब-तब दिन उसको भुलाने का समय साबित हुआ है तथा एक पुण्य स्मरण भी मौजमस्ती में बदल गया है। जब लोग अपने पूर्वजों का श्राद्ध भी भय और आशीर्वाद के लिए करते हैं तो फिर सामाजिक नायकों का स्मरण करना उनकी कोई मजबूरी नहीं हो सकता। हम खुद अपनी सुविधा के लिए महानता को भी एक मजाक बना देते हैं।

भीमराव अंबेडकर तो एक ऐसा विषय है, जिसे पढ़ और सुनकर भी नहीं समझा जा सकता। इसके लिए तो आचरण और आस्था की प्रयोगशाला में जाना पड़ेगा। जो लोग बात-बात में राजकीय सेवा नियमों की तलवारें चलाते हैं, सर्वधर्म समभाव को इतिहास का ढोंग बताते हैं और समतावाद को भाग्य तथा नियति के तराजू में बांटते हैं उन्हें भला अंबेडकर और आदमी से क्या लेना-देना। जिस तरह जनता पहले शासन को बनाती है किंतु वही शासन फिर बदले में उसे ही चलाता है तो ठीक उसी तरह आस्था और विश्वास भी पहले किसी मूर्ति को गढ़ते हैं तथा फिर वही मूर्ति अपने चारों तरह उसी मनुष्य से लगातार परिक्रमा भी लगवाती है। भीमराव अंबेडकर इन सारी दुविधाओं से मुक्त होकर ही हमारे लिए सहायक हो सकते हैं तथा यह साकार और निराकार की माया सभी देवताओं, महान आत्माओं तथा युग पुरुषों पर एक ही समान तरह से लागू होती है।

With Best Compliments

नीलकण्ठ

फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर सेन्टर

डॉ. आशिष सूद

सलाहकार इंटेंसिविस्ट और एनेस्थेटिस्ट

टॉल फ्री नं. : 1800 30020 190
वर्तमान / पूर्व रोगी : +91-97846.00614
अपोईन्टमेन्ट : 0294-6530105, 2442595

Neelkanthfertility@gmail.com
www.Neelkanthivfcentre.com

10-11, स्वामी नगर, डॉक्टर्स लेन, RSEB ऑफिस के पास,
सेलिब्रेशन मॉल के पीछे, भुवाणा, उदयपुर (राज.)

http://www.facebook.com/NeelkanthfertilityHosital
https://www.youtube.com/UCOin3codfuZjYyPWTVAob8w

उदयपुर ने दिया देश को 'कौमी एकता' का संदेश

राज्य सरकार के शांति एवं अहिंसा विभाग की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय कौमी एकता कार्यक्रम 9-10 मार्च को उदयपुर में सम्पन्न हुआ। जिसमें देशभर से गांधी विचारक एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति व संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ऑल इंडिया पीरा मिशन के अध्यक्ष तथा हमारी पंजाबी बिरादरी में कौमी एकता के प्रमुख अध्यक्ष दया सिंह, कश्मीर से कौमी एकता की प्रमुख आवाज एसपी वर्मा, गांधी ग्लोबल फैमिली के प्रमुख एसपी वर्मा, शहीदे आजम भगत सिंह के भांजे प्रो. जगमोहन सिंह, नागरिकता आंदोलन से जुड़े प्राध्यापक आरिश खुदाई खिदमतगार, आरिश मोहम्मद फैजान, गोरखपुर से सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन प्रमुख विजय सिन्हा, गांधी विचारक माइकल मार्टिन गुजरात, फैजल खान खिदमतगार, अब्दुल हमीद कश्मीर, कलानंद मणि गोवा, उदयपुर जिला गांधी दर्शन समिति के संयोजक पंकज शर्मा, सह संयोजक सुधीर जोशी सहित अन्य गांधीवादी विचारकों ने देश में कौमी एकता को बढ़ावा देने को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। उद्घाटन सत्र में बतौर अतिथि शहीद भगत सिंह के भांजे जगमोहन सिंह, गांधी विचारक कुमार प्रशांत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, राज्य मंत्री शंकर यादव, शांति एवं अहिंसा विभाग के निदेशक मनीष शर्मा, जिला कलक्टर तारा चंद मीणा, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, उपस्थित थे। जिला कलक्टर तारा चंद मीणा को नवाचारों एवं उत्कृष्ट कार्यों के लिए महात्मा गांधी सेवा सम्मान से नवाजा गया। शांति एवं अहिंसा विभाग के निदेशक मनीष शर्मा ने कहा कि राजस्थान देश का पहला राज्य है, जहां शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना की गई है। गांधी दर्शन को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए मुख्यमंत्री के इस निर्णय की जितनी सराहना की जाए, कम है। गांधी विचारक कुमार प्रशांत ने कहा कि जिस उद्देश्य से इस विभाग की स्थापना हुई है उन्हें पूरा करने के लिए सबको एकजुट और सक्रिय रहना होगा। उन ताकतों के खिलाफ लड़ना होगा जो साम्प्रदायिक सौहार्द खराब करने का प्रयास करती हैं। डॉ. गिरिजा व्यास ने कहा कि सभी मज़हब के लोगों के बीच प्रेम नहीं रहेगा तो ना देश का विकास होगा और न ही समाज का। उन्होंने कहा कि हमें मोहब्बत का ऐसा समां बांधने की जरूरत है जिसकी खुशबू पूरे विश्व तक पहुंचे। डॉ. व्यास का भी सेमिनार में अभिनंदन किया गया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

दो दिवसीय राष्ट्रीय कौमी एकता कार्यक्रम के दौरान सर्वधर्म प्रार्थना सभा के साथ अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गई। भूपेन्द्र पवांर एवं साथियों द्वारा भजन, इकबाल हुसैन इकबाल की कौमी एकता पर गज़लें, लईक हुसैन द्वारा 'हम मज़हब' नाट्य प्रस्तुति, रंग पृष्ठ संस्था के कलाकारों द्वारा कथक शैली में राम स्तुति एवं सूफी नृत्य की प्रस्तुतियां उल्लेखनीय रहीं।

अहिंसा मार्च से दिया एक जुटता का संदेश

प्रथम दिन सुबह चीरवा स्थित कार्यक्रम स्थल से फूलों की घाटी तक अहिंसा मार्च निकाला गया। इस अवसर पर प्रार्थना सभा में रामधुन के साथ महात्मा गांधी के प्रिय भजनों की संगीतमय प्रस्तुतियां दी गई।

प्रस्तुतिः डॉ. संदीप गर्ग

WITH BEST COMPLIMENTS

Mewar Boating

Fatehsagar

Mangal Bhawan, 8 Laxmi Marg, Amal Ka Kanta
Udaipur, Rajasthan (313001)

94 साल के इतिहास में पहली बार..

भारत की दो फिल्मों को ऑस्कर अवार्ड

नाटु-नाटु बेस्ट ओरिजनल साँग/ द एलिफेंट व्हिसपर्स बेस्ट डॉक्यूमेंट्री

विष्णु शर्मा हितैषी

भारतीय सिनेमा के इतिहास में वह ऐतिहासिक क्षण था, जब बहुचर्चित तेलुगू फिल्म आरआरआर' के अत्यन्त लोकप्रिय गीत 'नाटु-नाटु' (नाचो-नाचो) तथा हाथियों और उनकी देखरेख करने वालों पर केन्द्रित डाक्यूमेंट्री 'द एलीफेंट व्हिस्पर्स' को ऑस्कर पुरस्कार से नवाजा गया। भारत ने पहली बार एक साथ दो ऑस्कर अवार्ड जीत कर 2023 में इतिहास ही रच दिया। साथ ही यह साबित कर दिया कि हमारी फिल्में कथानक, तकनीक और प्रस्तुति के लिहाज से किसी हॉलीवुड फिल्म से कमतर नहीं है।

लॉस एंजेलिस स्थित डॉल्बी थिएटर में 13 मार्च की प्रात: आयोजित 95वें ऑस्कर्स अवार्ड्स में पहली बार दो भारतीय फिल्मों को ऑस्कर से नवाजा गया। पंद्रह अन्तरराष्ट्रीय अवार्ड जीत चुकी फिल्म 'आरआरआर' के नाटु-नाटु गीत को बेस्ट ओरिजनल कैटेगरी में और एलिफेंट व्हिस्पर्स को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म कैटेगरी में ऑस्कर से सम्मानित किया गया।

फिल्मों के लिए दिया जाने वाला सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार है- ऑस्कर। सन् 1929 में इसकी शुरूआत हुई। फिल्म क्षेत्र में दुनिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार की 94 साल पुरानी विरासत में भारतीय फिल्मों को पहली बार स्थान मिलना वाकई हमारे फिल्मकारों के साथ पूरे देश के लिए गौरव की बात है। इससे पहले भारतीय संदर्भों के साथ निर्मित 'स्लमडाग मिलियनेयर' 'गांधी' और 'लाइफ ऑफ पाई' जैसी फिल्मों को ऑस्कर में उल्लेखनीय उपलब्धियां मिली थीं। खासतौर पर 'स्लमडाग मिलियनेयर' में 'जय हो' गीत के लिए एआर रहमान को पुरस्कार मिला था, लेकिन ये फिल्में भारतीय निर्देशकों द्वारा निर्मित नहीं थीं। वास्तव में प्रयोगधर्मी फिल्मकार एसएस राजमौलि की फिल्म 'आरआरआर' के गीत नाटु-नाटु ने इसी साल प्रतिष्ठित गोल्डन ग्लोब अवार्ड जीतकर पहले ही अपनी धमक कायम कर ली थी। यों तो यह फिल्म 20वीं सदी की शुरूआत के समय के दो दक्षिण भारतीय क्रांतिकारियों अलूरि सीताराम राजू और कोमुरम भीम की काल्पनिक दोस्ती और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ उनके संघर्ष पर केंद्रित है, लेकिन इस फिल्म को चंद्रबोस द्वारा लिखित गीत और मशहूर संगीतकार एमएम कीरवानी के संगीत ने ऊंचाई प्रदान की। ऐसे समय जब, दुनिया रूस और यूक्रेन युद्ध से आहत है, यह फिल्म नाटु-नाटु गीत व नृत्य के माध्यम से एक बड़ा अंतर्निहित संदेश भी देती दिखती है, ऑरिजिनल सांग श्रेणी में ऑस्कर जीतने वाले नाटु-नाटु गीत को युद्ध से पूर्व यूक्रेन की राजधानी कीव में राष्ट्रपति भवन के सामने फिल्माया गया था।

नाटु-नाटु के नाम अन्य रिकार्ड

नाटु-नाटु गाने को 10 नवंबर 2021 को रिलीज किया गया था। रिलीज के महज 24 घंटों बाद ही इसके तमिल वर्जन को यूट्यूब पर 17 मिलियन व्यूज मिले थे। वहीं सभी 5 भाषाओं में इसके कुल व्यूज 35 मिलियन थे। ये सबसे पहले 1 मिलियन लाइक्स पूरे करने वाला तेलुगु गाना था। फिलहाल सिर्फ हिंदी वर्जन के यूट्यूब पर 265 मिलियन व्यूज और 2.5 मिलियन लाइक्स हैं।

गीत के 110 मूव्स

कोरियोग्राफर प्रेम रक्षित ने गाने के स्टेप तैयार किए हैं। फिल्म के डायरेक्टर एसएस राजमौलि को ऐसे स्टेप्स चाहिए थे, जो दो दोस्त एक लय में साथ कर सकें, लेकिन स्टेप्स इतने पेचीदा भी न हों कि दूसरे इसे कॉपी न कर सकें। कोरियोग्राफर ने इस गाने का हुक स्टेप करने के लिए 110 मूव्स बनाए थे। आरआरआर के साथ ऑस्कर जीतने वाली डाक्यूमेंट्री द एलीफेंट व्हिस्पर्स का निर्माण फिल्मकार कार्तिकी गोन्साल्वस और गुनीत मोंगा ने किया है, जो कि इत्तफाक से दक्षिणी राज्य तमिलनाडु की एक सैंचुरी में हुए हादसे में बिछड़ गए एक हाथी के बच्चे और उसे पालने वाले एक परिवार पर केंद्रित है, यह फिल्म वन्यजीव और मनुष्य के बीच एक सहज रिश्ते और साहचर्य की तलाश करती दिखाई देती है। 39 मिनट की इस शार्ट डॉक्यूमेन्ट्री को फिल्माने में चार वर्ष से भी अधिक का समय लगा।

मनुष्य और जानवरों की बॉन्डिंग

'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' एक भारतीय-अमेरिकी लघु वृत्तचित्र है, जो बोम्मन और बेली नामक एक भारतीय दंपत्ति की कहानी है, जिन्हें रघु नामक एक अनाथ हाथी का बच्चा मिलता है। वे इस नाजुक, घायल हाथी के बच्चे को जीवित रखने और उसे स्वस्थ रूप से युवा बनाने के लिए बहुत परेशानियों का सामना करते हैं। उनके और हाथी के बीच एक मजबूत बंधन विकसित होता है। तमिलनाडु के मुदुमलाई राष्ट्रीय उद्यान में स्थापित सेट में इसकी प्राकृतिक सुंदरता पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें जनजातियों के जीवन का प्रकृति के साथ सद्भाव भी उजागर किया गया है। यों एकेडेमिक पुरस्कारों के मामलें में भारतीय सिनेमा के पास अब तक कुछ गिनी-चुनी उपलब्धियों ही हैं, लेकिन यह कहने की जरूरत नहीं कि इन दोनों फिल्मों को ऑस्कर में मिली कामयाबी वैश्विक सिनेमा में भारतीय सिनेमा की बढ़ती स्वीकारोक्ति को ही दिखा रही है, जिससे आने वाले समय में हमें भारतीय फिल्मों में और नए प्रयोग देखने को मिल सकते हैं।

आधी जिंदगी जंगलों में बीती

'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' की डायरेक्टर कार्तिकी गोंजाल्विस की आधी जिंदगी जंगल में बीती है। उन्होंने बताया कि 18 महीने की उम्र में मेरा जंगलों में आना जाना लगा रहा है। मेरा बचपन घुड़सवारी करते नदियों के किनारे बीता है। मेरी मां भी नेचुरल हिस्ट्री और कल्चरल फोटोग्राफी में रही हैं। मेरी दादी नेचुरल रिजर्वस में रही हैं, और उस बारे में पढ़ाती भी रही हैं। तो मुझे काफी छोटी उम्र में ही एनिमल बिहेवियर के बारे में काफी जानकारी मिल गई थीं। मैं एनिमल प्लेनेट और डिस्कवरी चैनल के शो के लिए कैमराविमेन भी रही हूं। मेरा ज्यादातर वक्त उजाड़ जगहों में बीतता है।

गुनीत को दूसरा अवार्ड: दिल्ली में जन्मीं गुनीत मोंगा 'द एलिफेंट विस्पर्स' की निर्माता हैं। उन्होंने डॉक्यूमेंटरी श्रेणी में दूसरी बार ऑस्कर अवॉर्ड जीता है। वह 2019 में अमरीकी डॉक्यूमेंटरी 'पिरियडः एंड ऑफ सेंटेंस' के लिए भी यह अवार्ड जीत चुकी हैं।

***असाधारण** नाटु-नाटु की लोकप्रियता वैश्विक है। यह एक ऐसा गीत होगा जिसे आने वाले कई वर्षों तक याद रखा जाएगा। पूरी टीम को बधाई। भारत खुश और गौरवान्वित है। कार्तिकी गोंजाल्विस और 'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' की पूरी टीम को भी सम्मान के लिए बधाई।* **– नरेन्द्र मोदी,** *प्रधानमंत्री*

भारतीय सिनेमा के लिए ऐतिहासिक दिन। नाटु-नाटु गाने और द एलिफेंट व्हिस्पर्स की टीम को बधाई।

– अमित शाह, *केंद्रीय गृह मंत्री*

आरआरआर के गीत को ऑस्कर जीतने पर फिल्म की पूरी टीम को बधाई। यह भारतीय फिल्म के लिए अभूतपूर्व क्षण है।

– अनुराग ठाकुर, *सूचना प्रसारण मंत्री*

नाटु-नाटु के गीतकार- संगीतकार और वृत्तचित्र को बनाने वाली दो महिलाओं ने पूरे भारत को गौरवान्वित किया है।

– राहुल गांधी, *पूर्व अध्यक्ष, कांग्रेस*

कीरवानी, राजामौली और कार्तिकी को प्रतिष्ठित ऑस्कर पुरस्कार पाने के लिए हार्दिक बधाई। सलाम करता हूं।

– रजनीकांत, *अभिनेता*

विभूतियों को वैश्य गौरव सम्मान

उदयपुर। जिला स्तरीय वैश्य महासम्मेलन और वैश्य गौरव सम्मान समारोह में प्रबंधन, चिकित्सा, राजनीति, समाजसेवी के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाली विभूतियों को वैश्य गौरव सम्मान से नवाजा गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की सफलता में सर्व समाज के साथ वैश्य समाज का अहम योगदान है। वैश्य महासम्मेलन संरक्षक के के गुप्ता बंजर जमीन में भी सोना उगा सकते हैं। संरक्षक गुप्ता ने कहा कि वैश्य समाज हर कदम पर सर्व समाज की सहायता के लिए तत्पर है। आयोजन में विशिष्ट अतिथि गीतांजली ग्रुप चेयरमैन जेपी अग्रवाल, सकल दिगम्बर जैन समाज अध्यक्ष शांतिलाल वेलावत व नारायण सेवा संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल थे।

इन्हें मिला सम्मान- गीतांजली समूह चेयरमैन जेपी अग्रवाल, चिकित्सा क्षेत्र से डॉ. अमित खंडेलवाल, डॉ. आनंद गुप्ता, शिक्षाविद डॉ. बीएल बाहेती, समाजसेवी सुरेश विजयवर्गीय, पर्यावरण प्रेमी मुकेश मंडोलिया, पिंकी सुनीता माण्डवत, कांतिलाल जैन, प्रकाश कोठारी को वैश्य गौरव सम्मान दिया गया।

वया बने कबड्डी संघ के अध्यक्ष

उदयपुर। जिला कबड्डी संघ कार्यकारिणी की बैठक में समाजसेवी नाना लाल वया को सर्वसम्मति से जिला कबड्डी संघ का अध्यक्ष चुना गया। बैठक में सचिव जालमचंद जैन, जिला तलवारबाजी संघ के सचिव बलवीर सिंह दिगपाल, राजस्थान राज्य पॉवर लिफ्टिंग संघ सचिव विनोद साहू, कोच कपिल जैन, कोषाध्यक्ष श्यामसुंदर शर्मा, सह सचिव दिपेश चन्द्र डामोर, उपाध्यक्ष मुंशी, मोहम्मद सहित कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित थे।

चौहान 'भारत भूषण' पुरस्कार से सम्मानित

पुणे। ग्लोबल स्कॉलर्स फाउण्डेशन, पुणे की ओर से आयोजित भारत भूषण पुरस्कार कार्यक्रम में उदयपुर के विजय सिंह चौहान को सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार चौहान द्वारा हिन्दी आशुलिपी विषय पर लिखी गई 11 पुस्तकों के लिए बेस्ट राइटर ऑफ हिन्दी आशुलिपी बुक्स के लिए दिया गया है। चौहान तारा संस्थान में मीडिया निदेशक हैं।

डॉ. छापरवाल वीसी नियुक्त

उदयपुर। फिजिशियन डॉ. जेके छापरवाल को साईं तिरूपति यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर नियुक्त किया गया है। डॉ. छापरवाल को चिकित्सा एवं चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में दी गई उनकी दीर्घकालिक गुणवत्तापूर्ण सेवाओं को देखते हुए युनिवर्सिटी के आशीष अग्रवाल ने उन्हें नियुक्ति पत्र सौंपा और बधाई दी।

होण्डा एक्टिवा 'एच-स्मार्ट' की लॉचिंग

उदयपुर। पिछले दिनों होण्डा एक्टिवा का नया मॉडल 'एच-स्मार्ट' होण्डा मोटर साइकिल एवं स्कूटर्स इंडिया प्रा.लि. के मुख्य डीलर लेकसिटी होण्डा तथा फतेहपुरा स्थित दक्ष होण्डा के निदेशक वरूण मुर्डिया ने अपने यहां इसकी लांचिंग करते हुए बताया कि स्कूटर 6 आकर्षक रंगो में उपलब्ध है। इस मौके पर 4 ग्राहकों को डिलीवरी भी दी गई। दक्ष होण्डा रूप पर एच-स्मार्ट की लांचिंग जिला परिवहन अधिकारी कल्पना शर्मा ने स्कूटर के अनावरण के साथ की। इस मौके पर दक्ष होण्डा के एमडी विकास श्रीमाली, एचएमएमआई के जोनल मैनेजर (सेल्स) अजीत कुमार व एरिया मैनेजर राजशेखर शर्मा भी मौजूद थे। यह पहला स्कूटर है जो स्मार्ट चाबी के साथ है। मुख्य डीलर रतनदीप होण्डा पर भी इसकी धमाकेदार लॉचिंग हुई। मुख्य अतिथि पार्षद विद्या भावसार थी। रतनदीप होण्डा के मुख्य निदेशक विक्रम सिंह ने अतिथियों व ग्राहकों का स्वागत किया।

हाई-टेक 110 सीसी स्कूटर- जूम लॉन्च

उदयपुर। हीरो मोटोकॉर्प ने नया 110 सीसी स्कूटर- जूम को सेलिब्रेशन मॉल में आयोजित एक समारोह में लॉन्च किया। हीरो मोटोकॉर्प में चीफ ग्रोथ ऑफिसर (सीजीओ) रंजीवजीत सिंह ने बताया कि जूम में शक्तिशाली बीएस-6 अनुकूल इंजन दिया गया है। यह स्कूटर तीन वैरिएंट्स- शीट ड्रम, कास्ट ड्रम और कास्ट डिस्क में आता है। इस अवसर पर आरटीओ प्रभुलाल बामनिया, कंपनी के पदाधिकारी एरिया सेल्स मेनेजर भाविक सरीन, क्षेत्रीय प्रबन्धक हरीश गर्ग एवं सुबोध अवस्थी, चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर डॉ. अरूण जौरा, शब्बीर के. मुस्तफा, हुसैन के मुस्तफा, सपताल सिंह मौजूद थे।

डॉ. माथुर आरएनटी के नए प्राचार्य

उदयपुर। प्रदेश सरकार ने डॉ. लाखन पोसवाल का प्राचार्य पद का कार्यकाल समाप्त होने पर गत दिनों गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट डॉ. विपिन माथुर को रवींद्रनाथ टैगार (आरएनटी) मेडिकल कॉलेज का नया प्रिंसिपल नियुक्त किया है। डॉ. माथुर ने पदभार संभाल लिया है। अजमेर मेडिकल कॉलेज में डॉ. वीर बहादुर सिंह एवं कोटा में डॉ. संगीता सक्सेना ने प्राचार्य पद की जिम्मेदारी संभाली।

With Best Compliments

Mahesh Chandra Sharma
Director

Lakecity Buildtech Pvt. Ltd.

Office : 3rd Floor, 2-B, Hazareshwar Colony, Court Road, Udaipur-313 001
Residence : "Kaustubh", 1A, Navratna-Modern Link Road, Udaipur-313 001
(M) +91 9829040569 (O) +91 294- 2413003 (R) +91 294 2980030
E-mail : mcsharma.lakecitybuildtech@gmail.com

सिख धर्म के पांचवें गुरु अर्जुनदेव

धर्म प्रचार के साथ सामाजिक कुरीतियों का किया प्रतिकार

अमरजीत सिंह

सिख धर्म के पांचवे गुरु श्री गुरू अर्जुन देव साहिब सर्वधर्म समभाव के प्रखर पैरोकार होने के साथ-साथ मानवीय आदर्शों को कायम रखने के लिए आत्म बलिदान करने वाले एक महान आत्मा थे। उनका जन्म सिख धर्म के चौथे गुरु, गुरु रामदासजी व माता भानीजी के घर 15 अप्रेल 1563 को गोइंदवाल (अमृतसर) में हुआ। गुरु अर्जुनदेवजी की निर्मल प्रवृत्ति, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठता तथा धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए गुरु रामदासजी ने 1581 में पांचवें गुरु के रूप में उन्हें गुरु गद्दी पर सुशोभित किया।

इस दौरान उन्होंने गुरुग्रंथ साहिब का संपादन किया, जो मानव जाति को उनकी सबसे बड़ी देन है। संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी को जगह-जगह से एकत्र कर उसे धार्मिक ग्रंथ का स्वरूप दिया। गुरुजी ने स्वयं उच्चारित 30 रागों में 2218 शबदों को भी श्री गुरुग्रंथ साहिब में दर्ज किया है। एक समय की बात है उन दिनों बाला और कृष्णा पंडित कथा करके लोगों को खुश किया करते थे और सबके मन को शांति प्रदान करते थे। एक दिन वे गुरु अर्जुन देव जी के दरबार में उपस्थित हुए और प्रार्थना करने लगे-महाराज...! हमारे मन में शांति नहीं है। आप ऐसा कोई उपाय बताएं, जिससे हमें शांति प्राप्त होगी? तब गुरु अर्जन देवजी ने कहा अगर आप मन की शांति चाहते हो तो आप लोगों को देते हो आप स्वयं भी उनका अनुसरण करो, अपनी कथनी व करनी में भेद न रखो। परमात्मा को संग जानकर उसे सदा याद रखो। अगर आप सिर्फ स्वार्थवश कथा करोगे तो आपके मन को शांति कदापि प्राप्त नहीं होगी। बल्कि इसके विपरीत आपके मन का लालच बढ़ता जाएगा और पहले से भी ज्यादा दुखी हो जाओगे। अपने कथा करने के तरीके में बदलाव कर निष्काम भाव से कथा करो, तभी तुम्हारे मन में सच्ची शांति महसूस होगी। इस तरह पवित्र वचनों से दुनिया को उपदेश देने वाले गुरुजी का मात्र 43 वर्ष का जीवनकाल अत्यंत प्रेरणादायी रहा। वे आध्यात्मिक चिंतक और उपदेशक के साथ ही समाज सुधारक भी थे। अपने जीवन काल में गुरुजी ने धर्म के नाम पर आडंबरों और अंधविश्वास पर कड़ा प्रहार किया। सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी वे डटकर खड़े रहे। गुरु अर्जुन देव जी ने तेरा किया मीठा लागे। हरि नाम पदारथ नानक मांगें शबद का उच्चारण करते हुए सन 1606 में अमर शहीदी प्राप्त की। आध्यात्मिक जगत में गुरुजी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

मां सीता से ही है श्रीराम की पूर्णता

भारतीय संस्कृति में आदिशक्ति के रूप में नारी की उपासना की गई है। नारीत्व में देवत्व के दर्शन करने की महान परम्परा केवल भारत में ही है। जीवन का पाथेय अगर भगवान श्री राम हैं, तो उन तक पहुंचने का पथ केवल माता सीता हैं। जानकी जयंती (29 अप्रेल) पर दो विशिष्ट आलेख।

स्वामी चक्रपाणि

नारी जाति का गौरव सीताजी हिंदू समाज के लिए पूजनीय रही हैं। वे वैशाख शुक्ल नवमी को प्रकट हुई थीं। यह एक ईश्वरीय संयोग है कि श्रीराम का जन्म भी नवमी को ही हुआ था, इसी तरह सीताजी का जन्म भी नवमी को ही हुआ था। श्रीराम की पूर्णता सीताजी से ही होती है, इसलिए जन्म की तिथि भी एक ही है। श्रीकृष्ण की पूर्णता राधा जी से होती है। इस नाते श्रीकृष्ण की जन्मतिथि अष्टमी के दिन ही राधाजी का भी जन्म हुआ। ईश्वरीय ऊर्जा और शक्ति के केन्द्र के रूप में सीता-राम और राधा-कृष्ण एकाकार हो जाते हैं। उनमें कोई विभेद नहीं हैं। श्रीराम एक वैचारिक प्रेरणा हैं, सीताजी उसे प्रकट करने का माध्यम हैं। इस दृष्टि से सीताजी का महत्व अधिक हो जाता है। राजा जनक ने संतान प्राप्ति की कामना से यज्ञ भूमि को तैयार करने के लिए भूमि को जोता था। हल की नोक एक पात्र से टकराई और उसमें से सीताजी प्रकट हुईं। हल की नोक को सीता कहा जाता है, इसलिए उनका यही नामकरण कर दिया गया। उस दिन वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी थी। राजा जनक कन्या को अपने महल में ले गए और पुत्री प्राप्त होने की प्रसन्नता में विशाल यज्ञ करवाया और प्रजा में दान किया। एक कथानुसार राजा जनक ने इस दिन यह संकल्प लिया कि उनके राज्य में कोई भी निर्धन नहीं होगा। अत: राजकोष से प्रत्येक व्यक्ति को सभी आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराईं। यदि संभव हो तो इस दिन जानकी स्रोत का पाठ करना चाहिए। अगर यह संभव नहीं तो मानसिक रूप से ईश्वर का ध्यान करें और माता सीता से अपने और सबके कल्याण की कामना करें। माता को भक्तिभाव अर्पित करते हुए आग्रह करें, 'जिसने रावण का विनाश किया, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुई, जो श्रीराम की शक्ति हैं, ऐसी शील संपन्ना माता मिथिलेश कुमारी हमारी और सबकी रक्षा करें' अंत में श्रीराम का स्मरण करें। राम-नाम का जाप करेंगे तो शुभ रहेगा। मन में जो भाव हों, वे मानसिक रूप से ईश्वर और माता सीता से कहें, कार्य सिद्ध अवश्य होगा। सीता नवमी व्रत का समापन दशमी को ही होता है। इस दौरान एक समय भोजन करें और निर्धनों को दान दें। क्रोध, हिंसा और निंदा से दूर रहें। माता सीता चमत्कारिक रूप से आपका कल्याण करेंगी।

चरित्र, मर्यादा की शाश्वत शक्ति

माता सीता के चरणों की वंदना करते हुए मानस में कहा गया है– सती सिरोमनि सिय गुनगाथा। सोइ गुन अमल अनुपम पाथा। रामकथा की जो गंगा बह रही है, उसकी निर्मलता सीता के अनुपम गुणों के कारण है। माता के जगत जननी रूप को केवल गहरे ध्यान में ही समझा जा सकता है। प्रभु के चरित्र की मर्यादा को माता सीता की शाश्वत शक्ति के कारण ही स्थायी भाव मिला। अपने जन्म के साथ ही माता जानकी की जीवनयात्रा दो हिस्सों में बंट गई। वह सदैव ऋत (धर्म, विवेक, प्रज्ञा) और सत्य के दो किनारों पर चलती रहीं। उन्होंने मातृत्व भाव को संजोये रखा। वे धरती माता का हिस्सा थीं, जिसके कारण उनमें ठोस यथार्थ के गुणों का वास रहा। दूसरी और राजर्षि जनक रूपी आकाश के कारण उनका चित्त सदैव ऊर्ध्वगामी रहा। लोक की चिंता के साथ ही प्रज्ञा के शिखर की यात्रा केवल जनक नंदिनी के लिए ही संभव था। वह सदैव ही कर्म और धर्म के संतुलन के लिए सहयोग करती रहीं, जिसके कारण ही राम ने जीवन में नायक की मर्यादा निभाई और ईश्वरीय सत्व को स्वयं के माध्यम से उद्घाटित किया। रामविहीन होकर सीता के लिए जीना कठिन था, तो सीताविहिन राम की कल्पना भी संभव नहीं। सीता रूपी आधार के धरती में समाते ही श्रीराम ने सरयू में समाधि लेकर उनके ही मार्ग का अनुसरण किया। श्रीराम सदैव सत्कर्म पर रहें, इसके लिए आधार भूमि के रूप में माता सीता ने स्वयं को प्रस्तुत किया। उनके जीवन में योग और भोग, सुख और दुख दोनों का खेल से ज्यादा महत्व नहीं रहा। वे हर स्थिति में एकरस रहीं। वह जगत जननी हैं। सबका कल्याण ही उनके स्वभाव का अविभाज्य भाव है। माता का आचरण त्याग का आचरण है। वह सदैव दूसरे के लिए विसर्जित होने को तत्पर हैं। राम के साथ सीता का वन में जाना परमार्थ कार्य था।

राम पूर्णता को प्राप्त करें, इसलिए सीताजी ने उनसे बिछुड़कर देह के मोह का त्याग किया। एकांतवासी रहीं। वनगमन के समय जब लक्ष्मण को संदेह हुआ तो उन्होंने पूछा क्या आपको लगता है कि राम ने आपको त्याग दिया है। वह कहती हैं नहीं वे ऐसा कर ही नहीं सकते। देवत्व से परिपूर्ण चेतना किसी का त्याग नहीं करती और मैं तो विदेहधारी हूं। कोई मेरा त्याग कर भी नहीं सकता।

–मयंक मुरारी

दुःख स्मरण का दिनः गुड फ्रायडे

किरण डेविड

गुड फ्रायडे यानी शुभ शुक्रवार। मसीही समाज में यह एक महत्वपूर्ण दिन है। तत्कालीन समाज में लोगों के इतने पाप बढ़ गए थे कि उनसे छुटकारा मनुष्यों के लिए संभव नहीं था। पापों से छुटकारे के लिए प्रभु यीशु मसीह ने अपना बलिदान क्रॉस पर चढ़कर दिया। जिससे संसार में पाप कम हों।

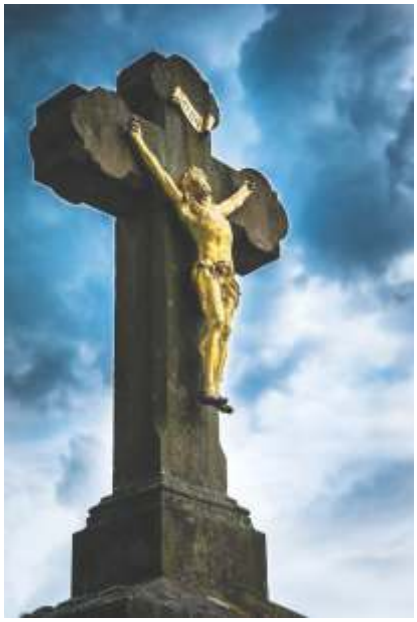

पूरे विश्व में गुड फ्रायडे की तैयारी में 40 दिन का शोक मनाया जाता है। जिसमें यीशु मसीह के करोड़ों अनुयायी निराहार उपवास करते हैं। यीशु मसीह के दुःखों को स्मरण करके घर-घर में प्रार्थना , बाइबल पठन, संगीत व प्रवचन से लोगों को अपने पापों से शुद्धिकरण, पश्चाताप करने, अपने गुनाहों की माफी के लिए तैयार करते हैं। ताकि सबका उद्धार हो। गुड फ्रायडे के पहले गुरूवार को पवित्र भोज विधि, जो प्रभु यीशु मसीह ने मृत्यु से पूर्व अपने शिष्यों के साथ लिया था, लिया जाता है। यह दिन प्रभु भोज के नाम से जाना जाता है। मसीह समाज के सभी लोग इस पवित्र दिन चर्च में एकत्रित होकर दाखरस व रोटी लेते हैं। इसके पश्चात विश्व में बड़ी भक्ति से दुःख भोग सप्ताह मनाया जाता है। इससे प्रभु यीशु के दुःख व मृत्यु पुनरूत्थान का स्मरण कर चर्चों में विशेष प्रवचन आराधना के रूप में आयोजित किया जाता है। प्रभु यीशु संपूर्ण मानव जाति के लिए प्रेम और क्षमा के उपदेशक के साथ अविस्मरणीय उदाहरण बन गए जिसकी बराबरी कोई आज तक न कर सका है और न कर सकेगा। उन्हें लहूलुहान व जख्मी दशा में सिर पर काँटों का ताज व हाथ-पैर में कीले ठोंकी गई। इस असहनीय पीड़ा को सहते हुए ना सिर्फ कलवरी के क्रॉस पर अपने सताने वालों के लिए परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना की, वरन संपूर्ण मानव जाति के लिए जो शैतान के बंधन से जकड़े हुए थे, प्रार्थना कर उद्धार का द्वार खोला। प्रभु यीशु ने क्रॉस पर अपने प्राण देकर गुनाहों का बोझ उठा लिया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रभु यीशु पर विश्वास श्रद्धा रखें। सभी को क्षमा करें और उस पवित्र लहू के बहाए जाने के द्वारा जो छुटकारा हमें दिया गया है उसे स्मरण कर नम्रता पूर्वक एक-दूसरे से प्रेम रखें, मानवता की सेवा करें, एक-दूसरे का आदर करें अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करें, आशीष माँगें, एक-दूसरे की भलाई करें, सदा प्रभु की सेवा उत्साह से करें। जब यीशु को क्रॉस पर चढ़ाया गया, तब यीशु ने कहा कि हे! पिता इन्हें क्षमा करो, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं (लुका 23-24) और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। हम उनके बताए आदेशों का अनुसरण कर जीवन को धन्य करें।

पाठक पीठ

राजस्थान दिवस (30 मार्च) के परिप्रेक्ष्य में मार्च-23 के प्रत्यूष में प्रवीणचन्द्र छाबड़ा का आलेख भूली-बिसरी यादों को ताजा करने के साथ ही राजस्थान के गठन संबंधी महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक जानकारियां देने वाला था।

महेश चन्द्र शर्मा,
सीएमडी, लेकसिटी बिल्डटेक

वित्त वर्ष 2023-24 के केन्द्रीय बजट से संबंधित अमित शर्मा का विश्लेषणात्मक आलेख अच्छा लगा। देखना यह है कि यह आम जनता के दैनन्दिन जीवन को सुखी, सरल व सकारात्मक बनाने व देश के चहुंमुखी विकास में किस हद तक सहायक बनेगा।

नारायण कुमावत,
उद्यमी

'भारत की दमदार दस्तक, परेशान है ड्रेगन' ओमपाल का आलेख केन्द्र सरकार की उत्तरी सीमाओं की रक्षा को लेकर तैयारियों पर प्रकाश डालता है। हमारे दोनों पड़ोसी अविश्वसनीय हैं, इस लिए राष्ट्र की सुरक्षा के मामले में हमें ज्यादा और हरदम तैयार रहना ही होगा।

विनोद कुशवाहा,
प्रशासनिक अधिकारी, गणपति इन्फ्रा

'घाटी में हरी होती आतंक की जड़ें' सम्पादकीय मैं समझता हूं हर देशवासी की अभिव्यक्ति है। जम्मू कश्मीर में लोकतांत्रिक प्रक्रिया जितनी जल्दी शुरू हो, अच्छा होगा। इसके पहले आतंकवादियों की कमर इस तरह से तोड़ना जरूरी है कि वे फिर से उठ ही न पाएं।

विजय कृष्ण दशोरा,
मत्स्य विपणन अधिकारी

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

अन्याय के विरूद्ध शस्त्र उठाने वाले अद्भुत नायकः परशुराम

पूनम नेगी

भगवान परशुराम मूलतः अतीत में एक लंबे समय तक चलने वाले देश के आंतरिक युद्ध के ऐसे महानायक माने जाते हैं, जिन्होंने शस्त्र और शास्त्र दोनों के माध्यम से राष्ट्र व जन विरोधी शक्तियों का विनाश किया। सनातन धर्म की मान्यता है कि जब-जब धरती पर अधर्मियों का अत्याचार बढ़ता है, तब-तब ईश्वर दुष्टों का विनाश कर सुख शांति व धर्म की स्थापना के लिए अवतारी सत्ताओं को दुनिया में भेजते हैं। परशुराम जी ऐसी ही एक अवतारी विभूति थे। इन्हें श्रीहरि विष्णु का छठा आवेशावतार माना जाता है, जिन्होंने राजमद में चूर आतातायी शासकों के आतंक से धरतीवासियों को मुक्त करने के लिए धरा धाम पर अवतरण लिया था। पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान परशुराम का जन्म सतयुग और त्रेता के संधिकाल में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र में रात्रि के प्रथम प्रहर के प्रदोष काल में माता रेणुका तथा पिता जमदग्नि के ऋषि आश्रम में हुआ था। अपने विशिष्ट गुणों के कारण चिरंजीवी के वरदान से अलंकृत भगवान परशुराम भारत के पुरा इतिहास के ऐसे अप्रतिम साहसी व अद्भुत नायक हैं, जिनका वर्णन सतयुग के समापन से कलियुग के प्रारंभ तक पौराणिक वृतांतों में मिलता है। उनकी तेजस्विता और ओजस्विता के सामने कोई भी नहीं टिकता, न शास्त्रार्थ में और न ही अस्त्र-शस्त्र में। भले ही सीता स्वयंवर में धनुषभंग के दौरान लक्ष्मण से उनके संवाद को कतिपय लोग उनकी पराजय से जोड़ते हों, मगर ऐसा सोचना उनकी अज्ञानता ही कही जाएगी। वस्तुतः उस शिव धनुष के भंग के प्रति उनका आक्रोश अपने गुरु महादेव के प्रति अनन्य निष्ठा के कारण ही उपजा था। तभी तो श्रीराम उन्हें विनम्रतापूर्वक नमन करते हैं। वे अक्षय तृतीया को जन्मे, इसलिए उनकी शस्त्र शक्ति अक्षय थी और शास्त्र-संपदा भी। विश्वकर्मा जी के अभिमंत्रित दिव्य धनुषों की प्रत्यंचा चढ़ाने की सामर्थ्य केवल परशुराम जी में ही थी। उनका परशु अपरिमित शस्त्र-शक्ति का प्रतीक था जो उनको भगवान शिव ने शस्त्र विद्या की परीक्षा में सफल होने पर पारितोषिक रूप में प्रदान किया था। जहां राम मर्यादा व लोकनिष्ठा का पर्याय माने जाते हैं, वहीं परशुराम अनीति विमोचक शस्त्रधारी हैं। वे शक्ति - और ज्ञान के दिव्य पुंज हैं। ब्राह्मण कुल में जन्मे परशुरामजी के प्रथम गुरु महर्षि विश्वमित्र मूलतः क्षत्रिय ही थे जिन्होंने परशुरामजी को बाल्यकाल में शस्त्र चलाना सिखाया। भगवान परशुराम मूलतः अतीत में एक लंबे समय तक चलने वाले देश के आंतरिक युद्ध के ऐसे महानायक माने जाते हैं, जिन्होंने शास्त्र ज्ञान और पराक्रम दोनों के माध्यम से राष्ट्र व जनविरोधी अन्यायी शक्तियों का दमन किया था।

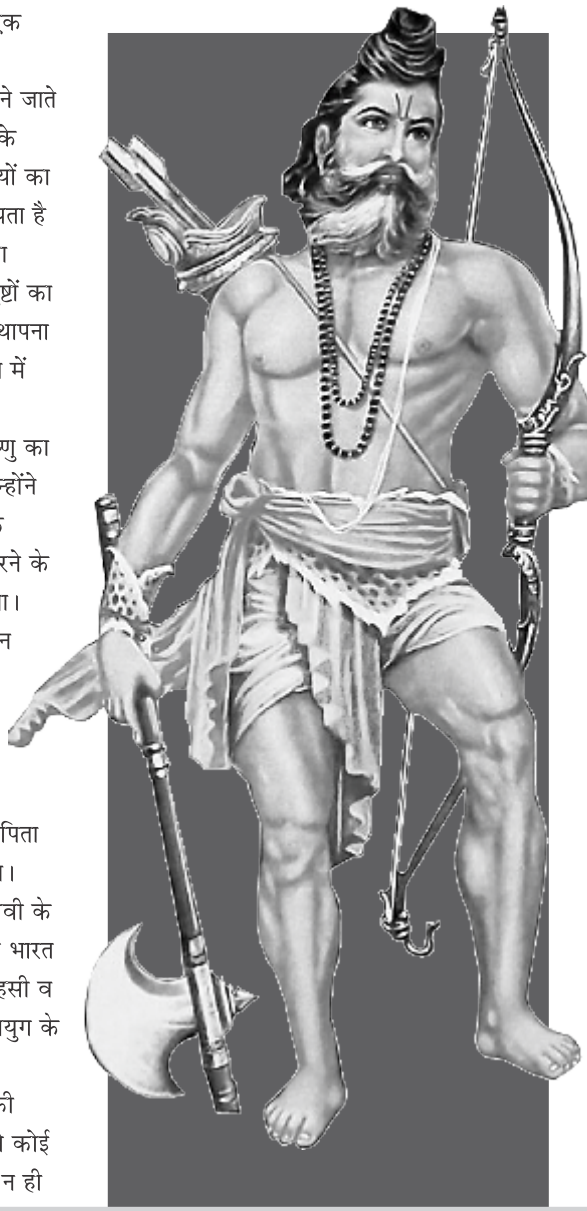

कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन से युद्ध

भगवान परशुराम की लोकप्रसिद्धि से जुड़ा सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसंग कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन से युद्ध का है। कहते हैं कि एक बार कार्तवीर्य अर्जुन ऋषि जमदग्नि के आश्रम में गए तो ऋषिवर ने गोमाता कामधेनु की कृपा से उनका विशेष सत्कार किया। कामधेनु की विशेषताएं देख कार्तवीर्य ललचा गए और गाय देने की मांग कर डाली। जमदग्नि के इनकार पर कार्तवीर्य ने क्रोध में आकर ऋषि का वध कर उनका समूचा आश्रम तहस नहस कर दिया और कामधेनु को जबरन साथ ले जाने लगे किन्तु कामधेनु उनके हाथ से छूटकर सीधे स्वर्ग चली गई और कार्तवीर्य को रीते हाथ लौटना पड़ा। जब परशुराम को पूरी बात पता चली तो उन्होंने धरती को आतातायी शासकों से मुक्त करने का संकल्प ले लिया। भगवान परशुराम का क्रोध अन्याय के खिलाफ था। उन्होंने समयानुकूल आचारण का जो आदर्श स्थापित किया वह युगों-युगों तक मानव मात्र को प्रेरणा देता रहेगा।

उदयपुर शिविर के संकल्प भूल गई कांग्रेस?

सनत जोशी

छत्तीसगढ़ के रायपुर में 24-26 फरवरी को आयोजित कांग्रेस के 85वें राष्ट्रीय अधिवेशन में कई संशोधनों को मंजूरी दी गई तो कुछ नए नियमों को प्रस्तावित किया गया। हालांकि, पार्टी उदयपुर के चिंतन शिविर में सामने आए कई बड़े संकल्पों से दूरी बना गई। यहां तक कि राहुल गांधी जिस प्रस्ताव पर भारत जोड़ो यात्रा में भी जोर देते रहे, उसे भी मंजूरी नहीं मिली। इस महाधिवेशन में पार्टी ने कार्यसमिति में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के लिए पचास प्रतिशत आरक्षण की गारंटी देने वाले संशोधन को पास किया, जबकि बहुप्रतीक्षित सुधारों को छोड़ दिया।

संविधान संशोधन समिति ने पिछले साल उदयपुर के नवसंकल्प शिविर में जिस बड़े नियम परिवर्तन की बात कही थी, उससे पार्टी ने किनारा ही नहीं किया बल्कि कांग्रेस के सबसे बड़े कदमों में से एक 'वन मैन-वन पोस्ट' का प्रस्ताव भी ठंडे बस्ते में डाल दिया। इस प्रस्ताव को पार्टी में बड़े बदलाव के रूप में माना गया था। यह प्रस्ताव कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की तरफ से दिया गया था और उन्होंने इस प्रस्ताव पर काफी जोर भी दिया था। राहुल ने केरल में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कहा था कि पार्टी 'एक व्यक्ति-एक पद' का पालन करेगी। उदयपुर में हमने जो तय किया था (एक व्यक्ति, एक पद) वो कांग्रेस की प्रतिबद्धता है और मुझे उम्मीद है कि प्रतिबद्धता (पार्टी के अध्यक्ष पद पर) बनी रहेगी। 'अब हकीकत यह है कि संशोधन समिति ने कांग्रेस की इस महत्वपूर्ण 'प्रतिबद्धता' से दूरी बना ली है।

'एक परिवार एक टिकट' पर स्थिति अस्पष्ट: उदयपुर चिंतन शिविर का जो दूसरा सुधार हटाया गया है, वह है- 'एक परिवार-एक टिकट' फॉर्मूला। यह प्रमुख तौर पर चर्चा में बना रहा है, क्योंकि यह फॉर्मूला गांधी परिवार समेत पार्टी के हर नेता पर भी लागू होगा। हालांकि, इस फॉर्मूला के तहत परिवार के किसी दूसरे सदस्य को टिकट तभी मिलता, जब उसने पार्टी के लिए कम से कम 5 साल तक काम किया हो। यह फॉर्मूला एक संदेश देने के लिए भी माना जा रहा था कि कांग्रेस को 'फैमिली इंटरप्राइजेज' के रूप में नहीं चलाया जा रहा और बड़े उपनाम अब पार्टी में टिकट पाने की वजह नहीं बनेंगे। उदयपुर चिंतन शिविर में राहुल गांधी ने अपने भाषण में जिक्र किया था कि केसी वेणुगोपाल प्रस्ताव से सहमत नहीं थे, लेकिन फिर भी वह चाहते हैं कि यह प्रस्ताव चर्चा में लाया जाए। वहीं, संविधान संशोधन समिति के मीडिया संयोजक रणदीप सुरजेवाला ने पूछे जाने पर कहा कि ये नीतिगत मुद्दे हैं और कई में संशोधन की आवश्यकता नहीं है और पार्टी के अंदर विचार-विमर्श किया जा सकता है।

सीडब्ल्यूसी: यू-टर्न

संचालन समिति ने फैसला लिया कि कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी)के सदस्यों का चुनाव नहीं होगा, बल्कि पार्टी अध्यक्ष सदस्यों को नामित करेंगे। इससे पहले संगठन महासचिव ने एक जनवरी को अधिवेशन की घोषणा करते हुए मीडिया से बातचीत की थी और बताया था कि (कांग्रेस) संविधान के अनुसार, अधिवेशन के साथ सीडब्ल्यूसी का भी चुनाव होगा। हालांकि, कांग्रेस का एक धड़ा रणनीति बनाने में लगा है। सीडब्ल्यूसी चुनाव को लेकर माना जा रहा है कि इसमें निर्वाचित उम्मीदवार हो सकते हैं जो पार्टी अध्यक्ष खड़गे की हर बात मानने या मानने को तैयार नहीं होंगे। इसे आंतरिक खींचतान के तौर पर भी देखा जा रहा था। इसलिए सीडब्ल्यूसी चुनावों को लेकर पार्टी ने यू-टर्न लिया और मल्लिकार्जुन खड़गे को सभी 35 सदस्यों को मनोनीत करने का जिम्मा सौंप दिया गया। इस फैसले से कांग्रेस अध्यक्ष को अपनी 35 लोगों की टीम चुनने का बड़ा अधिकार मिल गया है। मोदी सरकार के खिलाफ विपक्ष का नेतृत्व करने को लेकर अधिवेशन में कांग्रेस की तरफ से खड़गे ने कुछ साफ नहीं किया। उन्होंने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में कांग्रेस एकमात्र ऐसी पार्टी है जो देश को निर्णायक नेतृत्व प्रदान कर सकती है। हम एक बार फिर जनविरोधी, अलोकतांत्रिक भाजपा सरकार को हराने के लिए समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन करके एक व्यवहार्य विकल्प बनाने के लिए तत्पर हैं। भाषण में 'निर्णायक नेतृत्व' की बात पूरी तरह पत्ते नहीं खोलने की तरफ ही इशारा करती है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Kailash Agarwal
Director
9414159130

Pankaj Agarwal
Director
9414621211

YUVRAJ PAPERS

Yuvraj Papers

Papers | Printing | Stationery

11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar,
Udaipur - 313001 Phone :- + 91-294-2418586

email : info@yuvrajpapers.com

प्रखर विचारक: ज्योतिबा फुले

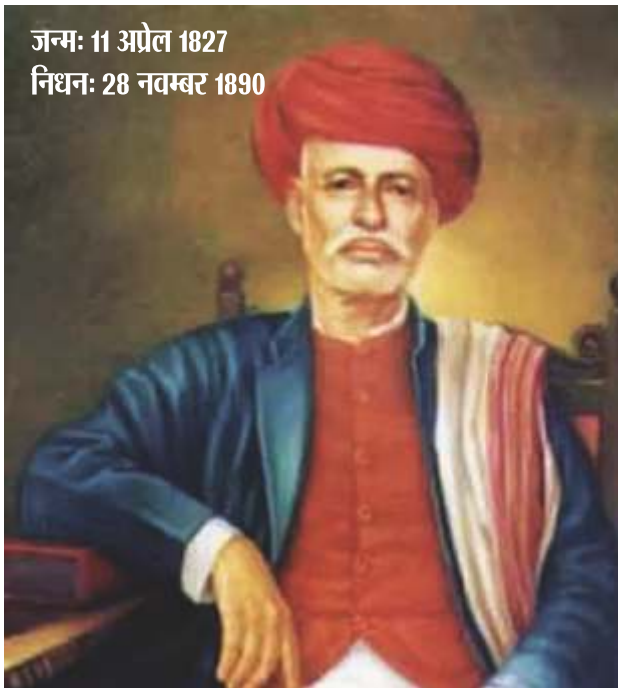

ज्योतिबा फुले एक प्रखर विचारक, समाजसेवी,लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। उन्हें 'महात्मा फुले' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। सितम्बर 1873 में उन्होंने महाराष्ट्र में सत्य शोधक समाज नामक संस्था का गठन किया। महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए ज्योतिबा ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के ये प्रबल समर्थक थे। महात्मा फुले भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के विरूद्ध थे।

दिनेश माली

महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म पुणे में हुआ था। उनका पूरा नाम ज्योतिराव गोविंदराव फुले था। एक वर्ष की अवस्था में इनकी माता का निधन हो गया। इनका लालन-पालन एक बाई ने किया। उनका परिवार कई पीढ़ी पहले सतारा से पुणे आकर फूलों के गजरे आदि बनाने का काम करने लगा था। ज्योतिबा ने कुछ समय तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढ़ाई छूट गई और बाद में इक्कीस वर्ष की उम्र में अंग्रेजी में सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों ने मिल कर काम किया।

ज्योतिबा फुले ने विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए उन्होंने काफी काम किया। किसानों की हालत सुधारने और उनके कल्याग के लिए भी काफी प्रयास किए। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा ने 1848 में एक स्कूल की स्थापना की। महिला शिक्षा की दृष्टि से देश में यह पहला विद्यालय था। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिकाएं नहीं मिली, तो उन्होंने कुछ दिन खुद पढ़ा-लिखा कर अपनी पत्नी सावित्री को इस योग्य बना दिया। उच्च वर्ग के लोगों ने उनके इस काम में बाधा डालने का प्रयास किया, पर जब फुले उससे नहीं डिगे और आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाव डाल कर पति-पत्नी को घर से बहिष्कृत करवा दिया। इससे कुछ समय के लिए उनका काम रुका जरूर, पर जल्दी ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए।

गरीबों और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने सन् 1873 में 'सत्यशोधक समाज'स्थापित किया। इसी वर्ष उनकी पुस्तक 'गुलाम गिरी' का भी प्रकाशन हुआ। उनकी समाजसेवा देख कर 1888 में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी गई। ज्योतिबा ने ब्राह्मण-पुरोहित के बिना ही विवाह-संस्कार आरंभ कराया और इसे मुंबई हाईकोर्ट से भी मान्यता मिली। वे बाल-विवाह विरोधी और विधवा विवाह के समर्थक थे। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं। तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोंसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत आदि उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

सन 1873 में महात्मा फुले ने महात्मा फुले की किताब 'गुलामगिरी' बहुत कम पृष्ठों की है, लेकिन इसमें बताए गए विचारों के आधार पर पश्चिमी और दक्षिणी भारत में बहुत सारे आंदोलन चले। उत्तर प्रदेश में चल रही दलित अस्मिता की लड़ाई के बहुत सारे सूत्र 'गुलामगिरी' में ढूंढ़े जा सकते हैं।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे?
किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें।
आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

सबसे समान व्यवहार न देखें किसी में दोष

डॉ. हरिसिंह पाल

वल्लभाचार्य जयंती पर विशेष

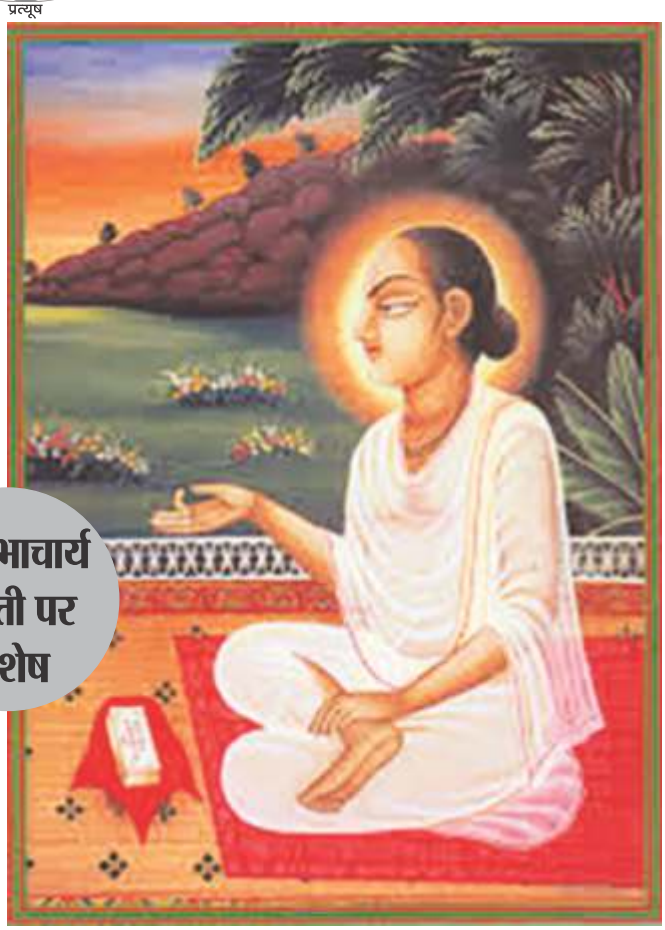

महाप्रभु वल्लभाचार्य को पुष्टि मार्ग में भगवान श्रीकृष्ण का 'मुखावतार' माना जाता है। महाप्रभु के पूर्वज दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश आकुवीडु जनपदांतर्गत कौकरबल्लि स्थान के निवासी थे। इनके पिता लक्ष्मण भट्ट वहां से काशी आकर बस गए। इनका जन्म वैशाख कृष्ण एकादशी संवत 1533 (सन् 1476) को हुआ। इस वर्ष उनकी जयंती 16 अप्रैल को मनाई जाएगी। श्री नाथद्वारा में भी विशेष आयोजन होंगे। पांच वर्ष की आयु में बालक वल्लभ को अपने पिता से गायत्री मंत्र मिला। उसी वर्ष काशी के प्रकांड विद्वान माधवानंद तीर्थ त्रिदंडी जी के सानिध्य में विद्याध्ययन शुरू किया। शिक्षा के बाद युवा वल्लभाचार्य ने प्रयाग में गंगा पार डेल ग्राम को अपना स्थायी आवास बनाया। यहीं महाप्रभु से मिलने महाप्रभु चैतन्य पधारे थे। यहां से उन्होंने अपने विचारों के प्रसार के लिए तीन बार पूरे देश का भ्रमण किया। जहां-जहां उन्होंने प्रवचन दिए और कुछ दिन ठहरे, वे स्थान 84 हैं। बाद में ये ही स्थान चौरासी बैठकों के रूप में जाने गए। ये बैठकें कश्मीर से कन्याकुमारी और द्वारका से जगन्नाथ पुरी तक विद्यमान हैं।

आचार्य श्री वल्लभ एक सामाजिक चेतना संपन्न धर्माचार्य थे। अपने जीवन के आरंभिक काल में ही उन्होंने समाज की स्थिति को भली-भांति देख और समझ लिया था। इन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के लिए छः बातों (सिद्धांतों) को अनिवार्य बताया, जिससे मानव जीवन सफल एवं सार्थक सिद्ध हो सके। 1. यथाशक्ति स्वधर्म का आचरण करना 2. विधर्म से बचे रहना 3. इंद्रियों रूपी अश्व पर नियंत्रण में रखना 4. सब में भगवान श्रीकृष्ण हैं, इसी भावना से सहनशील रहना 5. वैराग्य भाव रखना और 6. हर स्थिति में पूर्ण संतुष्ट रहना। वल्लभ संप्रदाय में गो सेवा का विशेष महत्व है। श्री कृष्ण भक्ति में आचार्य वल्लभ की प्रगाढ़ आस्था थी। उनके मन में यह तड़प थी कि जल्दी से जल्दी श्रीकृष्ण की लीला भूमि ब्रजमंडल के दर्शन किए जाएं। अपनी माताजी से स्वीकृति प्राप्त कर वे ब्रजभूमि की ओर चल दिए। यहां यमुना घाट पर शमी (छोंकर) वृक्ष के नीचे आसन लगाया और अष्टाक्षर मंत्र का जाप करने लगे। कहा जाता है कि श्री यमुनाजी के प्रबल वेग के बीच श्रावण सुदी एकादशी की मध्य रात्रि को श्रीकृष्ण यमुनारानी के साथ प्रकट हुए। आचार्य वल्लभ स्वामिनी सहित पूर्ण पुरूषोत्तम के दर्शन करके धन्य हो गए। सूत के कच्चे धागों की माला ठाकुर को पहनाई, रोली का तिलक किया और मिश्री भोग में रखी। इसी घटना की स्मृति में आज भी वल्लभ संप्रदाय में पवित्रा एकादशी मनाई जाती है, जो यह संकेत देती है कि संसार के कच्चे रिश्ते-नातों को प्रभु चरणों में समर्पित करने में ही जीव का कल्याण होता है।

आचार्य वल्लभ ने अपने श्री ठाकुरजी से अनुमति प्राप्त कर समर्पण मंत्र द्वारा 84 भक्तों को दीक्षा दी, जो आज भी 84 वैष्णवों के नाम से विख्यात है। अपने भक्ति सिद्धांत के प्रतिपादन के लिए आचार्य ने पुष्टि मार्ग नामक भक्ति मार्ग की स्थापना की। यह मार्ग भगवान श्री कृष्ण के अनुग्रह को सर्वश्रेष्ठ और भजनीय मानता है। पुष्टि शब्द का अर्थ ही है 'पोषण' अर्थात् भगवदनुग्रह। भगवान की कृपा प्राप्ति ही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए। भगवद्कृपा से मनुष्य की समस्त इच्छा, आकांक्षा पूर्ण हो जाती है। आचार्य ने पुष्टि मार्ग की स्थापना के साथ ही अपने संप्रदाय का सिद्धांत, शुद्धाद्वैत नाम से प्रस्तुत किया। वल्लभाचार्य बालरूप श्रीकृष्ण की सेवा करते थे। पुष्टि मार्ग की प्रेरणा से ही अष्टछाप के कवियों (आचार्य वल्लभ के चार शिष्य कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास और परमानंद दास) और उनके सुपुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ के चार शिष्यों-गोविंद स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास) ने मध्यकाल के हिंदी साहित्य को एक नया मोड़ दिया।

अपने बावनवें वर्ष में ईश्वर के मौन संकेत का जब उन्हें आभास हुआ कि उनका इस धरती पर काम पूरा हुआ तो उन्होंने अपने दोनों पुत्रों-गोपीनाथजी और विट्ठलनाथजी को अंतिम उपदेश देकर संवत् 1587 (सन् 1528) में काशी के हनुमान घाट पर संदेह गंगा में प्रवेश किया। जितना अद्भुत प्राक्ट्य था, उतनी ही अलौकिक उनकी परलोक गमन लीला थी। आचार्य वल्लभ ने समाज में प्राणिमात्र से समान व्यवहार करने, किसी में दोष न देखने, गुण ग्राह्यता, धर्मनिष्ठता, भीषण आपत्तियों अथवा महाहर्ष के उपस्थित होने पर भी शांतचित्त रहने, काम-लोभ रहित निस्पृह, विरक्त तथा श्रीकृष्ण सेवा का उपदेश दिया। इस प्रकार आचार्य श्री ने भारतीय तत्व दर्शन को समग्र दृष्टि दी। भारतीय धर्म साधना को नया आयाम प्रदान किया। परंपरागत वैष्णव धर्म को अभिनव चेतना प्रदान की और कृष्ण भक्ति धारा को अपूर्व स्वरूप प्रदान किया।

सोशियोलॉजी पढ़कर तैयार हो सकते हैं इन जॉब्स के लिए

भगवान प्रसाद गौड़

सोशियोलॉजी यानी समाजशास्त्र एक ऐसा क्षेत्र है जो सीधे तौर पर समाज के अध्ययन से जुड़ा है। सोशियोलॉजिस्ट्स विभिन्न लोगों और समाजों के व्यवहार, उनके आपसी तालमेल, उनके विचारों आदि की स्टडी करते हैं। इन समूहों की उत्पत्ति (ओरिजिन) और उनके विकास के बारे में खोजबीन करना भी इनका प्रमुख काम होता है। रिसर्च कार्य के लिए विषय चुनने और उनके लिए अपने स्त्रोतों की जानकारी रखने के लिए सोशियोलॉजिस्ट्स के पास आवश्यक समझ होनी चाहिए। इस क्षेत्र में एक बेहतर कॅरियर के लिए आप ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन और डॉक्टरेट जैसी डिग्रीज की पढ़ाई कर सकते हैं, साथ ही आपको प्राकृतिक कानून की समझ, खोज और अनुसंधान जैसी स्किल्स पर काम करना चाहिए। नियोक्ता भी ऐसे उम्मीदवारों की तलाश करते हैं जिनमें डेटा एनालिसिस, टास्क परफॉर्मिंग, रिसर्च प्रोजेक्ट्स को डिजाइन करने जैसी स्किल्स होती है। अगर आप भी उन स्टूडेंट्स में से एक हैं जिनका कि सोशियोलॉजी पसंदीदा विषय है, तो आप इन जॉब प्रोफाइल्स में से किसी एक को चुन सकते हैं –

स्कूल या गाइडेंस काउंसलर

प्रोफेशनल के तौर पर स्कूल या गाइडेंस काउंसलर्स, स्टूडेंट्स के मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं। इनकी सबसे खास बात यह भी है कि स्टूडेंट्स की बेहतरी के लिए ये उनके परिवारों से संपर्क करते हैं, ताकि उनकी उपलब्धियों या असफलताओं के समय उनका हौंसला मजबूत रखा जा सके। ये सही कॅरिअर का चुनाव करने के लिए स्टूडेंट्स को तैयार भी करते हैं। समय-समय पर इंटरव्यू करना, ग्रुप डिस्कशंस करना आदि भी इनकी जिम्मेदारियों में शामिल है।

ह्यूमन रिसोर्स स्पेशलिस्ट

इस जॉब रोल पर काम करने वाले सोशियोलॉजिस्ट्स की किसी कंपनी या ऑर्गेनाइजेशन में बड़ी संख्या में लोगों से मिलना और उनकी आवश्यकताओं व समस्याओं को सुनना, सुलझाना जैसी जिम्मेदारियां होती हैं। ये प्रोफेशनल्स संबंधित संस्थान के कर्मचारियों के काम, पद और उनकी लोकेशन के बारे में निर्णय करते हैं। ये उम्मीदवारों के इंटरव्यूज भी आयोजित करते हैं।

मैनेजमेंट कंसल्टेंट

ये कंसल्टेंट्स बिजनेस में आ रही समस्याओं का विश्लेषण करते हुए क्लाएंट्स को समाधान उपलब्ध करवाते हैं। सोशियोलॉजी का अध्ययन, स्टूडेंट्स को बिजनेस से जुड़ी समस्या और उसके संभावित समाधान के प्रत्येक पहलू के बारे में सिखाती है। अपनी प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स का उपयोग करते हुए वैकल्पिक समाधानों पर काम करते हैं और क्लाएंट्स को संतुष्टि प्रदान करते हैं।

सर्वे रिसर्चर (पॉल्स्टर)

सर्वे रिसर्चर, सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों, स्वास्थ्य व संस्कृति संबंधी समस्याओं और कंज्यूमर प्रॉडक्ट्स को लेकर सर्वे करते हैं। ये विभिन्न समूहों के लोगों के विचारों का विश्लेषण भी करते हैं। सोशियोलॉजिकल स्टडी में ये डेटा कलेक्शन और स्टैटिस्टिकल एनालिसिस जैसी तकनीक सीखते हैं।

पॉलिसी एनालिस्ट

आमजन की समस्याओं और विभिन्न सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करते हुए उन्हें कानून या नीति निर्माणकर्ताओं तक पहुंचाना इनका प्रमुख काम है। सोशियोलॉजिकल रिसर्च डेटा की जानकारी इन्हें यह जानने में मदद करती है कि सामाजिक समस्याओं और व्यापक जनसंख्या पर लेजिस्लेशन की ओर से बनाई गई योजनाओं के रिजल्ट अच्छे साबित हुए या नहीं। इन्हें अपनी राइटिंग स्किल्स सुधारने के लिए लगातार काम करना चाहिए।

पब्लिक रिलेशंस स्पेशलिस्ट

एक प्रोफेशनल के तौर पर पब्लिक रिलेशंस स्पेशलिस्ट्स का प्रमुख काम प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया अधिकारियों से बात करना है। इसके साथ ही ये मीडिया अधिकारियों को अपने क्लाएंट्स या ऑर्गेनाइजेशंस के प्रॉडक्ट्स या सर्विसेज की व्यवहारिकता और उपयोगिता के बारे में जागरूक करने का काम करते हैं और उनके ब्रांड्स से जुड़ी खबरों के प्रकाशन के लिए भी उन्हें तैयार करते हैं। एक सलाहकार के रूप में ये प्रोफेशनल्स इन संगठनों को अपने प्रॉडक्ट्स और सर्विसेज के विस्तार से जुड़ी सलाह भी देते हैं।

मीडिया प्लानर

इन प्रोफेशनल्स का प्रमुख काम अपने क्लाएंट्स को उनके प्रॉडक्ट्स से जुड़े विज्ञापनों के प्रकाशन से संबंधित सलाह देना होता है। इसके साथ ही योजनाबद्ध तरीके से सेल्स को बढ़ाने के लिए मीडिया प्लानर्स अपने क्लाएंट्स के लिए मीडिया प्लान भी तैयार करते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न मीडिया समूहों और बेस्ट मीडिया चुनने के लिए बतौर सोशियोलॉजिस्ट ये अपनी सोशियोलॉजिकल रिसर्च स्किल्स का उपयोग करते हैं।

मार्केट रिसर्च एनालिस्ट

किसी कम्पनी के प्रॉडक्ट्स और उसकी सेवाओं की जांच करना मार्केट रिसर्च एनालिस्ट्स का प्रमुख काम होता है। इसके अतिरिक्त कंपनियों की मार्केट कैंपेनिंग को सफ्ल बनाने के लिए भी यह प्रोफेशनल्स अपनी सेवाएं देते हैं। अपनी स्किल्स का उपयोग करते हुए डेटा एनालिसिस के लिए ये अपनी स्टेटिस्टिकल स्किल्स का उपयोग करते हैं। किसी कंपनी के प्रॉडक्ट्स की सेल्स बढ़ाने के लिए ये एनालिस्ट्स विशेष समूहों को टारगेट करते हैं।

प्रत्यूष

समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका

प्रत्यूष *(बहुरंगी हिन्दी मासिक)*

के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।

पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- Situated in Heart of City
- Homely Atmosphere
- Rooms Connected with Telephone
- A/C & Cooler Rooms
- T.V. With Cable Connection
- Near to bus & Railway Station

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

स्वाद बढ़ाए, ये लाजवाब रायते

मार्च के अंतिमसप्ताह में इस बार गर्मी ने दस्तक दे दी। अप्रेल तो खूब तप रहा है। ऐसे मौसम में भोजन बेस्वाद सा लगता है। खाने का स्वाद बढ़ाने और शरीर को शीतलता प्रदान करने के लिए अमूमन बूंदी खीरे या टमाटर का रायता हम बना लेते हैं, लेकिन इसके कई और अंदाज भी हैं। जिन्हें जानिए, बनाइये और भोजन का स्वाद बढ़ाते हुए स्वस्थ रहिए।

ज्योति मोघे

खरबूजा रायता

आवश्यक सामग्री: खरबूजा–750 ग्राम, दही–1 लीटर, काली मिर्च पाउडर–1/2 चम्मच, काला नमक– 1 छोटा चम्मच, भुना जीरा पाउडर–1/4 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर–1 छोटा चम्मच, नमक।

बनाने की विधि: खरबूजे को छिलकर टुकड़े कर लें, बीज अलग हटा दें। इन टुकड़ों को कद्दूकस कर लें। दही को अच्छी तरह मथकर उसमें खरबूजे के मिश्रण को मिला दें, फिर नमक, कालीमिर्च, काला नमक, जीरा पाउडर डालकर मिला लें। फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें। ठंडा होने पर खरबूजे के छोटे टुकड़े डालकर सर्व करें।

सेव अनारदाना रायता

आवश्यक सामग्री: दही–250 ग्राम, मसालेदार सेव–1 छोटी कटोरी, बारीक कटी हरी मिर्च–1 चम्मच, मध्यम आकार का प्याज–1, बारीक कटा हरा धनिया–2 चम्मच, खीरा–1/2 कप, अनार दाना–सजाने के लिए प्लेट , नमक।

बनाने की विधि: बोल में दहीको फेंट लें। इसमें सेव, प्याज, बारीक कटा खीरा, हरी मिर्च, हरा धनिया, नमक डालकर अच्छी तरह से मिलाकर कुछ मिनटों के लिए फ्रिज में रख दें। सर्व करते समय थोड़ा अनारदाना डालें। जब चाहें तब पराठे के साथ सर्व करें।

कद्दू अंगूर रायता

आवश्यक सामग्री: कद्दू–200 ग्राम, दही 400 ग्राम, किसी अदरक–1 छोटा चम्मच, अंगूर–1 कप, शक्कर–1 चम्मच, बारीक कटी हरी मिर्च–1 चम्मच, काली मिर्च पाउडर–1/4 छोटा चम्मच, काला नमक–1/2 छोटा चम्मच, तेल–1 छोटा चम्मच, जीरा–1 छोटा चम्मच, हींग–चुटकीभर, कढ़ी पत्ता– 8–10 बारीक कटा हरा धनिया कटा–1 छोटा चम्मच, नमक।

बनाने की विधि: कद्दू छिलकर छोटे टुकड़ों में काटकर पका लें। पकने के बाद पानी निचोड़ दें। दही को फेंट कर उसमें नमक, शक्कर, काली मिर्च, हरी मिर्च और निचोड़ा हुआ कद्दू व अंगूर डालकर मिला दें। एक पैन में तेल गर्म करके हींग, जीरा, कढ़ी पत्ते का तड़का लगाएं। तड़के को रायते के ऊपर डालें और हरा धनिया डालकर सर्व करें।

खीरा-अनारदाना रायता

आवश्यक सामग्री: मध्यम आकार का खीरा–2, अनारदाना–1 चम्मच, दही–250 ग्राम, शक्कर–1 चम्मच, बारीक कटी हरीमिर्च–1 चम्मच, काली मिर्च पाउडर–1/4 चम्मच, काला नमक–1 छोटा चम्मच, जीरा पाउडर–1/4 चम्मच नमक।

बनाने की विधि: दही को अच्छी तरह से फेंट लें। खीरे को कद्दूकस करके पानी निकाल लें। एक बोल में नमक, शक्कर, काली मिर्च, अनार के दाने, हरी मिर्च, हरा धनिया, जीरा पाउडर और खीरा डालकर अच्छी तरह से मिला लें। फ्रिज में ठंडा करने के लिए रख दें। हरा धनिया डालकर सर्व करें।

चटपटा रायता

आवश्यक सामग्री: दही–250 ग्राम, मध्यम आकार के बारीक कटे प्याज–2, बारीक कटी हरी मिर्च–1 चम्मच, काली मिर्च पाउडर–1/4 छोटा चम्मच, काला नमक–1 छोटा चम्मच, जीरा पाउडर–1/4 छोटा चम्मच, बारीक कटे टमाटर–1/2 कप, नींबू रस–1 चम्मच, नमक।

बनाने की विधि: बोल में दही को फेंटकर उसमें शक्कर, हरी मिर्च, नमक, काला नमक, काली मिर्च, हरा धनिया, नींबू रस, टमाटर और प्याज मिलाएं। ऊपर से हरा धनिया डालकर सर्व करें।

बीमार न रहें आपके दांत

भले ही आप कितने ही आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी हों, लेकिन मुंह की सफाई का ध्यान नहीं रखते तो सावधान हो जाएं। मुंह की सफाई के बिना कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

राजलक्ष्मी त्रिपाठी

दांतों और मुंह को शरीर का गेटवे कहते हैं। अच्छी सेहत के लिए दांतों की सफाई जरूरी है, क्योंकि जब आप खाना खाते हैं, तो वह मुंह के रास्ते ही पेट तक पहुंचता है। ऐसे में अगर मुंह और दांत साफ नहीं हैं, तो उसमें मौजूद कीटाणु भोजन के साथ पेट में पहुंचेंगे, जिस कारण देर-सबेर दांतों की समस्या घेर सकती है।

अगर दांत हो अस्वस्थ

दांतों की सेहत ठीक न होने से दिल संबंधी बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है। यदि मसूढ़ों में बैक्टीरिया के कारण सूजन है तो इससे पीरियोडोंटल जैसी समस्या हो सकती है। संक्रमित मसूढ़ों में मौजूद जीवाणु रक्तप्रवाह में आ सकते हैं और धमनियों का रक्तप्रवाह ठीक करने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है। धमनियों में आने वाली सख्ती को एथेरोस्क्लेरोसिस कहा जाता है।

यह गंभीर समस्या है। इससे रक्तप्रवाह में अवरोध होता है, जिससे दिल के दौरे का खतरा बढ़ता है। दांतों की खराब सेहत दिमाग को भी प्रभावित करती है। संक्रमित मसूढ़ों से निकलने वाले बैक्टीरिया से दिमाग की कोशिकाएं मृतप्राय हो सकती हैं और इससे डिमेंशिया हो सकता है। जिंजिवाइटिस होने की स्थिति में आप अल्जाइमर्स से भी प्रभावित हो सकते हैं। संक्रमित दांतों और सूजे मसूढ़ों से मुंह के जीवाणु सांस के साथ फेफड़े में पहुंचकर रक्तप्रवाह में बाधा पैदा कर सकते हैं। श्वसन तंत्र में पहुंच जाएं तो निमोनिया, ब्रोन्काइटिस और सीओपीडी (क्रॉनिक ऑब्स्ट्रेक्टिव पल्मनरी डिजीज) का खतरा बढ़ता है। संक्रमित मसूढ़ों से डायबिटीज का जोखिम बढ़ता है। पहले से मधुमेह है तो ओरल हेल्थ का ध्यान रखना जरूरी है। ऐसा न करने से रक्त में शर्करा बढ़ सकती है। गर्भवती स्त्री को दांतों की सेहत का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि हार्मोनल बदलावों से संक्रमण का खतरा बढ़ता है।

पीरियोडोंटिटाइटिस और जिंजिवाइटिस जैसी समस्याओं से समय पूर्व प्रसव, बच्चे का वजन कम होने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। मुंह के बैक्टीरिया के कारण अगर आप गठिया से पीड़ित हैं, तो वह दर्द बढ़ जाता है और कुहनियों, घुटनों आदि पर सूजन आ जाती है।

ऐसे करें सफाई

- सुबह और रात दोनों समय फ्लोराइडयुक्त टूथपेस्ट और नर्म ब्रिसल्स वाले ब्रश से दांतों की सफाई करें।
- डेंटिस्ट से जांच कराएं, मीठा-स्टार्चयुक्त भोजन न करें।
- कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन कम करें।
- ठंडा-गर्म खाने से दांतों में दर्द हो तो ब्रश को न रगड़ें।
- बिना चीनी वाला च्यूइंगम चबाने से मसूढ़े अच्छे रहते हैं।
- दूध, दही, पनीर आदि का सेवन करें।
- गर्भावस्था के दौरान आहार का खास ध्यान रखें। आहार में कैल्शियम और मैग्नीशियम की बहुतायत हो।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का उत्तरार्द्ध अतिलाभप्रद, कारोबार मध्यम, आय–व्यय सम रहेगा, परिश्रम से सफलता, यात्रा के योग, शासन से भय एवं हानि की संभावना रहेगी। शत्रु पक्ष मौके की तलाश में रहेगा, सावधान रहें। इष्ट मित्रों से बिगाड़ संभव, शारीरिक कष्ट हो सकता है।

वृषभ

व्यापार में उन्नति, धन लाभ, राज– समाज से मान–प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। परिवार में विवाद की स्थिति, रक्त संबंधी बीमारी से शरीर को कष्ट होगा। किसी वरिष्ठजन का सहयोग मिलेगा, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

मिथुन

कारोबार में आय कम–व्यय अधिक रहेगा। शासकीय व न्यायिक निर्णय पक्ष में, शुभ कार्यों में रूचि रहेगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद संभव, शत्रुओं से भय रहेगा। शरीरिक पीड़ा रहेगी, भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा। भाई–बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

कर्क

विचारों में उदारता एवं मांगलिक कार्यों में रूचि रहेगी। किसी पुराने मित्र से मिलाप होगा। श्वेत वस्तुओं के व्यापार से धन हानि संभव। परिवारजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कार्य क्षेत्र में आकस्मिक बदलाव संभव, प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार रहें।

सिंह

राजकाज एवं समाज में मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यवसाय में उन्नति, धन लाभ, परंतु खर्च भी अधिक रहेगा। मित्रों से सहयोग, उदर या नेत्र विकार से शरीर को कष्ट संभव, माह का उत्तरार्द्ध उत्साह व प्रसन्नता में बीतेगा। वाणी व व्यवहार में संयम रखें।

कन्या

यह माह अनमने ढंग से व्यतीत होगा। किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा, उत्साह में कमी रहेगी। व्यापार–कारोबार मध्यम रहेगा। सहयोगी या साझेदार धोखा कर सकते हैं। सावधान रहे। शत्रु पक्ष प्रभावी रूप से हावी हो सकता है। संतान पक्ष से चिंता रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आय मध्यम रहेगी।

तुला

मन चिंताग्रस्त रहेगा। व्यापार में हानि की संभावना, किंतु किसी परिचित या मित्र का सहयोग भी प्राप्त होगा, शत्रु पक्ष कमजोर होगा, लम्बी बीमारी से छुटकारा मिल सकता है, यात्रा के योग बनेंगे। मुख एवं नेत्र विकार से शरीर को कष्ट होगा। माह का उत्तरार्द्ध शुभ परिणामदायी होगा।

इस माह के पर्व/त्योहार

3 अप्रेल	चैत्र शुक्ला तृतीया	महावीर जयंती
6 अप्रेल	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा	श्री हनुमान प्राकट्योत्सव/ वैशाख स्नान प्रारंभ
7 अप्रेल	वैशाख कृष्ण प्रथमा	गुड फ्राइडे
11 अप्रेल	वैशाख कृष्णा पंचमी	गुरु तेग बहादुर जयंती, ज्योतिबा फुले जयंती
12 अप्रेल	वैशाख कृष्णा सप्तमी	गुरु अर्जुनदेव जयंती
14 अप्रेल	वैशाख कृष्णा नवमी	अम्बेडकर जयंती
16 अप्रेल	वैशाख कृष्णा एकादशी	वल्लभाचार्य जयंती
17 अप्रेल	वैशा कृष्णा द्वादशी	श्रीसेन जयंती
22 अप्रेल	वैशाख शुक्ल द्वितीया	अक्षय तृतीया/ईद–उल–फित्र/परशुराम जयंती वर्षीतप पारणा
25 अप्रेल	वैशाख शुक्ल पंचमी	आद्य शंकराचार्य जयंती / सूरदास जयंती
29 अप्रेल	वैशाल शुक्ल नवमी	जानकी जयंती

वृश्चिक

व्यापार में उन्नति एवं धनलाभ, भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि से मन को प्रसन्नता होगी। चोरी व अग्नि से हानि की आशंका रहेगी। शत्रुओं का भय भी सताएगा। कर्म क्षेत्र में निखार आएगा। दीर्घकालीन योजनाएं बनेंगी एवं क्रियान्वित भी होगी, आत्म नियंत्रण आवश्यक।

धनु

शासकीय व न्यायिक मसले पक्ष में रहेंगे। व्यापार में वृद्धि, पीली वस्तुओं के व्यापार से विशेष लाभ, शासकीय कार्यों में मान–सम्मान व पदोन्नति प्राप्त होगी, वाद–विवाद में विजय, शारीरिक सुख उत्तम, कर्म क्षेत्र में कुछ नया कर पाएंगे एवं सफलता भी मिलेगी, संतान सुख में कमी से मन अशांत रहेगा।

मकर

राजनीति में सक्रिय जातकों को लोकप्रियता का लाभ मिलेगा, व्यापार कारोबार मध्य रहेगा। अकस्मात लाभ भी मिल सकता है, शासकीय कार्यों के निष्पादन में भय रहेगा। मन चिंताग्रस्त रहेगा। परिवारजनों से अच्छा सहयोग, भाग्य भी पूरा साथ देगा। संतान पक्ष से खुशी मिलेगी।

कुम्भ

मित्र एवं सहोदर से बिगाड़ हो सकता है, आय मध्यम परंतु खर्च की अधिकता रहेगा, विषम परिस्थितियों पर भी नियंत्रण रख सकेंगे एवं विजय प्राप्त होगी। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी, स्थाई संपत्ति में निवेश लाभप्रद रहेगा। कर्म क्षेत्र में नई चमक पैदा कर पाएंगे। स्वास्थ्य पक्ष मध्यम रहेगा।

मीन

व्यवसाय में मंदी से मन अशांत रहेगा। आय से व्यय ज्यादा रहेगा। मान–सम्मान, पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। माह का पूर्वार्द्ध क्रोध में वृद्धि करेगा। सावधानी आवश्यक है। न्यायिक फैसले आपके विरुद्ध जा सकते हैं, अपने पक्ष की पुरजोर पैरवी में सफल नहीं हो पाएंगे।

यूडब्ल्यूसीसी आई में महिला सम्मान

उदयपुर। उदयपुर वूमन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (यू डब्ल्यूसीसी आई) की ओर से प्रथम महिला प्रतिभा पुरस्कार-23 हुआ। इसमें 16 कैटेगरी में उन 16 महिलाओं को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने कार्यों से देश-विदेश में नाम रोशन किया। मुख्य अतिथि एमएसएमई की कार्यकारी सदस्य अंजू सिंह, रेनू कटारिया, डॉली आर. तलदार, विशिष्ट अतिथि जे.डी. माहेश्वरी, सी.पी. शर्मा, रवि बर्मन थे। चेम्बर की अध्यक्ष डॉ. नीता मेहता ने बताया कि समारोह में उन महिलाओं को सम्मानित किया गया, जिन्होंने खुद का व्यवसाय शुरू कर उद्यम के क्षेत्र में अपने कुछ मील के पत्थर हासिल किए। कार्यक्रम में सैकंड राउंड में भाग लेने वाली सभी 51 महिलाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। संयोजिका डॉ. चित्रा लड्ढा ने बताया कि होटल एंड हॉस्पिटेलिटी ट्रवेल एंड ट्रांसपोर्टेशन इवेन्ट्स में खुशबू सुराणा, माइनिंग एंड मिनरल्स क्षेत्र में ममता जैन, फर्नीचर एंड होम डेकोर

क्षेत्र में प्रीति रांका, केमिकल एंड मटेरियल क्षेत्र में कीर्ति लता जैन, ज्वैलरी क्षेत्र में मंजू बोर्दिया, लाइफ स्टाईल एंड सीविल मे दीप्ति गन्ना, आर्किटेक्ट एंड इंटीरियर्स सौभ्या लूथरा, फैशन डिजाइनिंग अंजली सिंह, एग्रो एण्ड फूड प्रोसेसिंग पूनम गुप्ता, एज्यूकेशन एण्ड एकेडमिक क्षेत्र में सुरभि खत्री, नॉन-प्रोफिट ओर्गेनाईजेशन कमली, वेलनेस हेल्थ केयर एण्ड मेडिकल क्षेत्र में तबस्सुम जरमनवाला, फाइनेन्शियल एण्ड लीगल एडवाईजरी एण्ड एचआर सर्विस क्षेत्र में पल्लवी नाहर, सीविल क्षेत्र में केतकी मुन्दड़ा, ऑटोमोबाइल क्षेत्र में दर्शना सिंघवी को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अनुष्का ग्रुप में नारी शक्ति सम्मान

उदयपुर। डॉ. अनुष्का ग्रुप द्वारा नारी शक्ति सम्मान के तहत संस्थान की सभी महिलाओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अनुष्का ग्रुप के विद्यार्थियों द्वारा

महिलाओं के सम्मान में अनेक प्रस्तुतियां दी गई। विशिष्ट अतिथि संस्थान अध्यक्ष श्रीमती कमला सुराणा, मुख्य अतिथि डॉ रंजना सुराणा, श्रीमती प्रज्ञा खजांची तथा श्रीमती राज्य, वर्मा की उपस्थिति रही। संस्थान निदेशक राजीव सुराणा ने अतिथि महिलाओं तथा समस्त महिला स्टाफ का सम्मान किया। अनुष्का ग्रुप के संस्थापक डॉ एसएस सुराणा ने कहा कि हमारे जीवन में महिलाओं का विशेष महत्व है। कार्यक्रम का संचालन प्रणय जैन ने किया।

इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर कार्गो व पैसेंजर ऑटो लॉन्च

उदयपुर। इटली की तिपहिया वाहन निर्माता कंपनी पियाजिओ आपे ने नवीन तकनीक का उपयोग करते हुए कंपनी के डीलर सचिन मोटर्स पर नया

इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर कार्गो एवं पैसेंजर ऑटो लॉन्च किया। सचिन मोटर्स के निदेशक सिद्धान्त सिंघवी ने बताया कि कंपनी ने इस कार्गो में फिक्स्ड बैटरी दी है। इस कैटेगरी के वाहनों में कंपनी ने डेढ़ लाख किमी. की वारंटी दी है। इसकी बॉडी बहुत मजबूत है और इसकी बहुत आसान होम चार्जिंग हो सकती है। जबकि ऑटो में 8 किलोवॉट की बैटरी दी गई है। पौने चार घंटे में इसकी बैटरी फुल चार्ज हो जाती है। इसकी ऑपरेशन कॉस्ट 40 पैसा प्रति किलोमीटर आती है।

डॉ. शर्मा एकेडमिक काउंसिल में सदस्य

उदयपुर। मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय में स्नातकोत्तर शरीर क्रिया विभाग में कार्यरत डॉ. किशोरी लाल शर्मा को डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर में राज्यपाल नामित सदस्य बनाया गया है।

जिला कलेक्टर द्वारा युग सम्मानित

उदयपुर। जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने तैराक युग चैलानी का सम्मान किया। युग को खेलो इण्डिया में 200 मीटर फ्री स्टाईल, 100 मीटर बटर फ्लाई में कास्य पदक, 200 मीटर बटर फ्लाई, 200 मीटर व्यक्तिगत मेडले एवं 400 मीटर व्यक्तिगत मेडले में स्वर्ण पदक मिले हैं। उन्होंने 3 स्वर्ण पदक, 2 कास्य पदक सहित कुल 5 पदक प्राप्त किए है। जिला खेल अधिकारी शकील हुसैन ने बताया कि युग राजस्थान में पहली बार 5 पदक लाने वाला पहला तैराक है।

साहू अध्यक्ष और जैन सचिव बने

उदयपुर। जिला ओलिंपिक संघ उदयपुर की साधारण सभा की बैठक में राजस्थान ओलिंपिक संघ के सचिव अरूण कुमार सारस्वत की देखरेख में अगले 4 साल के लिए कार्यकारिणी चुनाव हुए। इसमें अध्यक्ष पद पर पावर लिफ्टिंग संघ के विनोद साहू अध्यक्ष और सचिव जालम चंद जैन निर्वाचित हुए। कोषाध्यक्ष डॉ. दिलीप सिंह चौहान, चेयरमैन दिनेश श्रीमाली, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पारस सिंघवी, मुख्य संरक्षक सुधीर बक्षी, संरक्षक महेंद्र शर्मा, कुबेर सिंह चावड़ा और प्रवीण बंसल को बनाया गया। कार्यकारिणी का कार्यकाल 2027 तक का रहेगा।

वार्षिक खेल दिवस मनाया

उदयपुर। मेवाड़ बीएससी नर्सिंग कॉलेज द्वारा राजस्थान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर के मैदान में वार्षिक खेलोत्सव-23 का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य सुनील दाधीच ने किया। खेल उत्सव के समापन के मुख्य अतिथि डॉ. जगदीश चौधरी थे। कॉलेज निदेशक पंकज कुमार शर्मा, दिनेश राजपुरोहित, अब्दुल सलाम खान एवं कैलाश सालवी ने जीवन में खेल का महत्व बताया। खो-खो में दिव्या की टीम, महिला कबड्डी में रोशनी की टीम, कबड्डी पुरुष वर्ग में बीएससी नर्सिंग तृतीय वर्ष नरेंद्र चौधरी की टीम, वॉलीबॉल में द्वितीय वर्ष चेतन पटेल की टीम, क्रिकेट में बीएससी नर्सिंग तृतीय वर्ष फरहान खान की टीम विजय रही। 100 मीटर रेस में हरफूल मेघवाल व रोशिनी डामोर, 200 मीटर रेस में बीट्टल पाटीदार व सीता डामोर, लॉन्ग जंप में श्रवण नाई, स्पून रेस में रुक्मणी मीणा, जलेबी रेस में मनीषा गुर्जर व चेयर रेस में दिव्या चौहान विजय रहे। बैडमिंटन में बीएससी नर्सिंग प्रथम वर्ष से लक्ष्मी रेगर व पूजा ढोली व थ्री लेग रेस में बीएससी नर्सिंग चतुर्थ वर्ष से हर्षिता जैन व रोशिनी डामोर में प्रथम रही। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। वाइस प्रिंसिपल डॉ. संदीप गर्ग ने आभार व्यक्त किया।

हिंदुस्तान जिंक की खदानों को 5 स्टार रेटिंग

उदयपुर। खनिज दिवस की 75वीं वर्षगांठ पर हिंदुस्तान जिंक की चार खदान जावर ग्रुप ऑफ माइन्स, राजपुरा दरीबा, कायड़ और सिंदेसर खुर्द खदान को खान मंत्रालय की ओर केंद्रीय कोयला और खान मंत्री प्रहलाद जोशी ने नेशनल फायर सेंटर नागपुर में 17वें राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में 5 स्टार रेटिंग पुरस्कार दिया। इन खदानों को सस्टेनेबल खनन में उनके प्रयासों और पहल के लिए पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर हिंदुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि प्रतिष्ठित 5 स्टार रेटिंग के साथ कम्पनी को स्थाई खनन में अग्रणी कम्पनी के रूप में मान्यता प्राप्त होने पर सम्मानित किया गया है। सुरक्षित स्मार्ट, सतत खनन संचालन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता हमारी संस्कृति में शामिल है, जो राष्ट्र के विकास का एक अभिन्न अंग है। हम अपने देश के 2070 तक शुद्ध शून्य के लक्ष्य के अनुरूप विभिन्न पर्यावरण और ऊर्जा संरक्षण पहलों पर प्रगति करना जारी रखेंगे। जिंक इस क्षेत्र में अग्रणी है, जो स्थाई खनन की खोज में लगातार परिवर्तनकारी और सस्टेनेबल प्रौद्योगिकियों के साथ अग्रसर है।

संजीवनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग में खेल सप्ताह

उदयपुर। संजीवनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग की ओर से रॉयल खेड़ा स्टेडियम में खेल सप्ताह का आयोजन हुआ। इस मौके पर निदेशक अशोक लिंजारा, भव्य लिंजारा, युगल स्वर्णकार, विनोद यदुवंशी सहित स्टॉफ व विद्यार्थी मौजूद थे। खेल सप्ताह में वॉलीबॉल, खो-खो, कबड्डी, क्रिकेट, बेडमिंटन, फुटबॉल आदि खेलों का आयोजन हुआ। क्रिकेट के फाइनल में संजीवनी वॉरियर्स को संजीवनी किंग्स ने हराया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

राजस्थान युवा बोर्ड अध्यक्ष का स्वागत

उदयपुर। राजस्थान युवा बोर्ड अध्यक्ष एवं राज्यमंत्री सीताराम लांबा का गत दिनों जिले की दो दिवसीय यात्रा पर पहुंचने पर नेहरू युवा केन्द्र प्रतिनिधियों के साथ युवाओं ने स्वागत किया। इस दौरान लांबा ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मुख्यमंत्री ने युवाओं को समर्पित इस बजट में 500 करोड़ के युवा कल्याण कोष की स्थापना की है, जो कि देश भर में अनूठी घोषणा है। इससे पूर्व शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के अजमद खान, महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के जिला सह संयोजक सुधीर जोशी, फिरोज अहमद शेख, विनोद जैन, जिला युवा बोर्ड के सदस्य सचिव शुभम पूर्बिया, हिन्दुस्तान स्काउट के सीओ प्रदीप मेघवाल आदि ने स्वागत किया।

निबंध संग्रह 'आधी आबादी के क़िस्से' का लोकार्पण

नई दिल्ली। हिंदी में सभी गद्य विधाओं में निबंध सबसे पुरानी और लोकप्रिय विधा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र से हमारे समय तक निबंध लिखने और पढ़ने का उत्साह बना हुआ है। संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा के कुलपति और हिंदी आचार्य प्रो अशोक सिंह ने उक्त विचार पिछले दिनों विश्व पुस्तक मेले में जाने माने लेखक डॉ दुर्गाप्रसादअग्रवाल के निबंध संग्रह 'आधी आबादी के क़िस्से' का लोकार्पण करते व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि नियमित निबंध लिखने का कौशल कम गद्य लेखकों में होता है और दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने जिस प्रतिबद्धता से निबंध लिखे हैं वह सचमुच अभिनन्दनीय है। समारोह में विख्यात लेखक सूरज प्रकाश ने कहा कि जिस सरल, सहज भाषा मेंअग्रवाल लिखते हैं वह किसी भी गद्य लेखक के लिए स्पृहणीय है। 'सचेत का सद्य' के बाद इस साल यह उनका दूसरा निबंध संग्रह आया है जो उनके लेखन की निरन्तरता का प्रमाण है। उपन्यासकार एवं आदिवासी विमर्शकार हरिराम मीणा ने

कहा कि वे अग्रवाल के गद्य लेखन के प्रारंभिक पाठकों में से हैं। उनके निबंधों की एक विशेषता अपने समय के वास्तविक सवालों से टकराना है। प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक रामशरणजोशी ने कहा कि रोज़मर्रा के विषयों पर लिखना किसी भी लेखक के लिए बड़ी चुनौती है और डॉ अग्रवाल ने इस चुनौती को कुशलता से निभाया है। भारतीय विदेश सेवा से सेवानिवृत्त राजीव सिंह,कवि राघवेन्द्र रावत, कथाकार ज्ञानचंद बागड़ी, कला समीक्षक ए. एल दमामी, युवा उपन्यासकार नवीन चौधरी और सिनेमा विशेषज्ञ मिहिर पंड्या, लेखिका डॉ. उषा गोयल, रश्मि भटनागर ने भी चर्चा में भागीदारी की। संयोजन कर रहे युवा आलोचक डॉ. पल्लव ने डॉ अग्रवाल की रचना यात्रा पर रोशनी डालते हुए कहा कि उनके निबंध पाठकों को संस्कारित तो करते ही हैं लोक शिक्षण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। प्रभाकर प्रकाशन के प्रभारी अंशु चौधरी ने आभार प्रदर्शित किया।

डॉ. भंडारी को बाल साहित्य पुरस्कार

उदयपुर। पं. जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी की मनोनीत सदस्य डॉ. विमला भंडारी को रंग राजस्थान बाल साहित्य पुरस्कार मिला। जयपुर के जवाहर कला केंद्र में शिक्षा मंत्री डॉ. बीडी कल्ला ने यह सम्मान दिया।

'पिछोला' में उतरी इलेक्ट्रिक बोट

उदयपुर। लेकसिटी की झीलों को प्रदूषण मुक्त बनाने के साथ-साथ यहां आने वाले पर्यटकों को निर्मल आबोहवा में झीलों की सैर की सौगात देने के लिए प्रशासनिक प्रतिबद्धता धीरे-धीरे रंग ला रही है। झीलों में स्पीड बोट्स के संचालन को रोकने के साथ पेट्रोल व डीजल संचालित बोट्स को इको फ्रेंडली इलेक्ट्रिक बोट्स में बदलने के निर्णय पर अमल किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट और जिला कलेक्टर तारा चंद मीणा ने गत दिनों पिछोला झील में एक पंच सितारा होटल की नई 18 सीटर इलेक्ट्रिक बोट का फीता काटकर लोकार्पण किया। नई इलेक्ट्रिक बोट पेट्रोल डीजल बोट्स की तुलना में अत्यधिक आरामदायक, कम शोर करने वाली एवं प्रदूषण रहित है। इस दौरान आरटीओ आर एल बामनिया, संयुक्त निदेशक जनसम्पर्क डॉ. कमलेश शर्मा, डीटीओ डॉ. कल्पना शर्मा, होटल के जनरल मैनेजर निशांत अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

अरबन बैंक का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

उदयपुर। दी उदयपुर अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड को वर्ष 2021-22 में 750 से 1000 करोड़ की जमाओं वाली बैंक श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ नागरिक सहकारी बैंक का द्वितीय पुरस्कार मिला। बैंक अध्यक्ष तौसीफ हुसैन ने बताया कि रिजर्व बैंक के परिपत्रों का संकलन निकालने वाली राष्ट्रीय स्तर की मैगजीन बैंको की ओर से बैंको ब्ल्यू रिबन अवार्ड महाबलेश्वर महाराष्ट्र में दिए गए। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष अफताब गुल अत्तारी, निदेशक मंडल के आसिफ मसूद शाह, सबीहा जरी, जरीना इकबाल, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी समीना मेहमूदा, आईटी मैनेजर नसीम अली- ने भाग लिया।

बक्षी को लाइफ टाइम अचीवमेंट

उदयपुर। राजस्थान बैडमिंटन संघ के पूर्व अध्यक्ष और उदयपुर जिला संघ के सचिव सुधीर बक्षी को बैडमिंटन में योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान से नवाजा गया। बक्षी को 45 साल की सेवाओं के लिए जयपुर में सम्मान दिया गया।

मेकश पीसीसी सदस्य

उदयपुर। माहिन खान मेकश को प्रदेश कांग्रेस कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया है।

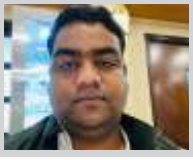

सद्दाम बने सतकर्ता समिति सदस्य

उदयपुर। राजस्थान सरकार के जन अभियोग निराकरण विभाग द्वारा उदयपुर के सद्दाम हुसैन को जिला जन अभाव अभियोग एवं सतकर्ता समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। विभाग के शासन उप सचिव रमेश चंद बंसल ने यह आदेश जारी किया।

बड़ोला हुंडई पर महिलाओं का सम्मान

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर बड़ोला हुंडई वर्कशॉप में महिला दिवस पर मुख्य अतिथि डीटीओ कल्पना शर्मा, समाजसेवी राजश्री गांधी व डायरेक्टर मीनू तलेसरा ने महिला कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। डीटीओ शर्मा ने कहा कि नारी शक्ति का कोई पैमाना नहीं है, ये जीवन पर्यंत काम में पूरी शक्ति से जुटी रहती हैं। गांधी ने नारी का सम्मान समाज का सम्मान बताया। डायरेक्टर नक्षत्र तलेसरा ने आभार जताया।

टोयोटा इनोवा हाइक्रॉस का अनावरण

उदयपुर। राजेन्द्र टोयोटा ने उदयपुर में एमपीवी सेगमेंट ने नए टोयोटा इनोवा हाइक्रॉस का अनावरण किया यह टोयोटा कि पहली सेल्फ चार्जिंग स्ट्रॉन्ग इलेक्ट्रिक एमपीवी है जो भारत में अपनी तरह की पहली एमपीवी सेगमेंट में है। टोयोटा कि टिकाऊ मोबिलिटी पेशकशों में से एक के रूप में इनोवा हाइक्रॉस को अपनी बोल्ड और परिष्कृत स्टाइल तथा उन्नत तकनीकी विशेषताओं के साथ मोटा की वैश्विक एमपीवी श्रृंखला में होना उसकी विरासत है, जो इसे इस सेगमेंट में एक आदर्श विकल्प बनाती है। उदयपुर एसपी विकास कुमार शर्मा तथा राजेन्द्र टोयोटा के डीलर प्रिन्सिपल तनय गोयनका ने अनावरण किया इस अवसर पर राजेन्द्र टोयोटा के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट विनय दीप सिंह तथा अरावली हॉस्पिटल के डॉक्टर आनंद गुप्ता भी उपलब्ध थे।

निंबेटी माइंस को पंच तारक पुरस्कार

नागपुर। भारतीय खान ब्यूरो द्वारा 75 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में यहां आयोजित समारोह में तारक मूल्यांकन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली खानों को पुरस्कृत किया गया, जिसमें श्री सीमेंट लिमिटेड की रास स्थित निम्बेटी लाइम स्टोन माइंस को निरंतर विकास, उच्च तकनीक के साथ उच्च उत्पादन, सामाजिक सरोकार के क्षेत्र एवं पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने हेतु किए गए अति विशिष्ट कार्यों के लिए खान एवं कोयला मंत्री प्रहलाद जोशी द्वारा 'पंच तारक' पुरस्कार से नवाजा गया। श्री सीमेंट की ओर से पंकज अग्रवाल एवं महेंद्र गर्ग, संयुक्त उपाध्यक्ष(खान) ने संयुक्त रूप से पुरस्कार ग्रहण किया। निंबेटी माइंस के उपमहाप्रबंधक प्रकाश चंद्र सेन ने बताया कि यह पुरस्कार प्रतिवर्ष भारतीय खान ब्यूरो द्वारा निर्धारित मानकों के अनुकूल संचालित खानों में उच्चस्तरीय निरीक्षण कर प्रदान किया जाता है।

समलैंगिक समानता पर सामूहिक चर्चा

उदयपुर। केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति जुबिन ईरानी ने पिछले दिनों यहां आईआईएम में समलैंगिक समानता पर हुए कार्यक्रम फिल्मों व रेस्टोरेंट की नौकरी से लेकर मंत्री बनने तक के अपने पड़ावों का जिक्र करते हुए कहा कि महिलाएं कठिन से कठिन कार्य और बड़ी से बड़ी चुनौतियों को स्वीकार में समर्थ है। महिला बड़ी सामूहिक चर्चा में निवृत्ति कुमारी मेवाड़, सिक्योर मीटर निदेशक नंदिता सिंघल, साधना सीईओ स्मृति केडिया, प्रीता भार्गव, होटेलियर डॉली तलदार भी मौजूद थीं।

'एक्सेलरेटेड वैलनेस मास्टरी' का विमोचन

उदयपुर। अर्चना शक्तावत की मानसिक स्वास्थ्य पर पुस्तक एक्सेलरेड वैलनेस मास्टरी का विमोचन लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ व डॉ. आनंद गुप्ता ने किया। सिंह ने कहा कि बचपन में हमारे पास कोई मनोवैज्ञानिक नहीं होता था। हमारी मनोवैज्ञानिक मां ही होती थीं। अमूमन माताओं के पास कोई औपचारिक मनोविज्ञान की डिग्री नहीं होती थी, लेकिन उनके पास लंबा तजुर्बा होता है, जो हमारी हर परेशानी को दूर कर देता है। डॉ. गुप्ता ने कहा कि चिंता, तनाव, अवसाद, नकारात्मक विचारों और भावनाओं को नियंत्रित करने के तरीकों जैसे विषयों पर उपयोगी सलाह दी गई है। इस मौके पर सीपीएस की चेयरपर्सन अलका शर्मा ने भी विचार रखे।

माधवानी को मल्टी टैलेंटेड अवार्ड

उदयपुर। मुकेश माधवानी को हाइट ऑफ सक्सेस की ओर से जयपुर में आयोजित एक समारोह में इस वर्ष का मल्टी टैलेंटेड पर्सनालिटी अवार्ड प्रदान किया गया है। हाइट ऑफ सक्सेस की फाउंडर ममता गर्ग ने बताया कि माधवानी को यह अवार्ड उनके विभिन्न क्षेत्रों में कार्यों को देखते हुए प्रदान किया गया है।

ग्रामीण स्कूली बच्चों को चप्पल पहिनाए

उदयपुर। प्रसंग संस्थान ने ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन व जरूरतमंद विद्यार्थियों को पिछले दिनों चप्पल पहिनाए। संस्थापक डॉ इंद्र प्रकाश श्रीमाली ने बताया कि रेबरियों की ढाणी के राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को शताधिक जोड़ी चप्पल पहिनाए। विद्यालय प्रधान मोनिका श्रीमाली ने संस्थान का आभार प्रकट किया।

सूक्ष्म पुस्तिका का विमोचन

उदयपुर। अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने समाज में महिलाओं के योगदान पर एक सूक्ष्म पुस्तिका का निर्माण किया। जिसका विमोचन डीएसपी चेतना भाटी ने किया।

सीएम के विशेषाधिकारी शर्मा का स्वागत

उदयपुर। मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी लोकेश शर्मा गत दिनों उदयपुर आए। मेनार गांव में होली उपरांत जमरा बीच पर्व पर आयोजित परंपरागत गैर का लुत्फ उठाया। उन्होंने गाँव की विश्वविख्यात बारूदी होली और इसमें सम्बद्ध परंपराओं के प्राचीन स्वरूप में आज भी विद्यमान होने पर खुशी जताई और युवाओं से आह्वान किया कि साम्प्रदायिक सौहार्द की इस परंपरा को भावी पीढ़ी के लिए बचा कर रखें। इससे पूर्व शर्मा मेवाड़ के श्री कृष्ण के धाम, सांवलिया सेठ मंदिर भी पहुंचे और दर्शन किए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा चलाई जा रही लोकहितकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी और लाभ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पत्रकार करें चुनौतियों का सामना: डॉ. गुप्ता

उदयपुर। पत्रकारों की सबसे बड़ी चुनौती है आने वाली तकनीकी। आर्टिफिशियल इंटलिजेंस (एआई) जैसी तकनीकी से पत्रकारिता के एक नये दौर की शुरूआत होगी। ऐसे में पत्रकार को हर मोर्चे पर सफल होना है तो उसके लिए खुद को अपडेट्स करना बेहद जरूरी है। यह बात इंडियन मेडिकल एसोसिएशन उदयपुर चेप्टर के अध्यक्ष एवं अरावली ग्रुप के निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता ने अरावली फाउंडेशन, लेकसिटी प्रेस क्लब व जार के साझे में आयोजित उदयपुर मीडिया अवार्ड-2023 में बतौर मुख्य अतिथि कही। डॉ. आनंद गुप्ता ने शहर के सभी पत्रकारों को एकजुट होकर एक बैनर के नीचे खड़े रहने का आव्हान किया। लेकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष कपिल श्रीमाली ने कहा कि उदयपुर मीडिया जगत की उन हस्तियों का सम्मान हुआ है जो शहर की पत्रकारिता में नींव के पत्थर हैं। समारोह में अलग-अलग तीन केटेगरी में पत्रकारिता से जुड़ी हुई 53 हस्तियां का सम्मान किया गया। समारोह में वरिष्ठ पत्रकार के रूप में डॉ. महेन्द्र भाणावत, विष्णु शर्मा हितैषी, लोकेश कुमार आचार्य, शैलेश व्यास, डॉ. उग्रसेन राव तथा संजय गौतम, राजेंद्र हिलौरिया, शांतिलाल सिरोया, सनत जोशी, प्रकाश शर्मा, रफीक पठान, प्रमोद श्रीवास्तव, मुनेश अरोरा, ऋतुराज, मनीष जोशी आदि का सम्मान हुआ।

विक्रम चौहाण का अभिनंदन

उदयपुर। भाजपा एससी मोर्चा गुजरात के महामंत्री विक्रम भाई चौहाण के उदयपुर आगमन पर गुजराती समाज की ओर से स्वागत किया गया। इस दौरान गुजराती समाज उदयपुर के अध्यक्ष राजेश बी मेहता, सचिव दिनेश भाई पटेल आदि उपस्थित रहे।

पत्रकार वैदिक को श्रद्धांजलि

उदयपुर। देश के प्रख्यात पत्रकार एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के विशेषज्ञ डॉ. वेद प्रताप वैदिक (78) का 14 मार्च को निधन हो गया। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कई आन्दोलन किए। हिंदी आन्दोलन के दौरान जब वे मात्र 13 वर्ष के थे, उन्हें गिरफ्तारी के बाद कुछ समय जेल भी जाना पड़ा। वैदिक जी का राजस्थान और विशेषकर मेवाड़ से काफी लगाव-जुड़ाव रहा। वे मूलत: इन्दौर के थे लेकिन ननिहाल फतहनगर आकोला में था। उनका इसी साल 28 फरवरी को एक कार्यक्रम में फतहनगर आना भी हुआ था। गुलाब बाग स्थित नवलखा महल के सांस्कृतिक केन्द्र के नव: प्रकल्पों के 26-27 फरवरी को लोकार्पण समारोह में भी वे अतिथि थे। उनके निधन पर नगर के पत्रकारों, लेखकों ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रत्यूष कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभी में प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि वे एक प्रबुद्ध राजनीतिक विश्लेषक और स्तंभकार थे। वे जब भी यहां आए, उनसे मुलाकात में नई ऊर्जा मिली। पंकज शर्मा ने कहा कि उनका देहावसान भारतीय पत्रकारिता को बड़ी क्षति है। विभिन्न पत्रकार संगठनों ने भी उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

वैदिक जी के साथ प्रत्यूष संपादक विष्णु शर्मा हितैषी (फाइल फोटो)

बाबेल बने अध्यक्ष

उदयपुर। बापू बाजार जैन व्यवसाय संघ के द्वि-वार्षिक- चुनाव में वर्ष 2023-25 के लिए चयन समिति द्वारा सुरेन्द्र बाबेल को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। शीघ्र ही वे अपनी नवीन कार्यकारिणी की घोषणा करेंगे। यह जानकारी संघ के महामंत्री यशवंत कटारिया ने दी।

बांठिया अध्यक्ष, मिश्रा उपाध्यक्ष

उदयपुर। सीआईआई राजस्थान के चुनाव में वर्ष 2023-24 के लिए अभिनव बांठिया अध्यक्ष और अरूण मिश्रा उपाध्यक्ष चुने गए। युवा उद्यमी बांठिया मनु यंत्रालय प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हैं। वहीं मिश्रा जिंक बिजनेस वेदांता के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। वे इंटरनेशनल जिंक एसोसिएशन के पहले भारतीय अध्यक्ष भी हैं।

भवंर सेठ प्रदेशाध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। वरिष्ठ नागरिक संस्थान राजस्थान के श्याम डाड के सानिध्य में हुए चुनाव में भंवर सेठ को प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

तिवारी राज्यसभा में उपनेता

नई दिल्ली। राज्यसभा में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले वरिष्ठ सांसद प्रमोद तिवारी विपक्ष के उपनेता के रूप में नियुक्त किए गए हैं।

डॉ. लुहाड़िया को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के चेस्ट एवं टीबी विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एसके लुहाड़िया को टीबी एवं चेस्ट क्षेत्र में विशेष कार्य पर आगरा में आयोजित राष्ट्रीय टीबी सम्मेलन नैटकॉन में डॉ. आरसी जैन लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। डॉ. लुहाड़िया को गीतांजलि समूह के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, गीतांजलि हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिम तंबोली, डीन.डॉ. डीसी कुमावत आदि ने बधाई दी।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्रीमती तारा जी मेहता (धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरसिंह जी मेहता) का 16 फरवरी को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र मनीष, पुत्रियां सोनल बोलिया व सुरभि बोलिया तथा पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

उयपुर। श्रीमती तीजा देवी जी खमेसरा 19 फरवरी को संथारा पूर्वक गोलोक सिधार गई। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्रवधू रेणु (स्व. वीरेन्द्र जी), पुत्र राजेन्द्र, पुत्रियां सरला मट्ठा, लीला सुराणा व निर्मला चौधरी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों समेत विशाल संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती मधु सेठिया (सहायक अभियंता, विद्युत निगम) का 1 मार्च को आकस्मिक देहांत हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति श्री अरविंद सेठिया, पुत्र भावेश, पुत्री शेफाली सहित जेठ-जेठानियों, देवर-देवरानियों व भतीजा-भतीजियों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री तेजमल जी शाह (जैन) का 21 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र कमल, अरुण (राज. पत्रिका), कपिल, शशिकांत, राजेश व पुत्रवधू अरुणा (स्व. विनोद शाह), पुत्रियां विमला लुहाड़िया, निर्मला बज, आशा सेठी व आरती पाटनी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री भंवरलाल जी अजमेरा का 27 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता देवी, पुत्री श्रीमती नीरा जैन, दोहित्र-दोहित्रियों, भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री लक्ष्य अग्रवाल का 16 फरवरी को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त वयोवृद्ध दादाजी यज्ञनारायणजी, पापा-मम्मी मनीष जी-स्वाति अग्रवाल, भाई शिवम एवं आदित्य, ताऊ-चाचा, नाना-नानी एवं बहिनों सहित संपन्न परिवार छोड़ गए हैं। प्रवासी अग्रवाल समाज पंचायत ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री अरविंद कुमार जी व्यास निवासी सुभाषनगर का 5 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला व्यास, पुत्र राकेश, राजेश व राहुल सहित पौत्र-पौत्रियों व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अमित जी बोर्दिया सुपुत्र श्री अशोक जी बोर्दिया का 1 मार्च को लंदन में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त माता-पिता श्रीमती इन्द्रादेवी जी-अशोक जी बोर्दिया, धर्मपत्नी श्रीमती आभादेवी, पुत्र अबीर ओम बोर्दिया व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती जसोदा देवी जी (धर्मपत्नी स्व. श्री नंदलाल जी अजमेरा) का 20 फरवरी को गोलोकवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र रमेशचन्द्र, दिनेश चन्द्र व कृष्णकांत अजमेरा, पुत्रियां पुष्पा डाड, ललिता मंडोवरा, स्नेहलता सोमानी व मीना मंडोवरा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। स्व. श्री फतहलाल जी कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का 22 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र लोकेन्द्र, पुत्रवधू चंदा (स्व. सतीशजी) व प्रमीला (स्व. नरेन्द्र), पुत्री श्रीमती प्रेमलता जैन, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

डॉ चौधरी हॉस्पिटल, उदयपुर

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
PRE ACCREDITED

मल्टी व सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल

आपका स्वास्थ्य, हमारी जिम्मेदारी

- 20+ वर्षों का अनुभव प्राप्त डॉक्टर्स
- अत्याधुनिक डायग्नोस्टिक सुविधाओं और उपकरणों से लैस
- 24*7 आपातकालीन व आई सी यू सुविधाएं
- हेल्थ पैकेज उपलब्ध

चिकित्स्कीय सुविधाएं

- जनरल मेडिसिन
- क्रिटिकल केयर और आईसीयू
- सामान्य और लेप्रोस्कोपिक सर्जरी
- आर्थोपेडिक और ट्रॉमा केयर
- सायकोलॉजी
- दंत चिकित्सा
- त्वचा व रति रोग
- स्त्री रोग और प्रसूति
- शिशु रोग व टीकाकरण
- हेल्थ चैकअप

सुपर स्पेशलिटी

- शिशु शल्य चिकित्सा
- नेफ्रोलॉजी
- न्यूरोलॉजी
- न्यूरोसर्जरी
- यूरोलोजी
- गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और एंडोस्कोपी

राज्य कर्मचारियों के इलाज हेतु अधिकृत RGHS (cashless) की सुविधा उपलब्ध

टी. पी. ए. एवं कॉर्पोरेट कम्पनियों के साथ कैश-लैस एवं पुर्नभुगतान सुविधा उपलब्ध।

STEP BY STEP HIGH SCHOOL

Sec.11 Mo.7357012026.0294-2483932, Jogi ka talab road sec.14 Mo 9680520421, 0294-2941421
Web.: stepbystephighschool.org, E-mail: stepbystepschool11@gmail.com

SHARING IS CARING

INDEPENDENCE DAY

ART & CRAFT

BIRTHDAY CELEBRATION

ANNUAL FUNCTION

BLUE DAY

SKATING

KARATE

TABLE TENNIS

COOKING DEMO

MUSIC CLASS

DANDIYA CELEBRATION

KHO-KHO

KARGIL DAY

SPEED BALL

MARCH PAST

FOOT BALL

LIVE CHESS

YOGA

ATHLETICS

CRICKET

CLAY MODELLING

SEPAK TAKRAW

CARROM BOARD

BASKET BALL

JANMASHTAMI CELEBRATION

वही उत्कृष्ट गिरनार सिंगल सुपर फॉस्फेट अब नये पैकिंग में उपलब्ध

New Packing

सभी फसलों के लिये उपयोगी

गिरनार®

गिरनार सिंगल सुपर फॉस्फेट पाउडर

गिरनार स्वाद का वादा

उन्नत कृषि सम्पन्न किसान

गिरनार सिंगल सुपर फॉस्फेट दानेदार

गिरनार सिंगल सुपर फॉस्फेट, यही है सबसे अच्छा, क्योंकि

इसमें है गुणवत्ता पूर्ण 16 %फॉस्फोरस (14.5%WS) साथ ही 11 % सल्फर एवं 21 %कैल्शियम मुफ्त ।

फॉस्फोरस से लाभ

जड़ों का पूर्ण विकास
दाने पुष्ट व चमकदार
शाखाओं का अधिक फूटान।
जमीन की उर्वरकता बनी रहती हैं।
पौधों में रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि।

कैल्शियम से लाभ

कृषि भूमि में सुधार
गन्ने में शर्करा की मात्रा में वृद्धि
पौधों में सामान्य से अधिक वृद्धि
तिलहनी फसलों में तेल की मात्रा में वृद्धि
ठंडक व बीमारियों से लड़ने की क्षमता में वृद्धि

सल्फर से लाभ

पौधों में अधिक मजबूती।
पौधों की बढ़वार एवं भरपूर विकास।
अधिक तापमान के प्रति सहनशीलता।
भूमि की संरचना व क्षारीयता में सुधार।
अन्य पौषक तत्वों के अवशोषण में वृद्धि।

ISO 9001:2008

निर्माता Rama

QUALITY CERTIFIED

रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड

4807/11, उमरड़ा, झामरकोटड़ा रोड, तहसील - गिर्वा, उदयपुर (राजस्थान) / कॉरपोरेट ऑफिस : 51-52, फ्री प्रेस हाउस, नरिमन पॉइंट, मुम्बई-400021

Ph. : 0294-2342010, E-mail : rama.udaipur@ramagroup.co.in

visit us : www.ramaphosphates.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आकाश वागरेचा

मो :- 94141-69241

EVEREST GROUP OF COMPANIES
SINCE 1963

एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज

शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.

सावा सर्जिकल प्रा. लि.

एवरेस्ट नेचुरो हर्ब प्रा. लि.

एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट

एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.

169-ओ रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 12, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur